साई का सच



आचार्य अजय गौतम

साईं का सच

लेखक
आचार्य अजय गौतम

विषय सूची

प्रस्तावना

साईं का सच?

यह पुस्तक लिखने का विचार मन में क्यों आया? इससे पूर्व सर्वप्रथम मैं धर्मसम्राट द्वारका एवं शारदापीठाधीशर आदरणीय जगतगुरू स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज को नमन करता हुँ जिनके कारण यह साईं विरोधी अभियान वर्तमान में पूरे भारत में फैल चुका है, उनके कारण ही यह अभियान आज उन ऊँचाइयों तक पहुंचा है जहाँ तक पहुँचने में कदाचित हमे कुछ और वर्ष लगते परन्तु उनके कारण यह आन्दोलन आज पूरे भारत में एक नई धार्मिक क्रांति बन कर उभर चुका है, इसके पश्चात मैं अपने उन सभी मित्रो, बंधुओ का धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने विगत 5 वर्षो से भी अधिक समय तक बहुत सी विकट परिस्थितियों में भी पूरे साहस, लगन एवं निरंतरता के साथ एकजुट होकर समाज में फैले इस पाखंड को दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस अभियान में अपना पूर्ण सहयोग दिया, जो अनवरत कई वर्षो से इस कार्य में लगे हुए थे और अंततः अभियान को ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया जिसमे इस अभियान का असफल होना तो अब असंभव् सा है।

इस अभियान में धन्यवाद करना चाहता हूँ: (1) स्वर्गीय श्री नन्द किशोर कपूरिया, (2) राम नाथ लूथरा, (3) ओम प्रकाश त्रेहन, (4) रोहित शर्मा, (5) लवली भारद्वाज व अन्य युवा शक्ति।

पुस्तक लिखने का प्रयोजन वर्तमान में सनातन धर्म में फैलते साईं नाम के इस कैंसर रूपी जहर से लोगों को अवगत कराना है जिसके कारण समाज का केवल एक वर्ग ही प्रभावित नहीं है अपितु सभी सनातन धर्म के सभी वर्ग, जाति, समुदाय के लोग इससे प्रभावित है।

सबसे पहले ये जानना बहुत आवश्यक है की संत, गुरू आदि की परिभाषा क्या है और उसी के परिप्रेक्ष्य में 'फकीर' किस प्रकार से इन दोनों से अलग है, इस पुस्तक में हमने वो भी प्रमाण, तथ्य रखे है जिनके द्वारा हम ये प्रमाणित कर सके की वर्तमान में चल रही साईं की पूजा वास्तव में सनातन धर्म को तोड़ कर भारत को खंड खंड करने का एक सुनियोजित षड्यंत्र है क्यूंकि सनातन धर्म ही इस राष्ट्र की आत्मा है और सनातन धर्म के कारण ही इस राष्ट्र का अस्तित्व है।

आदि काल से भारत एक धर्म प्रधान राष्ट्र रहा है, सनातन धर्म राष्ट्र की आत्मा और मूलधारा बना जिसमे से अन्य सभी सम्प्रदायों या धर्मो का जन्म हुआ, और विश्व के अन्य सम्प्रदायों को भारत ने इसी भूमि पर आश्रय भी दिया, इसी भारत भूमि पर आस्था और विज्ञान साथ साथ चलते हुए मानव मात्र के कल्याण के सिद्धांतो का प्रतिपादन किया इसी भारत भूमि पर लाखो संत हुए, जिन्होंने अपने तप और ज्ञान से भारत भूमि को धन्य किया, संतो के बिना भारत के इतिहास, वर्तमान और भविष्य की कल्पना अधूरी है क्यूंकि भारत के अतीत पर साधु संतो की एक अमिट छाप रही।

ऋषियों ने अपने तप से ही बड़े बड़े अनुसन्धान किये, भारत के लोगों को धर्म और अध्यात्म के मार्ग पर आगे ले जाते हुए धर्म के साथ साथ राष्ट्र के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया, समय के साथ साथ संतो और साधुओ की परिभाषा और उनका महत्त्व दोनों ही बदल गए, आज वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में संतो के संतत्व, तप और उनके ज्ञान को दरकिनार करके भौतिक मूल्यों को अध्यात्मिक विचारो से श्रेष्ठ माना, शनैः शनैः धर्म के नाम पर लोगो में भ्रम की स्थिति बनी व्याप्त हो गई।

धीरे धीरे धर्म में पाखंड का प्रादुर्भाव हुआ और पाखंड का बोलबाला शुरू हुआ, साधू संतो के नाम पर कुछ लोगो ने दुकाने खोलनी शुरू कर दी और खुद को "गुरू" या बाबा कह कर संबोधित करना शुरू कर दिया, देश के जिस संत समाज ने समाज को अध्यात्म और नयी चेतना का मार्ग दिखाया था अब उन संतो का स्थान पाखंड फैलाने वाले तथाकथित गुरूओ ने ले लिया, कुछ लोगो ने ऐसे गुरूओं को ईश्वर बना कर उन्हें पूजना शुरू कर दिया और इसे आस्था का नाम देकर सनातन धर्म में मिलावट का एक कुचक्र प्रारंभ कर दिया।

आस्था का मूल आधार सनातन परंपरा में अविचल श्रद्धा है, ये श्रद्धा, प्रत्येक भारतवासी के जीवन में फलीभूत हो और माँ भारती की संतान के रूप में अपने जीवन का सर्वस्व अर्पित करने के लिए सदैव प्रस्तुत रहे। परन्तु आस्था के नाम पर धर्म में पाखंड को घुसाया गया और साईं नाम का अधर्म धर्म की चादर ओढ़ कर धर्म में मंदिरों में बैठ गया हम किसी की आस्था पर चोट नहीं करना चाहते पर आस्था और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर भारत भूमि के ग्रंथो, महापुरूषों का अपमान स्वीकार्य नहीं है।

सनातन परम्परा का अर्थ आदि अनादी काल से पुण्य-भूमि भारत में धर्माधारित विचार, संस्कार है, जो मानव मात्र के भौतिक, अधिभौतिक, दैविक, अध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि पक्षों के सर्वांगीण उत्थान का सामूहिक मार्ग प्रशस्त करता है और एक राष्ट्र - एक संतति के भाव को सबल-प्रबल बना कर आने वाली पीढ़ी को समर्थ, स्वाभिमानी और शक्तिशाली मातृभूमि के लिए उत्सर्ग का तप प्रदान करना है।

इस संस्कार-परंपरा का प्रकटीकरण विभिन्न मत-संप्रदाय आदि के माध्यम से देश काल परिस्थिति के अनुरूप महापुरूषों ने किया है। ऐसे भी मत-सम्प्रदायों महापुरूषों को हम सम्मान देते है। उपरोक्त विचारों को स्वीकार करने वालों के मध्य विवाद का स्थान नहीं है, किन्तु विवाद की स्थिति में लोक मत, संत मत और सर्वोच्च स्थान शास्त्र मत को दिया जायगा। शास्त्र में सर्वोच्च स्थान प्रस्थान-त्रयी को दिया जाएगा। उपरोक्त विषय जीवन-ध्येय है, इन की अव्हेलना स्वीकार नहीं है।

भारत भूमि सदियों से विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण झेलती आ रही है, पर हर आक्रमणकारी यहाँ पर आकर इसी देश की संस्कृति और सभ्यता में मिल गया और अपना अस्तित्व खो बैठा और यही भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता थी पर पिछले 1200 सालो में भारत पर पश्चिम की ओर से अरब के इस्लामिक आक्रमणकारियों के बर्बर व नृशंस अत्याचारों से भारत भूमि कराह उठी और ऐसे विकट समय में सभी राष्ट्र के वीर योद्धाओ ने अरबी आक्रमणकारियों को कठोर उत्तर दिया और उन्हें समय समय पर परास्त किया, इतने लम्बे काल में भी भारत को इस्लामिक राष्ट्र न बना पाने के बाद मुसलमानों ने तरह तरह के प्रपंच रचे, सूफी फकीरों ने भी भारत के इस्लामीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और "साम-दाम-दंड-भेद" हर प्रकार की नीति के द्वारा भारत में धर्मान्तरण करने का कुचक्र चला।

इसी काल खंड में एक ऐसा समय आया जिसमे एक साधारण मुस्लिम फकीर ने देश में इस्लामीकरण को बढ़ाने के लिए अपना षड्यंत्र रचा, लगभग 1838 में जन्मे इस मुस्लिम फकीर शिर्डी के साईं बाबा के विषय में लिखी इस पुस्तक में हमने वो भी तथ्य रखे है जिसके द्वारा हम ये प्रमाणित कर सकते है की इस मुस्लिम फकीर के नाम पर कैसे सनातन धर्म में मिलावट करने का षड्यंत्र चला और कुछ सीमा तक उसमे षड्यंत्रकारी सफल भी रहे, चूँकि इस पुस्तक में केवल धर्म में मिलावट ही एकमात्र प्रासंगिक तथ्य नहीं है, इस पुस्तक में साईं के नाम पर व्यापार, धर्म में मिलावट, मंदिरों में आस्था का परिवर्तन, और सनातन धर्म से इस्लाम की ओर ले जाने का षड्यंत्र जैसे तथ्य भी है।

इस पुस्तक के द्वारा शिर्डी के साईं बाबा के विषय में चल रही उन सभी मान्यताओं और विचारधाराओ का स्वयं महाराष्ट्र में शिर्डी के साईं संस्थान के द्वारा प्रकाशित व प्रमाणित पुस्तक "साईं सत्चरित्र" के द्वारा खंडन करने का प्रयास किया गया है जो साईं को एक गुरू या संत बताते है और उसके द्वारा किये गए कार्यो को बढ़ा चढ़ा कर दिखाने का प्रयास करते है या उसकी कहानियो में मिलावट करके सच छुपा कर लोगो के सामने रखते है और उनको दिशा-भ्रमित करते है।

इसी विषय में एक किवदंती बहुत प्रचलित है कि साईं बाबा ने दिपावली पर्व पर पानी से दिए जलाए जबकि साईं सत्चरित्र के अध्याय 5 के अनुसार साईं बाबा ने पहले टमरेल (मराठी शब्द जिसका अर्थ है संडास का डिब्बा) में से पानी पिया और टमरेल में फिर तेल डाल कर मुहं का पानी डिब्बे में उलट दिया और उस तेल पानी के मिश्रण को दियो में डाल कर दिए जलाए, चूँकि साईं संस्थान ने बड़ी ही चतुराई से इस प्रसंग को लोगो के सामने दूसरे रूप में रखा और ये कहा की साईं बाबा ने दीपावली में दिए जलाए ताकि लोगो में ये धारणा बने की साईं बाबा चमत्कारी भी थे और हिन्दुओ के त्यौहार भी मनाते थे, परन्तु पूरी बात न बता कर एक प्रकार से सत्य को छुपाया ही गया है ताकि लोगों को साईं बाबा के द्वारा किये गए ऐसे घृणित कार्य के विषय में पता न चल सके।

ऐसे ही बहुत से प्रसंगों को आधार बना कर साईं बाबा के नाम पर झूठी कहानियों और कथाओं का प्रचार हुआ और साईं को पहले एक फकीर, फिर संत और फिर संत से भगवान बनाने का एक धीमा धीमा षड्यंत्र फलीभूत हुआ और सनातनी समाज धीरे धीरे उसमे जकड़ता चला गया और आज स्थिति यह है कि हमने लगभग प्रत्येक मंदिर में साईं की मूर्तियाँ लगानी शुरू कर दी और उसके नाम पर मंत्रो में मिलावट, देवी देवताओं से उसकी तुलना आदि शुरू कर दी, मंदिरों के नाम तक बदल कर साईं के नाम पर रखने शुरू कर दिए जैसे शिव साईं मंदिर, साईं हनुमान मंदिर, साईं शिव शक्ति मंदिर, साईं राम मंदिर आदि।

ऐसा क्यों हुआ और किन कारणों से ये पाखंड उस सनातन समाज में फैला जिसने इस संसार को सभी प्रकार का ज्ञान, विज्ञान दिया, ब्ह्मांडीय रहस्यों से लेकर खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, रसायन शास्त्र, गणित आदि में जिस सनातन समाज ने अभूतपूर्व प्रगति की, जहाँ पर ऋषियों ने अपने तप से इस जगत के सभी प्रकार के रहस्यों को उजागर किया, समाज को अध्यात्म का रास्ता दिखाया उसी समाज में इस प्रकार की विसंगति कैसे उत्पन्न हुई? इसके कारणों को हमने खोजने का प्रयास किया और उसी का संकलन है यह पुस्तक।

आशा करता हुँ की यह पुस्तक आप सभी को अच्छी लगेगी और इस पुस्तक में दिए प्रमाणों व तर्कों को विभिन्न पुस्तकों और लेखको की जीवनी से संकलित किया गया है ताकि हम पर इस प्रकार का कोई आक्षेप नहीं लगे की हमने बिना कोई शोध किये मात्र पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर साईं बाबा के विरूद्ध अनर्गल दुष्प्रचार किया, चूँकि ये एक प्रकार से धर्म की शुद्धि का अभियान है या धर्म युद्ध है और महाभारत में श्री कृष्ण कहते है की धर्म युद्ध में कोई भी निष्पक्ष नहीं रह सकता, जो धर्म के साथ नहीं वो अप्रत्यक्ष रूप से अधर्म के

साथ ही खड़ा है पर वर्तमान में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर जो अधर्म फैलाया जा रहा है उसके कारण ही समाज में साईं नाम की विसंगति ने जन्म लिया इसी कारण धर्म में पाखंड फैला व धर्म के नाम पर व्यापार शुरू हुआ है जहाँ एक ओर पूरा देश विकास की और बढ़ना चाहता है वही दूसरी और हम अपनी संस्कृति और संस्कारो से पीछे हटते जा रहे है! देश की युवा पीढ़ी को विकास के नाम पर अपनी सनातन परम्पराओं को पीछे छोड़ना सही नहीं है! आज देश को न सिर्फ आर्थिक विकास की जरूरत है बल्कि उससे कही ज्यादा मानसिक और बोद्धिक विकास की आवश्यकता है! जिस प्रकार रावण साधू का वेश बना कर माता सीता को हर कर ले गया था उसी प्रकार से साईं पहले फकीर फिर एक संत का रूप ले कर आया और हिन्दुओ की बुद्धि को हर कर ले गया, अब समय है की इतिहास की भूलों को सुधारा जाए, इसी आशा के साथ ॐ।

इस पुस्तक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्त जानकारी बाजार में उपलब्ध पुस्तके, साईं पर की गई देशी-विदेशी बुद्धिजीवियों, विचारकों तथा लेखकों द्वारा किये गये शोध तथा लिखे गये लेखों पर आधारित है।

<u>आचार्य अजय गौतम</u>

<u>दिनाक:-</u> भाद्रपद, कृष्ण अष्टमी, विक्रमी सम्वत 2071

साईं का जन्म, मृत्यु और धर्म?

लगभग 20 सालों से शिर्डी के तथाकथित फकीर साईं बाबा की पूजा अर्चना शिर्डी में चल रही है, और इसके लिए बाकायदा एक संस्था शिर्डी साईं बाबा विश्वस्त संस्थान, शिर्डी महाराष्ट्र के नाम से चल रहा है जो कि साईं बाबा के पूरे स्थल की देख रेख करता है, चूँकि इसमें भी बड़ा विवाद है जिसे इस पुस्तक के माध्यम से हम आपके सामने रख रहे है, संस्थान के कहे अनुसार शिर्डी के साईं के बाबा के मुख्य दरगाह रूपी मंदिर और अन्य सभी धार्मिक स्थलों की देख रेख वर्तमान में महाराष्ट्र सरकार के आधीन साईं शिर्डी संस्थान कर रहा है, और इसके भी सदस्य महाराष्ट्र सरकार द्वारा नियुक्त है चूँकि संस्थान साईं बाबा को हिन्दू संत बताता है और उनकी पूजा विधि को शास्त्र सम्मत बता कर साईं की पूजा अर्चना को सभी सही बताने का पर्यास करता है, पर इस पुस्तक के माध्यम से हमारा प्रयास रहेगा की साईं बाबा का सच लोगों के समक्ष आये और इसी कारण इस पुस्तक का शीर्षक भी पूर्णत: उपयुक्त है व शिर्डी साईं संस्थान के अधिकतर तर्कों का इस पुस्तक के माध्यम से खंडन किया गया है।

इस पूरे विवाद के विषय में जानने के लिए हम आपको कुछ ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत करना चाहते है, साईं सत्चरित्र के अनुसार साईं बाबा के जन्म और उनके माता पिता के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है उसके उपरान्त भी संस्थान उन्हें सितम्बर 1838 में जन्मा मानता है और प्रत्येक वर्ष इसी महीने में उनका जन्मदविस भी मनाया जाता है, साईं बाबा लगभग 16 वर्ष की आयु में अर्थात 1854 में शिर्डी में आये थे, **साईं सत्चरित्र के अध्याय 5 के अन. ुसार वे एक विवाह उत्सव में ही शिर्डी में चाँद पाटिल के साथ आये थे तब महाल्स्पति ने सर्वप्रथम उन्हें आओ साईं कह कर संबोधित किया था जिसके कारण उन्हें साईं बाबा कहा जाने लगा था।**

साईं बाबा के एक भक्त ओ. पी. गोयल द्वारा लिखित पुस्तक ShirdiSai Baba - 1 Divine Incarnation के पृष्ठ 2 पर लिखा है की शिर्डी के बच्चे साईं बाबा को मानसिक रूप से विक्षप्ति व्यक्ति मानते थे और जब वे शिर्डी की गलियों से गुजरते थे तो अक्सर उन्हें बच्चे पत्थर से भी मारते थे क्यूंकि

वे अक्सर मुसलमानों के पहनावे में रहते थे और उन्हीं के जैसा जीवन यापन करते थे, पुस्तक के पृष्ठ 17 के अनुसार जब साईं बाबा शिर्डी में आये थे तो इतने आदर सत्कार के बाद भी महालस्पती ने उन्हें खंडोबा मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया क्यूंकि उनके अनुसार साईं बाबा देखने में मुसलमान फकीर लगते थे, इसी पुस्तक के पृष्ट 18 के अनुसार इसके पश्चात साईं बाबा पास की ही एक मस्जिद में रूके जो इससे पूर्व हनुमान जी का एक मंदिर था और बाद में उसे मस्जिद बना दिया गया था।

इसी विषय में बहुत से यूरोपियन व अन्य देशों के लेखकों ने साईं बाबा पर शोध किये और उनके जीवन के सत्य को सामने रखने का प्रयास किया, अधिकतर लेखको ने साईं बाबा के इस्लामिक जीवन पर प्रकाश डाला है जो अपने आप में सत्य को उजागर करता है इसी में सबसे लोकप्रिय लेखक हैं केविन शेफर्ड जिन्होंने साईं बाबा पर अपने शोध को SAI BABA MOVEMENT का नाम दिया, शिर्डी जो कि महाराष्ट्र का भाग है और अधिकतर जनसंख्या मराठी भाषी है जबकि ओ. पी. गोयल ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 22 में लिखा है की साईं बाबा के ही एक शिष्य माधवराव देशपांडे के अनुसार साईं बाबा अक्सर अरबी, उर्दू, फारसी और कभी कभी न समझ आने वाली भाषा में बाते करते थे, जिन्हें वो अक्सर दूर से ही सुनता था।

इसी में आगे बढ़ते हुए केविन शेफर्ड ने तो साईं बाबा का संबन्ध अहमदनगर से लगभग सौ मील दूर खुलदाबाद से बताते है, अहमदनगर (जो की एक हिन्दू बहुल क्षेत्र था) से कुछ दूरी पर स्थित खुलदाबाद क्षेत्र में बहुसंख्यक मुस्लिम थे और वहां पर सूफी संतों का बहुत अधिक प्रभाव था, यहाँ तक कि बहुत से मुस्लिम फकीरों की वहां पर मजारें भी हैं जिस कारण वहां की अधिसंख्य जनसँख्या पर सूफी इस्लाम का प्रभाव पड़ा, इसी बीच 16 साल के साईं बाबा ने खुलदाबाद से अहमदनगर के शिर्डी की ओर रूख किया।

1889 में ही शिर्डी में साईं बाबा के पास अब्दुल बाबा नाम के मुस्लिम फकीर ने शरण ली जो अपने आखिरी समय तक शिर्डी में ही रहे, अब्दुल बाबा प्रतिदिन साईं बाबा को कुरान पढ़कर सुनाते थे इसका प्रमाण हेमाडपंत द्वारा रचित पुस्तक साईं सत्चरित्र के अध्याय 38 में भी प्रसंग आता है कि साईं बाबा खाने से पहले फातिहा पढ़ते थे साथ ही शिर्डी परिसर के सभीतर इस शिलालेख से भी सिद्ध हो जाता है कि अब्दुल बाबा ही साईं बाबा को प्रतिदिन कुरान पढ कर सुनाते थे।



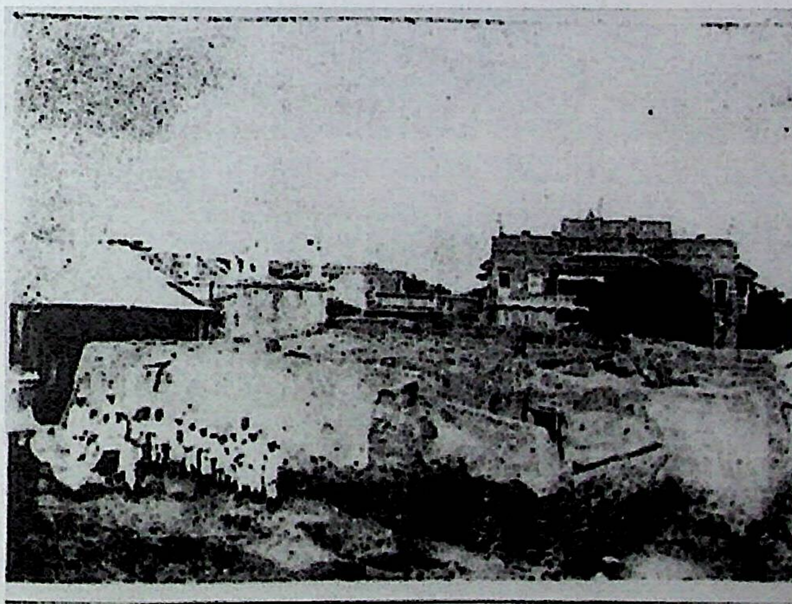
शिर्डी के अन्दर लगा शिलालेख

इस शिलालेख से सिद्ध होता है की साईं बाबा कुरान तो अवश्य पढ़ते थे परन्तु साईं सत्चरित्र में कही भी इस बात का जिक्र नहीं है की साईं बाबा ने किसी भी वैदिक ग्रन्थ का अध्ययन या श्रवण भी किया हो, इसी से ये भी सिद्ध होता है की साईं बाबा एक मुसलमान थे न कि हिन्दू और इस आधार पर उन्हें हिन्दू किसी भी तर्क से कहना उचित नहीं है।

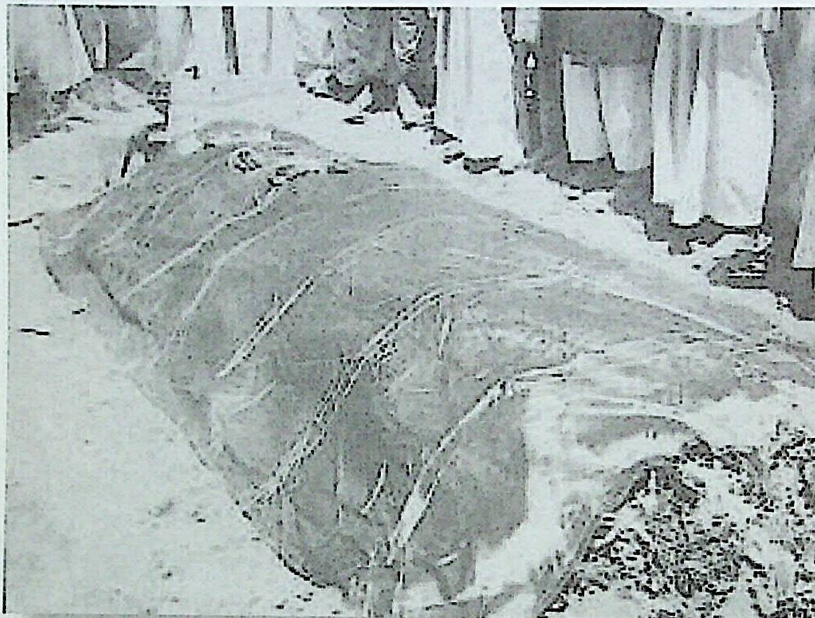
साईं सत्चरित्र में लगभग 14 बार साईं के द्वारा "अल्लाह मालिक" शब्द का प्रयोग किया गया परन्तु एक भी बार "सबका मालिक" एक का प्रयोग साईं बाबा के द्वारा नहीं किया गया है, इसी आधार पर ये भी प्रमाणित होता है कि साईं बाबा के प्रचार के लिए झूठ का सहारा लेकर ही साईं बाबा के नाम पर झूठे नारों का प्रयोग किया गया जो अनुचित भी है और अधर्म कार्य सभी।

शिर्डी संस्थान ने साईं बाबा की मुख्य मूर्ति परिसर में ॐ साईं राम नाम का एक पत्रक लगा रखा है चूँकि अभी तक इसका आधार वे प्रमाणित नहीं कर पाए हैं कि आखिर किस आधार पर उन्होंने मंत्रो में मिलावट का कार्य किया क्यूंकि साईं बाबा के द्वारा पूरी साईं सत्चरित्र या अन्य किसी भी पुस्तक में राम या ॐ के प्रयोग की बात नहीं कही गयी है, शिर्डी साईं संस्थान के द्वारा प्रयुक्त ये भी शब्द भी प्रकार से अनुचित है।

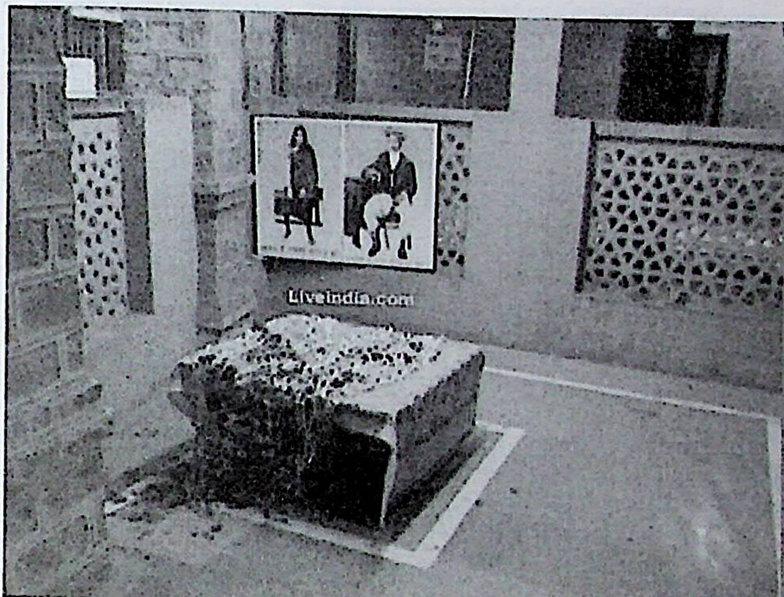
अब्दुल बाबा जो कि साईं बाबा के शिष्य थे वे साईं बाबा के मरने के बाद भी साईं बाबा की मजार की देखभाल करते रहे और अंत में उन्होंने 1954 में अंतिम श्वास लिए और उसके बाद उन्हें भी उसी परिसर में दफना दिया गया।

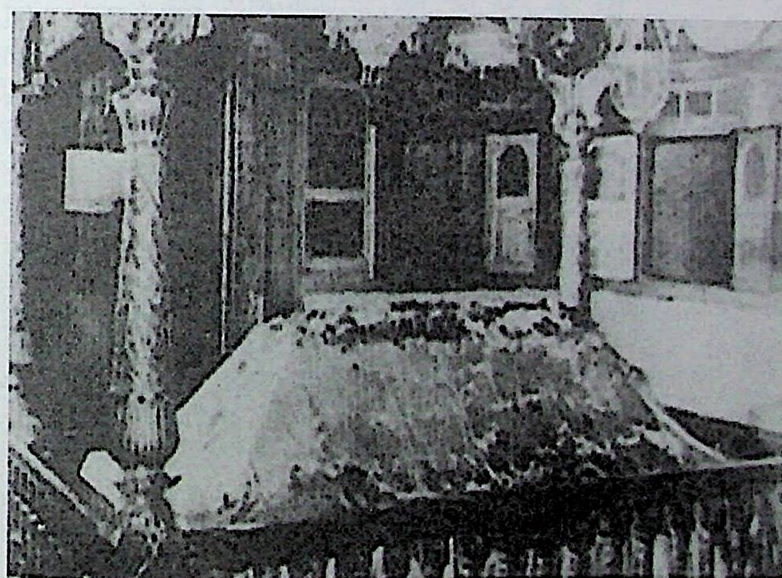


OLD SHIRDI VILLAGE— A GLIMPSE OF AREA WHERE SAMADHI MANDIR WAS BUILT

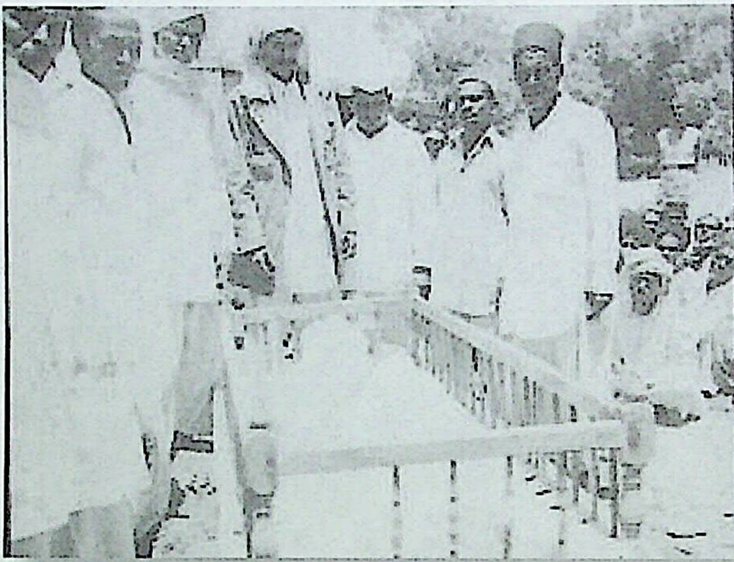


साईं बाबा कि समाधी के विषय में भी बहुत विवाद है, साईं सत्चरित्र के अध्याय 43-44 के अनुसार साईं बाबा द्वारा प्राण छोड़ने के बाद भी शिर्डीवासी इस पेशोपेश में थे कि साईं बाबा को दफनाया जाए या उनका हिन्दू रीति से दाह संस्कार किया जाए, क्यूंकि उनकी मृत्यु के बाद कुछ मुस्लिम मौलवियों ने विवाद खड़ा कर दिया था कि चूँकि साईं बाबा मुस्लिम थे इसलिए उन्हें इस्लामिक रीति के अनुसार दफनाया जाए, और इस विवाद में 3 दिन बीत गये, अंत में जिला कलेक्टर ने साईं बाबा को दफनाने का निर्णय लिया, और इस विषय में साईं संस्थान कहता है कि साईं बाबा को समाधी दी गयी थी न कि दफनाया गया था, अब इस बात के खंडन करने के लिए आप सभी के समक्ष दो चित्र है एक में साईं बाबा की पुरानी कब्र है और दूसरे में साईं बाबा के ही शिष्य रहे तात्या पाटिल की समाधी है जबकि दोनों समाधियो में काफी अंतर है, साईं बाबा की समाधी कब्र की तरह लिटा कर बनाई हुई है जबकि तांत्या पाटिल बिठा कर विधिवत सनातन परम्परा के अनुसार समाधी दी गयी है।

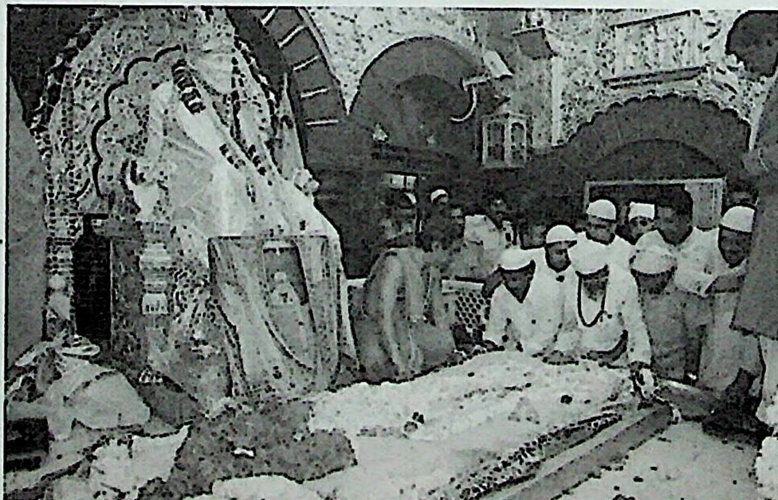

Liveindia.com



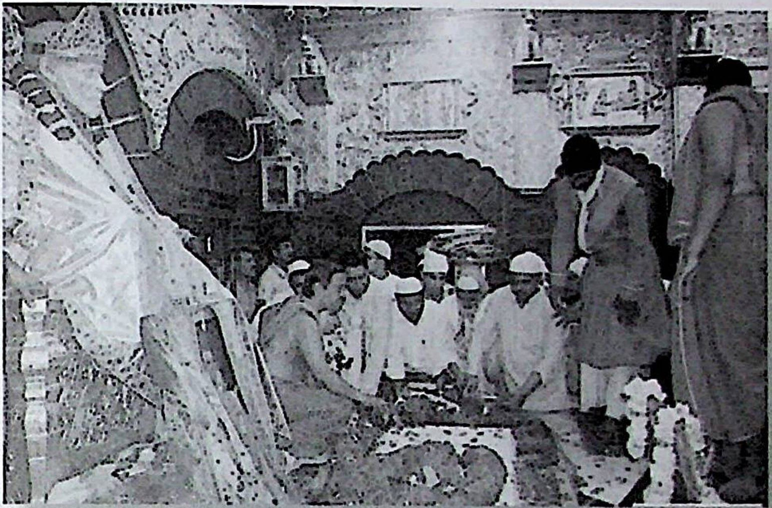
[illegible]



उपरोक्त चित्र से इस सिद्धांत को बल मिलता है की साईं बाबा को इस्लामिक रीति से दफनाया गया है इसलिए उनकी समाधी नहीं कब्र कही जाएगी, इसके लिए एक अन्य प्रमाण हम दिखाते है जिसमे कुछ मुस्लिम समुदाय के लोग साईं बाबा की कब्र पर सजदा करते है जबकि कोई भी मुसलमान किसी कब्र के आगे सजदा कर सकता है पर समाधी के आगे नहीं, समाधी और कब्र में अंतर उतना ही है जिसका इस्लाम और सनातन धर्म में है।



साईं बाबा की कब्र पर चादर चढाते मुस्लिम समुदाय के लोग



साईं बाबा के आगे सजदा करते मुस्लिम समुदाय के लोग

इस विवाद में एक और बहुत बड़ा पक्ष सामने आता है जो काफी प्रश्न खड़े करता है, सन 1918 तक साईं बाबा की कब्र की देख रेख करने वाले अब्दुल बाबा के विरूद्ध साईं बाबा के ही एक अन्य शिष्य काकासाहेव उर्फ हरीसीताराम दीक्षित ने अहमदनगर जिला अदालत में केस कर दिया, क्यूंकि काकासाहेब का मानना था की साईं बाबा की मजार पर से अब्दुल बाबा जैसे मुस्लिम फकीर का नियंत्रण हट कर उनके हाथ में दरगाह का नियंत्रण आ जाए, दुर्भाग्य से अब्दुल बाबा केस हार गए और उन्हें साईं बाबा की मजार की देख रेख का जिम्मा काकासाहेब को देना पड़ा, पर इसके बाद भी अब्दुल बावा सन 1954 तक शिर्डी में ही साईं बाबा की कब्र की देख रेख काकासाहेव के साथ करते रहे, इसके बाद भी इस बात से आश्वस्त थे कि साईं बाबा की मजार पर से मुसलमानों का नियंत्रण पूर्ण रूप से समाप्त हो चुका है।

काकासाहेब उर्फ हरीसीता राम दीक्षित कानून के जानकार थे और कांग्रेस पार्टी के एक सक्रिय कार्यकर्ता भी थे, वे 1909 में बावा से मिलने शिर्डी आये थे और उसके बाद 1910 में उन्होंने शिर्डी में ही एक बाड़ा बना कर वहां रहने का निर्णय लिया, इसी स्थान को दीक्षित बाड़ा कहा जाने लगा, साईं बाबा की मृत्यु के बाद भी काकासाहेब 1926 तक शिर्डी में रहे जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो गयी, तब तक वे साईं बाबा की मजार की देख रेख करते थे और उनके बाद अब्दुल बाबा ने इस कार्य को संभाला, तब तक साईं बाबा की मजार पर बहुत से मुसलमान फकीरों और सूफियो का आना जाना लगा रहता था, पर तब सभी शिर्डी संस्थान हिन्दुओ के नियंत्रण में रहा।



Late Shri Abdul baba

1952 में इस स्थान पर विवाद उत्पन्न हो गया क्यूंकि बाबा की कब्र के साथ निर्माण शुरू हुआ और वहां पर एक मूर्ति लगाने के लिए स्थान बनाने की व्यवस्था होने लगी, और अंत में एक संगमरमर की मूर्ति को वहां पर बिठा दिया गया, साथ ही वहां पर एक बड़ा सा बोर्ड लगा दिया गया कि साईं बाबा एक हिन्दू भगवान है इसलिए उनके साथ ॐ और राम जोड़कर ॐ साईं राम लिख दिया गया, जिस कारण मुसलमान फकीरों और सूफियो ने वहां पर जाना ही बंद कर दिया, इन सभी बातो की जानकारी अब्दुल बाबा के द्वारा लिखित उनकी डायरी में है जो उर्दू में लिखी गयी है और वर्तमान में वह डायरी शिर्डी संस्थान के संरक्षण में है, इसी डायरी के द्वारा ये प्रमाणित हुआ था कि साईं बाबा प्रतिदिन अब्दुल बाबा के द्वारा कुरान सुनते थे और उन पर इस्लाम का अत्यधिक प्रभाव था।



इन सभी तथ्यों पर विवाद तो ये भी उत्पन्न होता है कि आखिर एक मुस्लिम फकीर की कब्र के पास एक मूर्ति रख कर उसकी पूजा अर्चना करना क्या ठीक है? क्या ये तर्क सम्मत या शास्त्र सम्मत है? इस प्रकार का क्रियाकलाप सनातन धर्म में किसी भी प्रकार से मान्य नहीं है क्यूंकि ये न तो एक समाधी है और न मंदिर, साईं मंदिर में साईं की पूजा अर्चना या अन्य किसी भी प्रकार से की जाने वाली उसकी स्तुति वैदिक शास्त्रों के विरूद्ध है।

कई राज्य सरकारों ने साईं बाबा के मंदिरों को एक स्वायत्त संस्था का दर्जा दे रखा है जिस कारण कोई भी साईं बाबा का मंदिर किसी भी प्रकार से बना कर मनमाने तरीके से इस पर अपना धन कमा सकता है और आज कल यह धन कमाने का एक तरीका ही बन चुका है क्यूंकि इसमें मंदिर बनाने पर किसी प्रकार का कोई नियंत्रण नहीं है साथ ही कोई भी मंदिर बना कर धन कमा सकता है इस प्रकार यह एक धार्मिक स्थल न होकर एक व्यापारिक स्थल बन गए है।

उपरोक्त सभी तथ्य प्रमाणों पर आधारित है जिनकी स्वयं पाठक भी जांच कर सकते है।

शिर्डी मे आने से पहले साईं का वास्तविक परिचय

साईं बाबा के पाखंड से भरे जीवन को लोगो के सामने सही दिखाने के लिए पहले दास गुना, हेमाडपंत आदि ने साईं बाबा को कबीर से जोड़ने का प्रयास किया जिसका प्रमाण अध्याय एक के अंतिम भाग में और अध्य 3 में साईं बाबा के माता पिता शीर्षक में दिया है, परन्तु इसमें जब वे सफल नहीं हुए तो उन्होंने साईं बाबा की छवि एक हिन्दू संत की बनाने का प्रयास किया, उसमे भी असफल होने के बाद 90 के दशक में तो साईं बाबा को पहले फकीर और फिर हिन्दुओ में भगवान बना कर पूजने षड्यंत्र रचा जिसमे वे सफल भी हुए, इस प्रकार साईं बाबा का पूरा जीवन जी रहस्यों और पाखंड से भरा पड़ा है और इसी का खंडन करने के लिए हमने अपनी पुस्तक में भी तथ्यों और प्रमाण के आधार पर साईं बाबा के जीवन के एक एक पाखंड को पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया है

पिण्डारी साईं की असली कहानी और उसके द्वारा हिन्दुओ के खिलाफ जिहाद फैलाने के षड्यंत्र का भांडाफोड़

पिछले दिनों हमने शिर्डी साईं के बारे में बहुत सी जानकारी इकठ्ठा की और मुझे साईं असल में क्या है कहा से आया, जन्म मरण और फिर इतना लम्बे समय बाद उसका अचानक भगवान बन कर निकलना।



ये सब कोई संयोग नहीं सोचा समझा षड्यंत्र है।

ब्टिेन की खुफ़िया एजेंसी MI5 जी हाँ

मित्रो, एक बिटिश ऐजेंसी ने श्री राम मंदिर आन्दोलन के बाद अचानक साईं की भक्ति में तेजी देखी, वैसे ब्टिेन और शिर्डी के साईं का रिश्ता बहुत ही गहरा है क्युकी ये साईं वही है जो कुछ लूटेरों के साथ पकड़ा गया था, और वह अहमदनगर में पहली बार साईं की फोटो ली गयी थी।

MI5 ब्टिेन की खुफिया एजेंसी है, साईं का पूरा इतिहास खोज निकलने में इस ऐजेंसी का महत्वपूर्ण योगदान है, साईं का जन्म 1838 में हुआ था, पर कैसे हुआ और उसके बाद की पूरी कथा बहुत ही रोचक है।

साईं के पिता का असली नाम था बहरूद्धीन, जो कि अफगानस्तिान का एक पिंडारी था, वैसे इस पर एक फिल्म भी आई थी जिसमे पिंडारियो को देशभक्त बताया गया है, ठीक वैसे ही जैसे गाँधी ने मोपला और नोआखली में हिन्दुओ के हत्यारों को स्वतंत्रता सेनानी कहा था।

औरंगजेब की मौत के बाद मुग़ल साम्राज्य ख़त्म सा हो गया था केवल दिल्ली उनके आधीन थी, मराठों के वीर सपूतों ने एक तरह से हिन्दू साम्राज्य की नींव रख ही दी थी, ऐसे समय में मराठाओं को बदनाम करके उनके इलाको में लूटपाट करने का काम ये पिंडारी करते थे, इनका एक ही काम था लूटमार करके जो औरत मलिती उसका बलात्कार करना, आज एक का बलात्कार कल दूसरी का, इस तरह से ये मराठों को तंग किया करते थे, पर समय के साथ साथ देश में अंग्रेज आये और उन्होंने इन पिंडारियो को मार मार कर ख़तम करना शुरू किया।

उस समय अंग्रेज पिंडारियो की ज़बरदस्त धर पकड़ कर रहे थे इसलिए बहरूद्धीन भेस बदल कर लूटपाट करता था उसने अपने सन्देश वाहक के लिए चाँद मिया को रख लिया।

चाँद मिया आज कल के उन मुसलमान भिखारियों की तरह था जो चादर फैला कर भीख मांगते थे, जिन्हें अँगरेज़ blanket bagger कहते थे, चाँद मिया का काम था लूट के लिए सही वकूत देखना और सन्देश अपने बाप को देना, वह उस सन्देश को लिख कर उसे चादर के नीचे सिल कर हैदराबाद से अफगानस्तिान तक ले जाता था, पर एक दिन ये चाँद मियां अग्रेजो के हत्थे लग गया और उसे पकडवाने में झाँसी के लोगो ने अंग्रेजो की मदद की जो अपने इलाके में हो रही लूटपाट से तंग थे।

उसी समय देश में पहली आजादी की क्रांति हुई और पूरा देश क्रांति से गूंज उठा, अंग्रेजों के लिए विकट समय था और इसके लिए उन्हें खूंखार लोगों की आवश्यक थी, बुद्धीन तो था ही धन का लालची, सो उसने अंग्रेजो से हाथ मिला लिया और झाँसी चला गया, वह उसने लोगो से घुलमिल कर झाँसी के किले में प्रवेश किया और समय आने पर पीछे से दरवाजा खोल कर रानी लक्ष्मी बाई को हारने में अहम् भूमिका अदा की।

यही चाँद मिया आठ साल बाद जेल से छूटकर कुछ दिन बाद शिर्डी पंहुचा और वहीं के सुलेमानी लोगो से मिला जिनका असली काम था गैर मुसलमानों के बीच रह कर चुपचाप इस्लाम को बढ़ाना। चाँद मियां ने वहीं से **"अल तकिया"** का ज्ञान लिया और हिन्दुओं को फंसाने के लिए साईं नाम रख कर शिर्डी में आसन जमा कर बैठ गया, मस्जिद को जानबूझ कर एक हिन्दू नाम दिया और उसके वहाँ ठहराने का पूरा प्रबंध सुलेमानी मुसलमानों ने किया, एक षड्यंत्र के तहत साईं को भगवान का रूप दिखाया गया और पीछे से ही हिन्दू मुस्लिम एकता की बाते करके स्वाभिमानी मराठाओ को मुर्दा बनाने के लिए उन्हें उनके ही असली दुश्मनों से एकता निभाने का पाठ पढाया गया।

पर पीछे ही पीछे साईं का असली मकसद था लोगो में इस्लाम को बढ़ाना, इसका एक उदाहरण साईं सत्चरित्र में है की साईं के पास एक पुलिस वाला आता है जिसे साईं मार मार भगाने की बात कहता है।

अब असल में हुआ ये की एक पंडित जी ने अपने पुत्र को शिक्षा दलिवाने के लिए साईं को सौंप दिया पर साईं ने उसका खतना कर दिया जब पंडित जी को पता चला तो उन्होंने कोतवाली में रिपोर्ट कर दी, साईं को पकड़ने के लिए एक पुलिस वाला भी आया जिसे साईं ने मार कर भगाने की बात कही थी।

ये तभी की फोटो है जब पुलिस वाला साईं को पकड़ने गया था और साईं बुरका पहन कर भागा था।

साईं जैसे पाखंडी की आज इतनी ज्यादा मार्केटिंग हो गयी है कि हमारे हिन्दू भाई बहिन आज अपने मूल धर्म से अलग होकर साईं कि पूजा करने लगे है। आज लगभग हर मंदिर में इस ने कब्जा कर लिया है। हनुमान जी ने हमेशा सीता राम कहा और आज के मूर्ख हिन्दू हुनमान जी का अपमान करते हुए सीता राम कि जगह साईं राम कहने लगे हैं। बड़ी शर्म कि बात है। आज जिसकी मार्केटिंग ज्यादा उसी की पूजा हो रही है। इसी लिए कृष्ण भगवान ने कहा था कि कलयुग में इंसान पथ और धर्म दोनों से भ्रष्ट हो जाएगा। 100 मे से 99 को नहीं पता साईं कौन था इसने कौन सी किताब लिखी क्या उपदेश दिये पर फिर भी भगवान बनाकर बैठे है।

साईं के माँ बाप का सही सही पता नहीं पर ये पता है कि ये किस किस के अवतार है। अंग्रेज़ो के जमाने मे साईं भगवान पैदा होकर मर गए पर किसी भी एक महामारी भुखमरी मे मदद नहीं की। इनके रहते भारत गुलाम बना रहा पर इन महाशय को कोई खबर नहीं रही। शिर्डी से कभी बाहर नहीं निकले पर पूरे देश मे अचानक इनकी मौत के 90-100 साल बाद इनके मंदिर कुकरमुत्ते की तरह बनने लगे। चालीसा हनुमान जी की हुआ करती थी आज साईं की हो

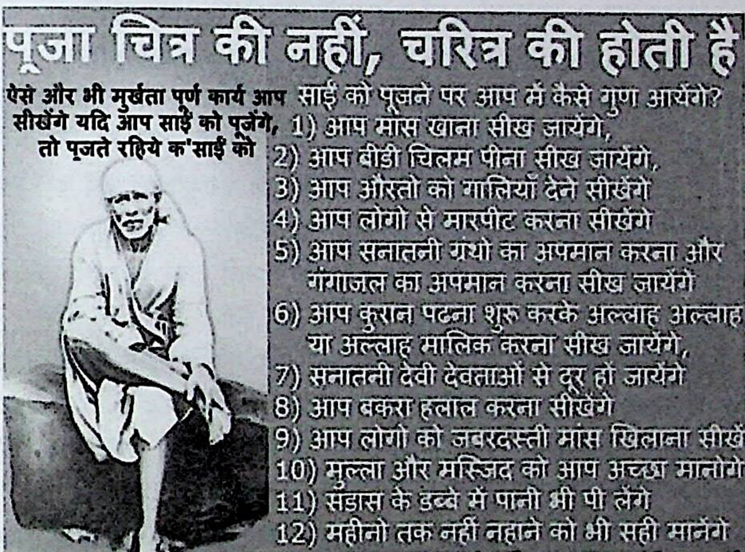
गयी। राम सीता के हुआ करते थे। आज साईं ही राम हो गए। श्याम राधा के थे आज वो भी साईं बना दिये गए। ब्रह्स्पति दिन विष्णु भगवान का होता था आज साईं का मनाया जाने लगा। भगवान की मूर्ति मंदिरो में छोटी हो गयी और साईं विशाल मूर्ति मे हो गए।

साईं सत्चरित्र का सत्य खंडन

साईं बाबा के जीवन चरित्र को समझने के लिए शिर्डी साईं बाबा संस्थान, शिर्डी, अहमदनगर महाराष्ट्र ने गोविदराव रघुनाथ दाभोलकर (हेमाडपंत) द्वारा लिखित एकमात्र पुस्तक साईं सत्चरित्र को ही प्रमाणित किया हुआ है जिसकी हर वर्ष लगभग 1 लाख से अधिक प्रतियाँ छपती हैं, साईं सत्चरित्र साईं बाबा के द्वारा ही हेमाडपंत को लिखने के लिए आदेश देने के पश्चात हेमाडपंत के द्वारा लिखी गयी थी और यह पुस्तक ही शिर्डी साईं संस्थान के द्वारा एकमात्र प्रमाणित पुस्तक है, वर्तमान में साईं सत्चरित्र के लगभग 25 से अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके है जिनमें हेमाडपंत ने सबसे पहले मूल मराठी में पुस्तक लिखी थी उसके बाद संस्थान ने उसी पुस्तक का अनुवाद करके पुस्तक को संस्था द्वारा प्रमाणित कह कर प्रकाशित करवाना शुरू कर दिया।

साईं सत्चरित्र जो कि साईं बाबा का जीवन चरित्र है उस पर अभी तक 25 संस्करण प्रकाशित होना ही अपने आप में शंका उत्पन्न करता है क्यूंकि किसी व्यक्ति की जीवनी में कभी परिवर्तन नहीं होता परन्तु हर नए संस्करण में पुराने संस्करण की अपेक्षा कुछ नहीं बाते या तो जोड़ दी जाती है या पुरानी कुछ आपत्तिजनक बातो को हटा लिया जाता है, संस्थान ऐसा क्यों और किस कारण से करता है इसी के लिए हमने ये पुस्तक प्रकाशित करने का विचार किया और साईं संस्थान के द्वारा सनातन धर्म में मिलावट करके धर्म में अधर्म फैलाने के षड्यंत्र को इस पुस्तक के द्वारा हम पाठको के समक्ष रख रहे हैं, पुस्तक में दिए सभी तथ्य शिर्डी साईं संस्थान के द्वारा प्रकाशित व प्रमाणित पुस्तक साईं सत्चरित्र से ही लिया गया है और इसमें हमारी ओर से किसी भी प्रकार से कोई मिलावट नहीं की गयी है, ये सभी तथ्य पुस्तक के आधार पर ही है जिन्हें कोई भी साईं सत्चरित्र के माध्यम से ही चुनौती दे सकता है, साईं सत्चरित्र के प्रत्येक अध्याय के प्रत्येक पृष्ठ पर कई विसंगतियां पाई गई हैं जिस पर आज तक किसी साईं भक्त का ध्यान नहीं गया और इन्ही बातों से ये ज्ञात होता है की साईं के भक्तों को स्वयं अपने मूल सनातन धर्म के विषय में ही इतना ज्ञान नहीं है कि वे साईं की इन बातो को समझ सके और उसके द्वारा किये गए अधार्मिक कार्यों की निंदा कर सके। शेष साईं के चरित्र व पाखण्ड की घटना इस पुस्तक में क्रमश है।

पूजा चित्र की या चरित्र की?



जिसे हमे पूजते हैं उसी के गुण हमारे में आते हैं। सनातन संस्कृति में चरित्र की बड़ी महत्ता है, हमने तो उच्च आदर्शो वाले श्रीराम को पूजा, हमने महान योगीश्वर भगवान कृष्ण को पूजा, हमने भगवान शिव को परमात्मा माना, और प्रत्येक महान आत्मा को हमने परमात्मा का स्वरूप मान कर पूजा, हमारे यहाँ संतो की भी पूजा होती आई है, पर वर्तमान में कुछ गुरू घंटाल सनातन धर्म में घुस गये और उन्होने संत गुरू की मर्यादा का अपमान किया।

ऐसा ही एक छदम गुरू या छदम संत था शिर्डी का साईं आज हर मंदिर में साईं को बिठाकर पूजा जा रहा है, 10 साल पहले जिस साईं को कोई नहीं जानता था इन 10 सालो में कैसे वो अचानक ही भगवान बन गया, और जैसे जैसे वो भगवान बनता गया, लोगो के घरो में और मंदिरों में ये जगह घेरता गया वैसे वैसे ही उन स्थानों से सत्य, धर्म और न्याय का आलोप हो गया।

आज से 10 साल पहले हम फिर भी सुखी थे क्यूंकि हर उच्च आदर्शों वाले श्रीराम, कृष्ण जी आदि देवी देवताओं को पूजते थे, और आज हमारे उन्ही

के ऊपर लांछन लगाना शुरू कर दिया, उन्हें छोड़ साईं जैसे सनातन विरोधी को पूजना शुरू कर दिया तो उसी के अवगुण हमारे अन्दर आ गये, साईं के चरित्र के कारण ही आज समाज भ्रष्ट, मांस खोर, गाली बाज, नारी का अपमान करने वाले, धर्म को दुत्कारने वाले, धर्म का मजाक उड़ाने वाले, गंगाजल और गीता आदि को तुच्छ मानने वाले बन गये है, साईं भी औरतों को गालियाँ देता था और आज समाज भी उसी के समान हो गय। है, जिन महान योगेश्वर कृष्ण ने हमे गीता का पाठ दिया उसे भूल कर हमने उन्ही श्रीकृष्ण को पता नहीं कैसे कैसे अपमान जनक शब्दों में पिरो दिया, श्रीराम का अपमान करने से भी नही चूकते ऐसे में समाज का पतन होने का कारण साफ़ है कि हमने धर्म को त्यागकर अधर्म को पूजना शुरू कर दिया।

आशा करता हूँ कि साईं को अन्धों की भांति पूजने वाले इस पर उत्तर अवश्य देंगे, यदि साईं को भगवान सिद्ध नहीं कर सकते तो कोई अधिकार नहीं कि उसको परमपिता परमात्मा के साथ तुलना की जाये, ॐ के साथ साईं का नाम किस प्रकार सही कहलाया जा सकता है।

साईं का नाम ॐ जो हमारे वेदों में लिखा हुआ भी है की ॐ ही एकमात्र ईश्वर है उसका तुल्य कोई नहीं है फिर पर भी साईं को ॐ के साथ जोड़ा जा रहा है, क्यों तुम लोग अपने ही धर्म और ईश्वर को इतनी तुच्छ हरकतों से गर्त में धकेल रहे हो?

प्रस्तुत पुस्तक साईं के प्रति आलोचना का नहीं बल्कि उनके प्रति स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने का है। पुस्तक में दिये गये प्रमाणों की पुष्टि व सत्यापन "साँई सत्चरित्र" से किया गया है, जो लगभग प्रत्येक साईं मन्दिरों में उपलब्ध है। चूँकि भारतवर्ष में हिन्दू जन-मानस लोग अवतार वाद में ईश्वर को साकार रूप में स्वीकार करते हैं। अतएव यहाँ पौराणिक तर्कों के द्वारा भी सत्य का विश्लेषण किया गया है।

आज आर्यावर्त में तथा कथित भगवानों का एक दौर चल पड़ा है। आज यह संसार अंधविश्वास और तुच्छख्याति-सफलता के पीछे भागने वालों से भरा हुआ है।

"यह विश्व गुरू आर्यावर्त का पतन ही है कि आज परमेश्वर कि उपासना की अपेक्षा लोग बाबाओं, पीरों और कबें पर सिर पटकना ज्यादा पसन्द करते हैं।"

आज कल सर्वत्र साँई बाबा की धूम है, कहीं साँई चौकी, साँई संध्या और साँई पालकी में मुस्लिम कव्वाल साँई भक्तों के साथ साँई जागरण करने में

लगे हैं। मन्दिरों में साँई की मूर्ति सनातन काल के देवी देवताओं के साथ सजी है। मुस्लिम तान्त्रिकों ने भी अपने काले इल्म का आधार साँई बाबा को बना रखा है व उनकी सक्रयिता सर्वत्र देखी जा सकती है। जिनकी फीस भी अब 6 अंकों तक पहुची है। इन सबके बीच साँई बाबा को कोई विष्णु का,कोई शिव का तथा कोई दत्तात्रेय का अवतार बतलाता है।

परन्तु साँई बाबा कौन थे? उनका आचरण व्यवहार कैसा था? इन सब के लिए हमें निर्भर होना पड़ता है "साँई सत्चरित्र" पर!

जी हाँ, दोस्तों! कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो रामायण व महाभारत का नाम न जानता हो? ये दोनों महाग्रन्थ क्रमश:श्री राम और श्री कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र को उत्कर्षित करते, उसी प्रकार साईं के जीवन चरित्र की एक मात्र प्रामाणिक उपलब्ध पुस्तक है- **"साँईं सत्चरित्र"**।।

इस पुस्तक के अध्ययन से साईं के जिस पवित्र चरित्र का अनु दर्शन होता है।

क्या आप उसे जानते हैं?

चाहे चिलम पीने की बात हो, चाहे स्त्रियों को अपशब्द कहने की?

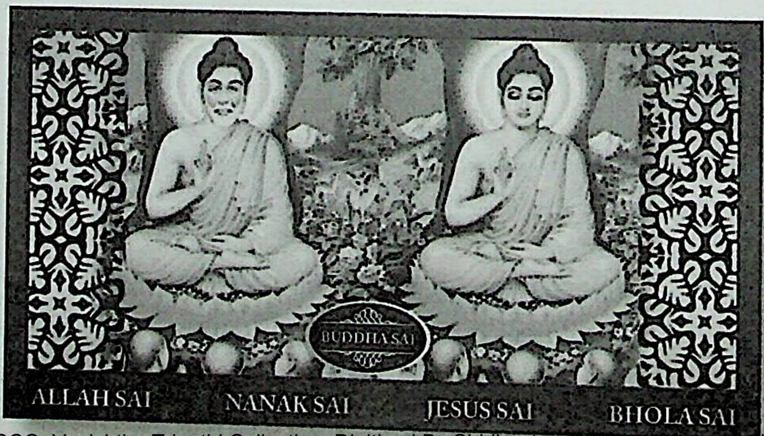
चाहे माँसाहार की बात हो, या चाहे धर्मद्रोही, देश द्रोही व इस्लामी कट्टर पनकी....इन सब की दौड़ में शायद ही कोई साँई से आगे निकल पाये।

इसके लिए शिर्डी साँई के विषय में व्याप्त भ्रान्तियों की क्रम बध्द समीक्षा करनी होगी। ...

साईं के अवतारवाद का ढोंग

साईं बाबा का जीवन काल (1835-1918) तक था, उनके जीवन काल के मध्य हुई घटनाये जो मन में शंकाएं पैदा करती हैं कि क्यावो सच में भगवान थे, क्या वो सच में लोगो का दुःख दूर कर सकते है?

भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि भूत प्रेत, मूर्दा (खुला या दफ़नाया हुआ अर्थात् कब्र अथवा समाधि) को सकामभाव से पूजने वाले स्वयं मरने के बाद भूत-प्रेत ही बनते हैं. यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्यान्ति पितृव्रताः भूतानि यान्ति भूतेज्यायान्ति मध्याजनिोऽपमिाम मरे हुये साईंबाबा और उनके कब्र की पूजा क्यों की जाती है? मतलब भागवतगीता के कथन असत्य हैं इसीलिये उसके कथन को नकारा जाता है? हिन्दु ग्रंथो के अनुसार भगवान का अवतार किसी विशेष कार्य अथवा मनुष्यों के संकट निवारण हेतु होता है। साईं के जन्म का क्या उद्देश्य था? साईं अवतार में उन्होंने लोगों को किस संकट से मुक्ति दिलाई? अब यदि यह कहा जाये की साईं बाबा ने धर्म, सम्प्रदाय, जाति-पाति का सदा विरोध किया तो ऐसे बहुत संत सन्यासी हुये हैं, जिन्होंने ऐसी समाजकि बुराईयों का विरोध किया। सिर्फ़ साईं बाबा को इतनी मान्यता क्यों? किसी भी हिन्दु ग्रन्थ में संत सन्यासियों के लिये आदर भावतो बताया गयाहै परन्तु भगवान कभी नही माना गया तो साईंबाबा को भगवान की संज्ञा क्यों दी जाती है? हिन्दु ग्रन्थों में भगवान विष्णु के दशावतार (मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नृसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्की) बताये गये हैं जिनमें से दसवां आखिरी कल्कि अवतार कलयुग के अधर्मियों के नाश हेतु होगा।



किसी भी हिन्दु ग्रन्थ में साईं अवतार का कोई जिक्र नही है. तो कैसे साईं को अवतारवाद की संज्ञा दी जाती है? अब या तो हिन्दु ग्रन्थ असत्य हैं या साईंबाबा...

बाबा एक फारसी शब्द है जीहा फारसी पर कुछ मूर्खो ने इसे संस्कृत का शब्द बताने का षड्यंत्र किया है, आप सभी ने मलेशिया का नाम तो सुना ही होगा, मलेशिया एक मुस्लिम बहुल देश है 60% जनसँख्या मुस्लिम है और विकिसत होते हुए सभी वो सब वह होता है जो एक मुस्लिम देश में काफिर के साथ होता है, मेरे मुर्दा हिन्दू मित्र ध्यान दे की आप सभी अपने मुस्लिम मित्रो की नजर में काफ़िर है, आपको नुकसान पंहुचा और पीठ पीछे वार करना और खुद को आपका सबसे बड़ा हिमायती दिखाकर आपका दिल जीतकर आपकी पीठ में छुरा घोपना इनका सबसे बड़ा काम है।

अब मुद्दे पर आते है बाबा - बाबा मलेशिया में सबसे बड़ी सम्मान की उपाधि है, जो व्यक्ति पूरे जीवन इस्लाम के लिए काम करके इस्लाम का झंडा बुलंद करता है या किसी गाँव या क्षेत्र का इस्लामीकरण करता है उसे मलेशिया में बाबा की उपाधि देकर एक बड़ी सी टोपी सर पर रखकर सम्मानित किया जाता है और हज पर जाने की सुविधा सभी प्रदान की जाती है।

अब साईं बाबा - बहुत से मित्र कहते है की साईं हिन्दू है तो मित्रो मुसलमान उसका बचाव क्यों कर रहे है, और सबसे बड़ी बात विकिपीडिआ और खुद साईं सत्चरित्र ने भी साबित कर दिया है की साईं मुसलमान है।

अब साईं के कट्टर हिन्दू भक्त सुने - बहुत से हिन्दू कहते है की साईं ने जीवन भर हिन्दू मुसलमानों को एक करने का प्रयास किया, मेरे कट्टर हिन्दू मित्र ध्यान दे, जो हिन्दू मुस्लिम एकता की बात करता है क्या वो कट्टर है? अगर नहीं तो पूजना बंद करे ऐसे पाखंडी को हिन्दू मुस्लिम भाई भाई करके हिन्दू को मुर्दा बनाने की घुट्टी पिला रहा है।

अब मुर्दा हिन्दुओ के लिए - आप लोगो से तो वैसे सभी कोई उम्मीद नहीं है, क्युकी जिन लोगो ने मोपला में ५००० हिन्दुओ को २ घंटे में काट डाला और बटवारे में जिन मुसल्मानों ने भारत माता

की छाती पर पैर रखकर ३५ लाख हिन्दुओ का नरसंहार किया, ऐसे लोगो के मुखिया को आप भगवान मान सकते हैं और वैसे सभी आप लोग तो अपनी माँ बहन को इन मुसल्मानों के हवाले कर सकते है पर हम इतने गिरे हुए नहीं की जिस मुह्हमद बिन कासिम ने 17,000 हिन्दू औरतो को अरब के बाजारों में बेचा उन के सरताज को हम भगवान मान ले, आप लोगो को तो साईं के सिवाय कुछ दीखता सभी नहीं।

उसी पर एक कहानी सुनिए - एक बार भगवान बुद्ध के पास एक आदमी आता है और कहता है गुरूजी मुझे ज्ञान दे, भगवान उसे एक बर्तन में गोबर भर कर कहते है जाओ और इस बर्तन में खीर ले आओ, वो आदमी कहता है की भगवान इस गोबर में पात्र में खीर कैसे लाऊ तो भगवान कहते है की इसी तरह तुम्हारा दिमाग सभी सांसारिक गोबर से भर गया है पहले वो गोबर निकालकर मन साफ़ करो फिर ज्ञान लो।

इसलिए ऐ साईं भक्तो, पहले साईं जैसे गोबर को दिमाग से निकालो और श्रीराम को मन में बसाओ तो तुम भवसागर पार हो जाओगे वरना जैसे भगवान कृष्ण कहते है की भूतो को पूजने वाले भुत बनते है और मुर्दे को पूजने वाले मुर्दे बनकर इस लोक में भटकते रहते है, कही ऐसा न हो की रामनाम की जगह इस साईं मुसल्मान का नाम लेते लेते तुम भवसागर के कीचड़ में समांजाओ और एक बात, साईं को पूजो या न पूजो पर श्रीराम की भार्या सिर्फ माता सीता है, उनके साथ ऐसे मुसल्मान का नाम जोड़कर भगवान और माता को अलग करने का जो पाप कर रहे हो उस से तुम्हे कुछ नहीं मिलने वाला, सिवाय घोर पाप के और अब भी किसी को शंका हो तो मुझे साईं के भगवान होने का प्रमाण दे नहीं तो चुल्लू भर डूब मरे और उसी पानी को पी पीकर मुझे को सुनाना शुरू कर दे।

अब ऐसे लोगो से पूछो कि साईं क्या है तो कोई कहता है की सिर्फ एक अच्छे संत है, चलो कोई बात नहींकुछ दिन पहले एक कट्टर हिन्दू, जी हाँ मित्रो कट्टर हिन्दू मित्र कहना लगा की साईं दत्तात्रेय का अवतार है, अब सुनिए दत्तात्रेय खुद तीनो देवो के अंश अवतार है जो माता अनुसूया के पुत्र थे, क्या एक अवतार फिर से अवतार लेगा, चलो कोई बात नहीं?

अब एक अन्य मित्र कहने लगे की साईं को विष्णु का अवतार है, तो मैंने कहा की विष्णु भगवान के दस अवतारों में तो साईं का जिक्र नहीं है ये क्या अर्जेंट आर्डर पर आये थे, चलो कोई बात नहीं एक अन्य मित्र ने एक कहानी का लिंक दिया जिस मे माता पार्वती और शंकरजी कैलाश पर जाते है और माता

पारवती भगवान को नर रूप में देखने की बात कहती है और भगवान शिव साईं के रूप में जन्म लेते है, तो मित्रो रूद्र के सभी अवतार आप जानते है, क्या उनमे या फिर शिवमहापुराण में कही साईं का जिक्र है, चलो कोई बात नहीं।

अब एक और बात, बहुत से मित्र कहते है की साईं हिन्दू मुस्लिम एकता की बात करते थे और अल्लाह मालिक और सबका मालिक एक कहते थे, तो मित्रो कभी किसी यवनी, गौ हत्यारे, मुल्ले, पाकिस्तान परस्त या अरबपरस्त ने कहा है की राम भगवान थे, कृष्ण भगवान थे और अल्लाह के जैसे है, हम तो कह देते है की सब एक है वो क्यों नहीं कहते है, वो चींख चींखकर मस्जिदों से गले फाड़फाड़ कर कहते है की ईश्वर सिर्फ अल्लाह है बाकी सब झूठे है, तो क्या हम हिन्दू ही बेवकूफ है जो उनके बलात्कार की पैदाइश को सभी भगवान मान ले, चलो कोई बात नहीं हम मान लेंगे, जब महाराज पृथ्वीराज को धोखे से मरवाने वाले अजमेर ख्वाजा के यहाँ चादर चढ़ा सकते है तो इस मुस्लिम को सभी भगवान मान सकते है जब अकबर जैसे कुत्ते को जिसने औरंगजेब की नीति प्यार से लागूकर के लवजिहाद को बढ़ावादिया, तो ऐसे पाखंडी को सभी भगवान मान सकते है, जब शिवाजी महाराज द्वारा मारे गये अत्याचारी अफज़लखान की दरगाह पर दिया जला सकते है तो इस ढोंगी को सभी भगवान कह सकते है, हम तो चलते फिरते को सभी भगवान बना लेते है, पूजने को पत्थर सभी पूजे जाते है, जी हां, मेरे कुछ मित्र यही दलील देते है पर मेरे प्यारे मित्रो पत्थर न किसी की हत्या करता है न बलात्कार करता है।

प्रश्न:

1. भारत भूमि पर जब-जब धर्म की हानि हुई है और अधर्म में वृद्धि हुई है, तब-तब परमेश्वर साकार रूप में अवतार ग्रहण करते हैं और तब तक धरती नहीं छोड़ते, जब तक सम्पूर्ण पृथ्वी हीन नहीं हो जाती। लेकिन साईं के जीवन काल में पूरा भारत गुलामी की बेड़ियों मे जकड़ा हुआ था, मात्र अंग्रेजों के अत्या चारों से मुक्ति न दलि सका तो साईं अवतार कैसे?
2. राष्ट्र धर्म कहता है कि राष्ट्रोत्थान व आपातकाल में प्रत्येक व्यक्ति का ये कर्तव्य होना चाहिए कि वे राष्ट्र को पूर्णत या आतंक मुक्त करने के लिए सदैव प्रयास रत रहे हैं, परन्तु गुलामी के समय साईं किसी पर दासता विरोधक आन्दोलन तो दूर, न जाने कहाँ छिपकर बैठा था, जबकि उसके अनुयायियों की संख्या की भी कमी नहीं थी, तो क्या ये देश से देशद्रोह के लक्षण नहीं है?

3. भारत का सबसे बड़ा अकाल साईं बाबा के जीवन के दौरान पड़ा

(A) 1866 में ओड़िसा के अकाल में लगभग ढाई लाख लोग भूंख से मर गए

(B) 1873-74 में बिहार के अकाल में लगभग एक लाख लोग प्रभावित हुए ....भूख के कारण लोगो में मानवीयता ही समाप्त हो गई थी।

(C) 1875-1902 में भारत का सबसे बड़ा अकाल पड़ा जिसमें लगभग 6 लाख लोग मारे गए।

साईं बाबा ने इन लाखो लोगो को अकाल से क्यूँ पीड़ित होने दिया यदि वो भगवान या चमत्कारी थे? क्यूँ इन लाखो लोगों को भूंख से तड़प -तड़प कर मरने दिया?

4. साईं बाबा के जीवन काल के दौरान बड़े भूकंप आये जिनमें हजारो लोग मरे गए

(a) १८९७ जून शिलांग में

(b) १९०५ अप्रैल काँगड़ा में

(c) १९१८ जुलाई असाम में

साईं बाबा भगवान होते हुए भी इन भूकम्पों को क्यूँ नहीं रोक पाए?...क्यूँ हजारो को असमय मरने दिया?

साई कसाई और नशा



अत्यंत लज्जा का विषय है कि हमारे सभी प्राचीन ऋषि, योगी व तपस्वी-संत तो मांस, मछली, अंडा, शराब, भांग व तम्बाकू से दूर रहकर योग करते एवं वैसा ही बताते हैं तथा सबको पवित्र भावना से भगवान की भक्ति की प्रेरणा देते हैं, योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज तो गीता में अत्यंत बासी खाने को भी मना करते हैं - पर साईं बाबा नाम के एक मुसलमान चिलम पीने तथा मांस खाने की ही नही अपितु पशु बलि करने की भी प्रेरणा दे देता हैं, गंदी व नशीली

चिलम और असंख्य कीड़ों के मरने से सड कर बनी हुई बदबूदार शराब क्या चित्त को शांत, मन को पवित्र व आत्मा को कभी आनन्दति कर सकती है, यदि कर सकती तो फिर चिलम पीकर या शराब पीकर गंदी नाली में गिरने अथवा सड़क पर पड़े हुए सभी लोग साईं बाबा की भांति महायोगी मान लेने या मान लिए जाने चाहियें। साईं बाबा शिर्डी वाले की जीवनी को भी पढ़कर देख लीजिये वहां अत्यंत साफ स्पष्ट शब्दों मे लिखा है कि उन्होंने मस्जिद पर बकरे की बलि देकर सबको प्रसाद बांटा और पहले स्वयं नशीली चिलम पी तथा उसके पश्चात सबको पिलाई।

स्वयं शिर्डी संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली इस पुस्तक का नाम है श्री साईं सत्चरित्र, आप इसमें स्वयं समस्त तथ्यों तथा प्रमाणों से अवगत हो सकते हैं।

प्रमाण:-

1. मस्जिद में एक बकरा बलि देने के लिए लाया गया। वह अत्यन्त दुर्बल और मरने वाला था। बाबा ने उनसे चाकू लाकर बकरा काटने को कहा।
   -:अध्याय 23. पृष्ठ 161.
2. तब बाबा ने काका साहेब से कहा कि मैं स्वयं ही बलि चढ़ाने का कार्य करूँगा।
   -:अध्याय 23. पृष्ठ 162.
3. फकीरों के साथ वो आमिष (मांस) और मछली का सेवन करते थे।
   -:अध्याय 5. व 7.
4. कभी वे मीठे चावल बनाते और कभी मांस मिश्रित चावल अर्थात नमकीन पुलाव।
   -:अध्याय 38. पृष्ठ 269.
5. एक एकादशी के दिन उन्होंने दादा केलकर को कुछ रूपये माँस खरीद कर लाने को दिये। दादा पूरे कर्म काण्डी थे और प्राय:
   सभी नियमों का जीवन में पालन किया करते थे।
   -:अध्याय 32. पृष्ठ: 270.
6. ऐसे ही एक अवसर पर उन्होंने दादा से कहा कि देखो तो नमकीन पुलाव कैसा पका है? दादा ने योंही मुँह देखी कह दिया कि अच्छा है। तब बाबा कहने लगे कि तुमने न अपनी आँखों से ही देखा है और न ही जिह्वा से स्वाद लिया, फिर तुमने यह कैसे कह दिया कि उत्तम बना है? थोड़ा

ढक्कन हटा कर तो देखो। बाबा ने दादा की बाँह पकड़ी और बल पूर्वक बर्तन में डालकर बोले "-" अपना कट्टरपन छोड़ो और थोड़ा चखकर देखो"।

-:अध्याय 38. पृष्ठ 270.

प्रश्न:-

1. क्या साँई की नजर में हलाली में प्रयुक्त जीव, जीव नहीं कहे जाते?
2. क्या एक संत या महापुरूष द्वारा क्षण भंगुर जिह्वा के स्वाद के लिए मूक-निरीह रीह जीवों का मारा जाना उचित होगा?
3. सनातन धर्म के अनुसार जीव हत्या पाप है। तो क्या साँई पापी नहीं?
4. एक पापी जिस को स्वयं क्षण भंगुर जिह्वा के स्वाद की तृष्णा थी, क्या वो आपको मोक्ष का स्वाद चखा पायेगा?
5. तो क्या ऐसे नीच कर्म करने वाले को आप अपना आराध्य या ईश्वर कहना चाहेंगे?

आँख के अंधे व गाँठ के पूरे इन पढ़े लिखे मूर्खों से हम इतना ही कहना चाहते हैं कि किसी की पूजा व सत्कार और किसी को गुरू तथा ईष्ट बनाने से पहले उसके विषय में कुछ तो जान लिया करो। बाजार से एक दंस रूपये का ब्लेड या बीस रूपये की बूट-पालशि, पेस्ट अथवा लपिस्टकि खरीदते समय तो आप सब कुछ विचार विमर्श कर लेते हो और तो क्या जीवन नैय्या के पार जाने के साधन 'धर्म' पूजा या 'मार्गदर्शक' के विषय में कुछ भी न विचारना चाहिए?

क्या किसी प्राणी को बिना कारण मारना उत्तम है?
क्या उसमे भी हमारी तरह प्राण तथा रक्त आदि नही है?
उसमे भी हमारी ही भाँती आत्मा है और उसे भी पीड़ा होती है।

जैसे हमे चोट लगने से खून निकलता है ठीक या कुछ वैसे ही उसके शरीर से भी खून निकलता है। जैसे वे मारने वाले से दूर भागते हैं और प्यार करने वाले के समीप आ जाते हैं, ठीक वैसे ही हम सभी। जैसे हमे मरना नही, जीना पसंद है ठीक उसी प्रकार पशुओं को भी मरना पसंद नही है, बलि देने और करने वाले मूर्ख लोग बोलते हैं, लोगों को बहकाते हैं कि वे पशु मरते नही अपितु स्वर्ग में चले जाते हैं। परमात्मा की वाणी अर्थात वेद में स्पष्ट लिखा है कि **"मांस न अश्नियात"** अर्थात मांस मत खाओ और अंडे व मांस खाने वाले राक्षसों को अपने पास से दूर हटाओ।

अब आप ही थोड़ी बुद्धि लगाकर विचार कीजिए कि पशु बलि करने कराने वाला और चिलम तथा मांस का भोग करने कराने वाला व्यक्ति भले वो कितने बड़े भौतिक साम्राज्य का ट्रस्टी बन गया हो या भले वह अनेकानेक सेवा प्रकल्प चला रहा हो तो भी क्या वह 'साईं' हुआ अथवा कुछ और या कि राक्षस? साईं कहते हैं सज्जन, सहयोगी, मित्र तथा पालन कारने वाले को।

उपरोक्त बातों से सिद्ध होता है कि यह तथाकथित साईं बाबा हो कि वास्तव में में चिलम का नशा कारने वाला और मांस खाने वाला मुसलमान था उसे प्राणियों का हत्यारा होने से साईं नही अपितु 'कसाईं' जानना चाहिए। नादान हैं वे लोग जो अपने शिव, राम, कृष्ण जैसे महान योगी पुरूषों के मार्ग पर न चल कर ॐ का ध्यान, वेद, का ध्यान, यज्ञ का अनुष्ठान, संस्कारी सन्तान तथा राष्ट्रहित बलिदान - इन सारी बातों को छोड़कर ऐसे कसाईं वेद धर्म विरोधी, हत्यारे व समाज के बांटने वाले पाखंडी लोगों के जाल में फंसते हैं।

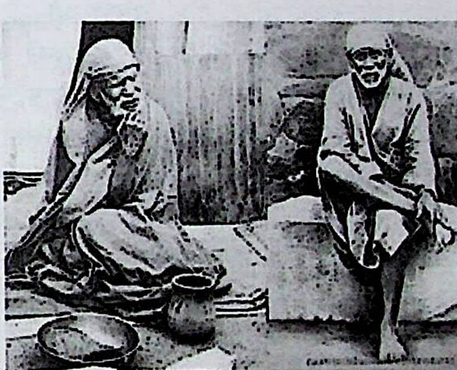
मुरादाबाद दीनदयाल नगर स्थित साईं मन्दिर में यह देख कर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि वहां के नादान हिन्दुओं ने मन्दिर बनाने के साथ साथ वहां स्वयम एक मस्जिद भी बनाई है और उसमे एक कुरआन की पुस्तक भी रखी है। कितने आश्चर्य की बात है कि एक और तो विदेशी हमलावरों ने अपने कुरआन के आधार पर मुसलमानी मजहब के आदेश से इस देश में लाखों हिन्दुओं को काफिर होने के कारण कत्ल किया और उनके हजारों मन्दिर तथा यज्ञशालाओं पर हिन्दुओं के ही खून से मस्जिदें बनाएँ और कहाँ ऐसे मूर्ख जो यज्ञशालाएं न बनाकर मस्जिद बनाने में लगे हैं।

ऐसी मुर्खता का मुख्य कारण है हिन्दुओं का अज्ञान और इनके तथाकथित गुरू महाराजों का अपने नाम की प्रसिद्धि होती भीड़ बढ़ाने का स्वार्थ। क्योंकि ये तथाकथित गुरू अपने मंचो पर "हिन्दू-मुस्लमान, इसाईं सब बराबर हैं" के गीत गाते हैं। दुःख की बात है कि यदि इन नादान, गुरूओं ने कभी कुरआन या बाइबिल पढने का प्रयास किया होता तो ऐसा कभी न बोलते।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व वैदिक आर्य संस्कृति की रक्षा हेतु अपना कार्य प्रारम्भ करते हुए अपने सुयोग्य गुरू ब्म्हऋषि स्वामी विरजानन्द दण्डी जी को यह वचन दिया था कि वे जीवनभर वैदिक संस्कृति का प्रचार और उसके विरूद्ध पाखंड का सदा खंडन करते रहेंगे। अतः उन्होंने वेदानुसार एक चेतन-निराकारी-भगवान तथा उनके वेदज्ञान, उसकी प्राप्ति हेतु यज्ञ के विधान, तदनुसार संस्कारी सन्तान तथा राष्ट्र हेतु बलिदान में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। उन्होंने इस बात की तनिक भी चिंता न की कि अनाड़ी व पाखण्डी, धनवान तथा देश पर राज करने वाले शक्तिशाली अधिकारीजन क्या प्रतिक्रिया करते हैं?

वे अपने कार्य में दिन रात लगे रहे और अपने गुरू को दिए गए वचन (व्रत) के अनुसार उसी का पालन करते हुए पाखण्डियों, गोरों के गुलाम पूंजीपतियों, व अंग्रेजी राजनेताओं द्वारा दिए गये विष से बलिदान हो गये।

"विश्वानि...दुरितानि..." मन्त्र उन्हें इसलिए प्यारा था क्योंकि इसके प्रथम भाग में खण्डन तथा द्वितीय भाग में मंडन का विधान है। यह कटु सत्य है कि गंदगी को हटाये बिना सफाई नही हो सकती, अर्थात पाखण्डियों को स्व-जीवन से निकाले बिना कोई आर्य या वैदिक या सनातन धर्मी नही कहला सकता।



माँस बिर्यानी खाता हुआ साई

राधा कृष्णा आई और साईं

सुन्दरबाई क्षीरसागर alias राधाकृष्ण आई एक अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र है साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ की जीवन यात्रा का, इनके बारे में Sh.M.B.Rege द्वारा बहुत देर बाद कुछ जानकारी सामने आई जो कि उल्लेखनीय है। अहमदनगर की ही रहने वालीं *राधाकृष्ण आई* एक विधवा थी जो कि अपने पति की मृत्यु के कारण बाल्य-काल में ही विधवा हो चुकी थीं, जिसके बाद उसने अपने Grand-Father (दादा या नाना) के पास ही रहना आरम्भ कर दिया था, अहमदनगर में ही, और वहां रहते-रहते उसने साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ के चित्र की पूजा करनी भी आरम्भ कर दी थी। 1907 में जब *राधाकृष्णा आई उर्फ सुन्दरबाई क्षीरसागर* की आयु 22 वर्ष की थी तब वो पूर्ण रूप से शिर्डी में ही बस गई, उसकी साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ केप्रति भक्ति गहरी थी। वो प्रतिदिन सुबह बाबा के बगीचे में घूमने जाने के बादउस पूरे मार्ग में झाडू लगाती थी, उस मार्ग पर कोई नही चलता था स्वयं राधाकृष्णा आई भी नही। राधाकृष्णा आई ने अपना भोजन भी अब साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ की भिक्षा में से ही ग्रहण करना आरम्भ कर दिया था। महत्वपूर्ण आयोजनों जैसे किसी महोत्सव या गरीबों के लिए लंगर के समय राधाकृष्णा आई अन्य भक्तों के साथ खाना बनाने में भी सहयोग करती थी। इसी के साथ *राधाकृष्ण आई* ने द्वारकामाई के सफेदी-पुताई का कार्य भी आरम्भ कर दिया साथ ही यह ध्यान भी रखती थी कि यह कार्य करते समय साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ की नींद खराब न हो। एक बार *राधाकृष्णा आई* ने साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ के कपड़े ढो दिए , बाबा बहुत खीझ गये और अप्रसन्न होकर *राधाकृष्णा आई* को कहा (निर्देश दिया) कि भविष्य में वो उनके कपड़ों को न छुये क्योंकि वह अपना कार्य स्वयं ही करना चाहते हैं। अधिवक्ता (वकील) M.B.Rege स्वयं भी साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ के बड़े भक्त थे तथा लगातार शिर्डी भी जाते रहते थे, जो कि बाद में इन्दोर उच्च्व न्यायलय के जज भी नयुक्त हुए। 1910 में जब अधिवक्ता M.B.Rege शिर्डी गये तो बाबा ने उनसे *राधाकृष्णा आई *के घर पर ही रहने को कहा। ठीक इसी प्रकार साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ के अन्य भक्त भी *राधाकृष्णा आई* के घर लंगर आदि के लिए तैयार होने वाले खाना पकाने हेतु जाया करते थे।

राधाकृष्णा आई का बड़ा अत्याचारपूर्ण दुखद अंत हुआ। 1917 में *राधाकृष्णा आई* ने एक बच्चे कोजन्म दिया जो कि जन्म के तुरंत बाद मृत्यु को प्राप्त हो गया, यहाँ यह उल्लेखनीय करना आवश्यक है कि *राधाकृष्णा आई* एक विधवा थीं। *राधाकृष्णा आई* की इस असामयिक मौत से sai बाबा उर्फ चाँद मियाँ काफी परेशान हो गये। अधिवक्ता M.B. Rege के अनुसार *राधाकृष्णा आई* एक सरल और पवित्र महिला थी, जिसके पास एक कपास की चटाई, एक साड़ी का जोड़ा, एक कटोरा, एक भगवान श्री कृष्ण जी की खंडित प्रतिमा भी थी, दो धार्मिक पुस्तकें थीं, जिसमे से एक एकनाथ महाराज द्वारा लिखित *भागवत* थी तथा दूसरी संत तुकाराम द्वारा लिखित *अभंग* नामक पुस्तक थी, यही उसकी कुल जमा पूँजी आदि थी। *राधाकृष्णा आई* भक्तिमयी गीत गाते हुए अत्यंत बेसुध हो जाती थीं और किसी दूसरी ही दुनिया में खो जाती थीं, उन्हें प्रचार या प्रसिद्धि का कोई शौक नही था। एक बार एक फोटोग्राफर बम्बई से आया और उसने *राधाकृष्णा आई* के कुछ चित्र खींच लिए, जब उन्हें यह बात ज्ञात हुई तो वे उस चित्रकार के तांगा (घोड़ा-गाड़ी) के पीछे भागीं उस चित्रकार से उसका कैमरा छीनकर उसे तोड़ दिया। साईं बाबा के पाखंड से भरे जीवन को लोगो के सामने सही दिखाने के लिए पहले दास गुना, हेमाडपंत आदि ने साईं बाबा को कबीर से जोड़ने का प्रयास किया जिसका प्रमाण अध्याय एक के अंतिम भाग में और अध्य 3 में साईं बाबा के माता पिता शीर्षक में दिया है, परन्तु इसमें जब वे सफल नहीं हुए तो उन्होंने साईं बाबा की छवि एक हिन्दू संत की बनाने का प्रयास किया, उसमे भी असफल होने के बाद 90 के दशक में तो साईं बाबा को पहले फकीर और फिर हिन्दुओ में भगवान बना कर पूजने षड्यंत्र रचा जिसमे वे सफल भी हुए, इस प्रकार साईं बाबा का पूरा जीवन जी रहस्यों और पाखंड से भरा पड़ा है और इसी का खंडन करने के लिए हमने अपनी पुस्तक में भी तथ्यों और प्रमाण के आधार पर साईं बाबा के जीवन के एक एक पाखंड को पाठको तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

प्रश्नः

साईं के नाक के नीचे से राधा कृष्णा के साथ किसने ये अधर्म किया और नौ महीने पेट से होने से के बावजूद साईं कभी ये जान ही नहीं पाया? ये सवाल हमेशा खड़ा रहेगा और जिस प्रकार राधा कृष्णा और उसके बच्चे की मृत्यु हुई या हत्या हुई यह भी एक सवाल है?

साइ - हिन्दु मुस्लिम एकता का छंदम प्रतीक

कई साँई भक्त अंध श्रध्दा में डूबकर कहते हैं कि साँई न तो हिन्दू थे और न ही मुस्लिम। इसके लिए यदि उनके जीवन चरित्र का प्रमाण दें तो दुरा ग्रह वश उसके भक्त कुतर्कों का अम्बर लगा देते हैं।

ऐसे में अगर साँई खुद को मुसलमान होना स्वीकार करे तो साँई भक्त साँई को क्या कहना चाहेंगे? हिन्दु या मुसलमान?

प्रमाण:-

1. शिर्डी पहुँचने पर जब वह मस्जिद में घुसा तो बाबा अत्यन्त क्रोधित हो गये और उसे उन्होने मस्जिद में आने की मनाही कर दी। वे गर्जन कर कहने लगे कि इसे बाहर निकाल दो। फिर मेधा की ओर देखकर कहने लगे कि तुम तो एक उच्च्च कुलीन ब्म्मण हो और मैं निम्न जाति का यवन (मुसलमान)। तुम्हारी जाति भ्रष्ट हो जायेगी।
   -:अध्याय 28. पृष्ठ 197.
2. मुझे इस झंझट से दूर ही रहने दो। मैं तो एक फकीर (मुस्लिम, हिन्दू साधू कहे जाते हैं फकीर नहीं) हूँ। मुझे गंगा जल से क्या प्रायोजन?
   -:अध्याय 32. पृष्ठ 228.
3. महाराष्ट्र में शिर्डी साँई मन्दिर में गायी जाने वाली आरती का अंश-
   "गोपी चंदा मंदात्वां चीउदरिले!
   मोमीन वंशी जन्मुनी लोंका तारिले!"
   उपरोक्त आरती में "मोमीन" अर्थात् मुसलमान शब्द स्पष्ट आया है।
4. मुस्लिम होने के कारण माँसाहार आदि का सेवन करना उनकी पहली पसन्द थी।

प्रश्न:

1. साँई जिन्दगी भर एक मस्जिद में रहा, क्या इस से भी वह मुस्लिम सिद्ध नहीं हुआ? यदि वह वास्तव में हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक होता तो उसे मन्दिर में रहने में क्या बुराई थी?

2. सिर से पाँव तक इस्लामी वस्त्र, सिर को हमेशा मुस्लिम परिधान कफनी में बाँधकर रखना व एक लम्बी दाढ़ी, यदि वो हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक होता तो उसे ऐसे ढ़ोंग करने की क्या आवश्यकता थी? क्या ये मुस्लिम कट्टरता के लक्षण नहीं हैं?
3. वह जिन्दगी भर एक मस्जिद में रहा, परन्तु उसकी मरणोपरान्त उसे एक मन्दिर में दफना दिया जाये, क्या ये न्याय अथवा धर्म संगत है? "ध्यान रहे ताजमहल जैसे अनेक हिन्दू मन्दिरें व इमारते ऐसी ही कट्टरता की बली चढ़ चुकी हैं। "
4. उसका अपना व्यक्तिगत जीवन कुरान व अल-फतीहा का पाठ करने में व्यतीत हुआ, वेद व गीता नहीं? तो क्या वो अब भी हिन्दू मुस्लिम एकता का सूत्र होने का अधिकार रखता है?

साईं एक टूटी हुयी मस्जिद में रहा करते थे और सर पर कफनी बंधा करते थे। सदा "अल्लाह मालिक" एवं पुकारा करते थे ये दोनों ही शब्द मुस्लिम धर्म से संबन्धित हैं। साईं का जीवन चरित्र उनके ही एक भक्त ने लिखा है।

साईं और सनातन परम्पराओं का अपमान

प्रायः हिन्दू समाज साईं को संत परम्परा से मानता है, लेकिन संत परम्परा में महापुरूष आते हैं जो अपना प्रत्येक कार्य सात्विकता से आरम्भ और सात्विकता से ही अंत करते हैं + क्या साईं संत परम्परा से थे? अधिकाँश हिन्दू को साईं भक्त बने, उन्होंने साईं को संत माना। कारण, साईं की जितनी सभी मूर्तियाँ या चित्र बने, उनमे साईं के एक हाथ की हथेली में ॐ, माथे पर साईं और दूसरे हाथ की हथेली में राम सभी हिन्दुओं को साईं के संत होने का प्रमाण पत्र देता है। साईं के प्रचार में सभी देवी-देवताओं को साईं के वेश में दिखाया गया। कहीं मुरली मनोहर, कहीं राम, कहीं शंकर, कहीं शेष नाग पर सोये साईं, परन्तु साईं सत्चरित्र में वर्णन है कि साईं बीडी, तम्बाकू और चिलम का सेवन करते थे, गाली निकालना, गुस्से में असहाय लोगों को पीटना, कई दिन तक स्नान नहीं करना, मांसाहार का सेवन करना, गंगा स्नान से इनकार करना, टमरेल अर्थात संडास के डिब्बे से ही जल पीना आदि कार्य करते थे, जिन्हें कभी भी दिखाया नही गया। **अतः वह संत की श्रेणी में नही आते।**

आज हमारे देश में तथा कथित भगवानो का एक दौर चल निकला है। इन्हीं भगवानों में से एक हैं शिर्डी के साईं बाबा .आज भारत वर्ष के हर नगर में इनके अनेकों मंदिर हैं। अनेकों संस्थाएं इनके नाम से चल रही हैं एवं देश विदेश में इनको मानने वालों की तथा इनके लिए दान देने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। महाराष्ट्र के अहमदनगर में स्थित शिर्डी साईं बाबा संस्थान के अनुसार वर्ष २०११ में केवल इस ट्रस्ट को ही ३६ किलो ग्राम सोना, ४४० किलो ग्राम चांदी एवं ४०१ किलो ग्राम रूपया दान में मिला. समस्त साईं मंदिरों में दिए गए दान का तो अनुमान भी लगाना भी संभव नहीं है.आज साईं को ईश्वर का अवतार माना जा रहा है। हमारे महपुरूषों श्रीराम कृष्ण का ही रूप इन्ही ने बतलाया जा रहा है और उनके इस्थान पर इनकी पूजा की जा रही है। मन में प्रश्न उठता है की आखिर ये बाबा हैं कौन, कहाँ से ये आये थे और किस तरह ये लोगों का भला करते हैं। साईं एक पारसी शब्द है जिसका अर्थ है मुस्लिम फकीर। साईं एक टूटी हुयी मस्जिद में रहा करते थे और सर पर कफनी बंधा करते थे। सदा "अल्लाह मालिक" एवं "सबका मालिक एक" पुकारा करते थे ये दोनों ही शब्द मुस्लिम धर्म से संभंधित हैं. साईं का जीवन

चरित्र उनके एक भक्त हेमापंदित ने लिखा है। वो लिखते हैं की बाबा एक दिन गेहूं पीस रहे थे। ये बात सुनकर गाँव के लोग एकत्रित हो गए और चार औरतों ने उनके हाथ से चक्की ले ली और खुद गेहूं पिसना प्रारंभ कर दिया। पहले तो बाबा क्रोधित हुए फिर मुस्कुराने लगे .जब गेंहूँ पीस गए त्तो उन स्त्रियों ने सोचा की गेहूं का बाबा क्या करें गे और उन्होंने उस पिसे हुए गेंहू को आपस में बाँट लिया। ये देखकर बाबा अत्यंत क्रोधित हो उठे और अप्सब्द कहने लगे-" स्त्रियों क्या तुम पागल हो गयी हो? तुम किस के बाप का मॉल हड़प कर ले जार ही हो?" फिर उन्होंने कहा की आटे को ले जाकर गाँव की सीमा पर दाल दो। उन दिनों गाँव मिएँ हैजे का प्रकोप था और इस आटे को गाँव की सीमा पर डालते ही गाँव में हैजा ख़तम हो गया। (अध्याय १ साईं सत्चरित्र)

१. मान्यवर सोचने की बात है की ये कैसे भगवान हैं जो स्त्रियों को गालियाँ दिया करते हैं हमारी संस्कृति में तो स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। आटा गाँव के चरों और डालने से कैसे है जादू हो सकता है? फिर इन भगवान ने केवल शिर्डी में ही फैली हुयी बीमारी के बारे में ही क्यूँ सोचा? क्या ये केवल शिर्डी के ही भगवान थे?

२. साईं सत्चरित्र के लेखक ने इन्हें कृष्ण का अवतार बताया गया है और कहा गया है की पापियों का नाश करने के लिए उत्पन्न हुए थे परन्तु इन्हीं के समय में प्रथम विश्वयुद्ध हुआ था और केवल यूरोप के ही ८० लाख सैनिक इस युध्द में मरे गए थे और जर्मनी के ७.५ लाख लोग भूख की वजह से मर गए थे। तब ये भगवान कहाँ थे। (अध्याय 4 साईं सत्चरित्र)

३. १९१८ में साईं बाबा की मृत्यु हो गयी. अत्यंत आश्चर्य की बात है की जो ईश्वर अजन्मा है अविनाशी है वो मर गया। भारत वर्ष में जिस समय अंग्रेज कहर रहे थे। निर्दोषों को मारा जा रहा था अनेकों प्रकार की यातनाएं दी जा रहीं थी अनगिनत बुराइयाँ समाज में व्याप्त थी उस समय तथा कथित भगवान बिना कुछ किये ही अपने लोक को वापस चले गए। हो सकता है की बाबा की नजरों में भारत के स्वतंत्रता सेनानी अपराधी थे और बिटिश समाज सुधारक।

४. साईं बाबा चिलम भी पीते थे। एक बार बाबा ने अपने चिमटे को जमीं में घुसाया और उसमें से अंगारा बहार निकल आया और फिर जमीं में जोरो से प्रहार किया तो पानी निकल आया और बाबा ने अंगारे से चिलम जलाई और पानी से कपडा गिला किया और चिलम पर लपेट लिया. (अध्याय 5 साईंसत्चरित्र)बाबा नशा करके क्या सन्देश देना चाहतेथे और जमीं में चिमटे से अंगारे निकलने का क्या प्रयोजन था क्या वो जादूगरी दिखाना

कहते थे? इस प्रकार के किसी कार्य से मानव जीवन का उद्धार तो नहीं हो सकता हाँ ये पतन के साधन अवश्य हैं।

५ शिर्डी में एक पहलवान था उससे बाबा का मतभेद हो गया और दोनों में कुश्ती हुयी और बाबा हार गए (अध्याय 5 साईंसत्चरित्र)। वो भगवान का रूप होते हुए भी अपनी ही कृति मनुष्य के हाथों पराजित हो गए?

६. बाबा को प्रकाश से बड़ा अनुराग था और वो तेल के दीपक जलाते थे और इस के लिए तेल की भिक्षा लेने के लिए जाते थे एक बार लोगों ने देने से मनाकर दिया तो बाबा ने पानी से ही दीपक जला दिए। (अध्याय 5 साईंसत्चरित्र) आज तेल के लिए युद्ध हो रहे हैं। तेल एक ऐसा पदार्थ है जो आने वाले समय में समाप्त हो जायेगा इसके भंडार सीमित हैं और आवश्यकता ज्यादा .यदि बाबा के पास ऐसी शक्ति थी जो पानी को तेल में बदल देती थी तो उन्होंने इसको किसी को बताया क्यूँ नहीं?

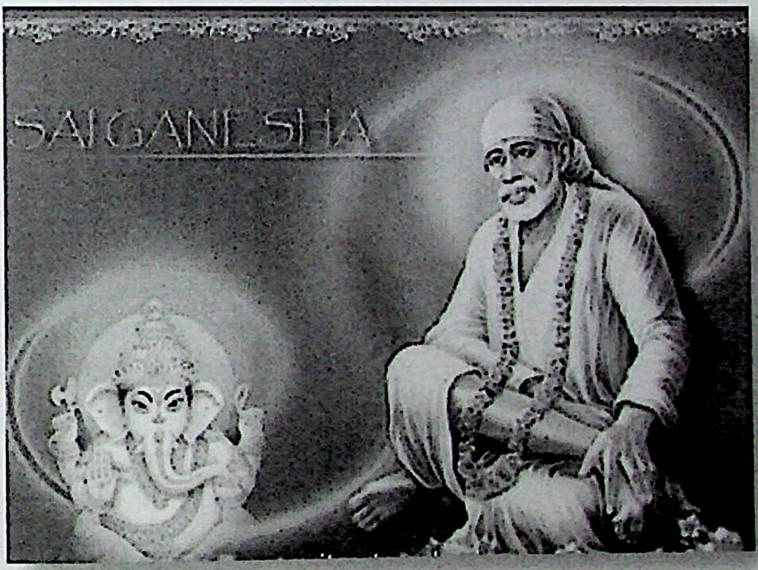
७. गाँव में केवल दो कुएं थे जिनमें से एक प्राय सुख जाया करता था और दूसरे का पानी खरा था. बाबा ने फूल डाल कर खारे जल को मीठा बना दिया.लेकिन कुएं का जल कितने लोगों के लिए पर्याप्त हो सकता था इसलिए जल बहार से मंगवाया गया .(अध्याय 6 साईंसत्चरित्र) World Health Organization के अनुसार विश्व की ४० प्रतिशत से अधिक लोगों को शुद्ध पानी पिने को नहीं मिल पाता. यदि भगवान पीने के पानी की समस्या कोई समाप्त करना चाहते थे तो पूरे संसार की समस्या को समाप्त करते लेकिन वो तो शिर्डी के लोगों की समस्या समाप्त नहीं कर सके उन्हें भी पानी बहार से मांगना पड़ा. और फिर खरे पानी को फूल डालकर कैसे मीठा बनाया जा सकता है?

८. फकीरों के साथ वो मांस और मच्छली का सेवन करते थे. कुत्ते भी उनके भोजन पत्र में मुंह डालकर स्वतंत्रतापूर्वक खाते थे (अध्याय 7 साईंसत्चरित्र) अपने स्वार्थ वश किसी प्राणी को मार कर खाना किसी ईश्वर का तो काम नहीं हो सकता और कुत्तों के साथ खाना खाना किसी सभ्य मनुष्य की पहचान भी नहीं है अमुक चमत्कारों को बताकर जिस तरह उन्हें भगवान की पदवी दी गयी है इस तरह के चमत्कार तो सड़कों पर जादूगर दिखाते हैं। काश इन तथा कथित भगवान ने इस तरह की जादूगरी दिखने की अपेक्षा कुछ सामाजिक उत्तथान और विश्व की उन्नति एवं समाज में पनपर हीं समस्याओं जैसे बाल विवाह सतीप्रथा भुखमरी आतंकवाद भाष्टाचार अजादी के लिए कुछ कार्य किया होता!

यह संसार अंधविश्वास और तुच्छख्यादी एवं सफलता के पीछे भागने वालों से भरा पड़ा हुआ है.दयानंद सरस्वती, महाराणाप्रताप शिवाजी सुभाष

चन्द्रबोस सरदार भगत सिंह रामप्रसाद बिस्मिल लोग जिन्होंने इस देश के लिए अपने प्राणों को न्योच्चावर कर दीये लोग उन्हिएँ भूलते जार हे हैं और साईं बाबा जिसने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में न कोई योगदान दिया नही सामाजिक सुधार में कोई भूमिका रही उनको समाज के कुछ लोगों ने भगवान का दर्जा दे दिया है। तथा उन्हें योगिराज श्रीकृष्ण और मायादा पुरूशोत्तम श्रीराम के अवतार के रूप में दिखाकर न केवल इन महापुरूषों का अपमान किया जा रहा अपितु नयी पीडी और समाज को अवनति के मार्ग की और ले जाने का एक प्रयास किया जा रहा है।

आवश्यकता इस बात की है की है की समाज के पतन को रोका जाये और जन जाग्रति लाकर वैदिक महापुरूषों को अपमानित करने की जो कोशिशे न की जा रही हिए उन पर अंकुश लगाया जाये।



साईं की सनातन धर्म में घुसपैठ

महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर में स्थित शिर्डी नामक स्थान में शिर्डी के साईं बाबा के नाम से प्रसिद्ध किये गये बाबा नामधारी की मूर्तियाँ बनवा कर अनेक देवस्थानों में देवताओं के बीच में प्रलोभनादि देकर और रखवा कर पूजा करवाई जा रही है। वह किसी भी प्रकार से शास्त्रीय पूजा विधानों के द्वारा सम्मत नही है। उपासनाशास्त्र (वेदादि श्रुति-स्मृति ग्रन्थ, धर्मशास्त्र) के नियमानुसार मूर्ती के विषय में बहुत से नियम बताये गये हैं। मूर्ती शास्त्रोक्त किस वस्तु से बनी है उसका शास्त्र निर्दिष्ट परिमाण कितना है अर्थात मन्दिर के आकार प्रकार तथा मूर्ति के स्थापित किये जाने वाले स्थान गर्भ-गृह के परिमाण के आधार पर मूर्ति का का परिमाण नियम-सम्मत है कि नही? और यह निर्दोष रूप से है कि नही आदि भी विचार किये जाते हैं। मूर्ति की स्थापना हेतु किस मास में, किस पक्ष में, किस नक्षत्र में, किस मूहूर्त में किस देवता की स्थापना हो? लग्न, नक्षत्र तिथि, एवं वार का विचार किया जाता है।

जब मन में आया तब मूर्ति ले जाकर रख देना मूर्ति-प्रतिष्ठा के विरूद्ध है। शास्त्रानुसार विधानों से रहित मूर्ती को प्रमाणादि करने पर व्यक्ति, परिवार, समाज यहाँ तक कि राष्ट्र की भी हानि होती है। आस्था पूजा तथा मूर्ति की प्रतिष्ठा में तीन बातों का ध्यान रखा जाता है। वे तीन इस प्रकार हैं :

1. असत 2. अचेतन 3. अयोग्यता

इनमे से एक भी जहां हो वह पूजा के योग्य होता है और साईं में तो ये तीनो बातें सम्पूर्ण रूप से हैं। जैसे साईं असत है अर्थात साईं इस समय नही है, वह शरीर त्याग चुका है, मरणधर्मा है तथा अयोग्य है अर्थात साईं की मूर्ति की प्रतिष्ठा का विधान ही नही है। स्थापना हेतु प्रयुक्त होने वाले मन्त्र ही नही हैं। वेद शास्त्र, स्मृति ग्रन्थों, धर्म-शास्त्रों में राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा, हनुमान, सूर्य, गणेश आदि के मन्त्र हैं और वे नित्य हैं, उनका श्रीविग्रह मनुष्यों के पंचभौतिक शरीर जैसा नहीं हैं, वे सत हैं। उनका आविर्भाव तथा अंतर्भाव होता है, उनका जन्म तथा मृत्यु नही होती। रामायण में **"भये प्रकट कृपाला"** कहा है, यह भी लोग राम चरित मानस में आज भी गाते आ रहे हैं।

साईं को उनके अंधविश्वासी भक्त भगवान इस नाम से प्रचारित कर रहे हैं आप किसी को कैसे भगवान कह सकते हैं? भगवान कहने वाले उनके भक्त वास्तव में भगवान की परिभाषा ही नही जानते। वेदादि शास्त्रों में जो भगवान का स्वरूप बताया गया है वह शास्त्रोक्ति इस प्रकार है:

उत्पत्तिं च विनाशं च भूतानां आगतिं गतिं।
वेत्ति विध्यां अविध्यां च स वाच्यो भगवान इति॥

यह भगवत्ता केवल पूर्ण परब्म्म में तथा उनके पूर्णावतार राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा में है।

मन्त्रों द्वारा मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा, न्यास, स्नपन, अधिवासादि विधियां सम्पन्न होती हैं, तब उस मूर्ति में अभिप्सित देवता के देवत्व की बुद्धि होती है, वहां पत्थर बुद्धि नही होती। जो लोग कहते हैं कि सनातन वैदिक धर्मी पत्थरों की पूजा करते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि पत्थर तो घरों के भी कमरों में स्थित है तो क्या उन कमरों के फर्श तथा पत्थरों की भी पूजा की जाती है?

नियमानुसार शास्त्र समर्थित पत्थर की मूर्ति में वैदिक तथा तांत्रिक मन्त्रों और विधि से प्रतिष्ठा की जाती है जिसे प्राण-प्रतिष्ठा कहते हैं वहां पत्थर-बुद्धि नही रहती।

और भी कुछ लोग अविचारित प्रश्न करते हैं वह प्रथम प्रश्न यह है: जिस मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की गई वह चलती क्यों नही, बोलती क्यों नही, भोग को खाती क्यों नही? अगर मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा से चेतना आती है तो मुर्दे में भी आनी चाहिए।

इस प्रकार के कुतर्क करने वालों को यह समझना चाहिए कि प्राण-प्रतिष्ठा विधि के बाद उस प्रतिष्ठित मूर्ति में इच्छित देवता के के विषय में देवत्व बुद्धि होती है। उस शास्त्रानुसार प्रतिष्ठापति मन्दिर में प्रतिष्ठित मूर्ति के माध्यम से हम अपने ईष्ट की पूजा आदि करते हैं। देवता निवेदित को देखकर प्रसन्न होते हैं तृप्त होते हैं। क्योंकि उस प्रतिष्ठापति मूर्ती में वेदमंत्रों से आवाह्नादि किये गये हैं, इसलिए उस चेतन तत्व का सान्निध्य अनुभूत होता है। प्राण-प्रतिष्ठा से मूर्ति में देवता का सान्निध्य होता है मूर्ति को जीवित नही किया जाता, यह बात स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी समझ नही आई थी, शिवमूर्ति में आकर नैवेद्य खाने वाले चूहे को जब शिव भगा नही सके तो भक्तों की रक्षा क्या करेंगे? यह भ्रम हो गया और वे मूर्ति-पूजा के विरोधी हो गये। दयानंद चार संहिताएं वेदों

की मानते हैं, इनमे यजुर्वेद है। यजुषसंहिता के तेरहवें अध्याय के दूसरे मन्त्र का प्रतिष्ठाविधि में प्रयोग होता है और वह अति प्रसिद्ध है। वह मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ मनोजूतिर्जूषतामाज्यस्य बृहस्पतियज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्द्धातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ।

मातृका वर्णों से भी प्रतिष्ठा की जाती है। लोकाचार में श्रावण मास में और सभी समय में सभी पार्थिव शिवलिंग पूजा की जाती है। शास्त्रोक्त विधि से निर्दिष्ट मिटटी लेकर शिवलिंग बनाते हैं और उसमे शिव का आवाह्न करते हैं पूजन करते हैं उससे शिव प्रसन्न होते हैं। और उस मूर्ति का विसर्जन कर देते हैं यदि प्राण प्रतिष्ठा बोलती क्यों नही परन्तु वह जो शिव सान्निध्य था वह विसर्जन के बाद चला जाता है। यह तो नित्य पूजा का विधान है। मन्दिरों में मन्त्रों द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों में अवैध अशुद्धादि स्पर्शों आदि से बचाने के लिए भी यह ध्यान रखा जाता है। यदि उस प्रतिष्ठित मूर्ति का रजस्वला से स्पर्श हो जाए, शावादि से स्पर्श हो जाए तो देवता का सान्निध्य चला जाता है। सिद्धांतशेखर ग्रन्थ में लिखा है कि चोर, चाण्डाल, पतित, श्वान और रजस्वला, शवादि के स्पर्श से देवत्व चला जाता है उसकी पुनः प्रतिष्ठा कराकर शुद्धि करानी चाहिए।

चौरचाण्डालपतितश्वोदक्यास्पर्शने सति शवाद्यपहृतौ चैव प्रतिष्ठां पुनराचरेत।। (नि.सि.३/)

साईं अस्त्र और अचेतन तथा योग्य होने से उन पहले से प्रतिष्ठापति राम कृष्ण शिव दुर्गा हनुमान आदि की मूर्ति के बीच साईं की मूर्ति रखने से यह अनर्थ हो जावेगा क्योंकि साईं तो शवरूप में है। अनर्थ किस प्रकार का होता है उसका प्रमाण इस प्रकार है।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्य पूज्या व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम।।

वर्तमान में यह तीनो ही परिणाम लोगों को देखने में आने लगे हैं। दूसरा प्रश्न यह किया जाता है कि साईं की मूर्तियाँ जहां जहां रखी गई हैं और शिर्डी के मुख्य मन्दिर में जो पूजा हो रही है वह उन्हीं उपचारों से होती है जिनका हिन्दू परम्परा से उपयोग करते आ रहे हैं। जैसे पंचामृत से स्नान, मन्त्र-पूर्वक अभिषेक आदि।

उपासना के उपचार ही हिन्दू धर्म जैसे हैं, फर्जी संतों ने कहा हम शिर्डी जाकर देख आये हैं वहां हिन्दुओं जैसी पूजा होती है किन्तु प्रश्न यह है कि जो उपास्य है वह शास्त्रोक्त है या नही? पूजन अर्चन में उपास्य, उपासक और उपासना का विचार किया जाता है। फर्जी संतों ने कहा है कि शिर्डी में मैंने देखा सनातन परम्परा से पूजा होती है। यदि वे ऐसा कह रहे हैं तो वे बताएं वहां उपास्य कौन है? शिर्डी में तो उपास्य साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ हैं और आरती जगन्नाथ जी की हो रही है। साईं की विशाल मूर्ति रखी गई है। यही तो हमारी आपत्ति है कि मिलावट मत करो। जब मूर्ति साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ की है तो उनकी पूजा पद्धति किस शास्त्रीय ग्रन्थ में है?

शास्त्रों में तो सुस्पष्ट रूप से कहा गया है कि:

अन्तरेण विधिं मोहाद्यः कुर्यात साम्परायकिम।
न तत्स्यादुपकाराय भस्मनीव हुतं हविः॥ (नैष्क.)

अर्थात जो बिना विधि के मोहादि से उपासना करता है, आस्था की चादर ओढ़ लेता है उसका यह अशास्त्रीय अवैध प्रयास इस लोक में तथा परलोक में सार्थक नही होता। व्यर्थ ही रहता है जैसे कोई राख में हवन द्वारा साकल्य की आहूतियां दे। इसी अभिप्राय की उक्ति सीता जी की थी जब रावण उन्हें बलपूर्वक अपहरण करके ले जा रहा था तब उन्होंने कहा था -

वपिति मोरी को प्रभुहिं सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा। (अर.का.)

अर्थात यहाँ सीता जी व्यथित होकर कह रही हैं मैं पुरोडास हूँ जो हवन में साधित किया जाता है पर उस पुरोडास को कोई गधा खाने लगे ऐसे ही मैं पुरोडास हूँ और यह रावण रासभ है गधा है जो पुरोडास का अधिकारी नही है। इसी प्रकार रूकमणी जी ने भी श्रीकृष्ण जी के पार ब्स्मणद्वार संदेश भेजा था कि यह शिशुपाल बलपूर्वक वीर्भाग को छीन न ले जैसे सिंह के भाग को गीदड़ ले ले।

मा. वीरभागमभिमर्षतु चैद्य आरात गोमयुवन मृगपतेर्बलिमम्बुजाक्ष।
(भा. १०स्क.अ.५३.श्लोक.३९)

यहाँ प्रमुख साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ है, अन्य मानी मूर्तियों के बीच सिंहासनारूढ़ साईं की मूर्ति है वह प्राकृत मनुष्य है अतः यह ऐसे ही है जैसे कोई भस्म में आहूतियां डाले या गधा पुरोडास खाना चाहे अथवा सिंह का भाग

गीदड़ छीने। भले ही साकल्य (हवि) ठीक हो, घृत भी ठीक हो, वेदमन्त्रों का उच्चारण भी सही हो परन्तु अग्नि ही ना हो केवल भस्म ही हो तो वे हवि, घृत, वेदमन्त्र भी व्यर्थ होंगे फल भी नही मिलेगा, केवल ऐसा प्रदर्शन प्रतारणापूर्व ही होगा। जो पुरोडास है वह शिवमूर्ति के सामान है।

वह यदि पूजा यज्ञ के अभाव में शास्त्रीय सम्मति के अभाव में प्रयुक्त होता है तो अविधिपूर्वक होने के कारण भस्म में आहूति जैसा ही व्यर्थ होगा। शवि-आराधना सफल नही होगी। इसी पुरोडास के आधार पर पूजा की सामग्री उसके साधन पर भी किसी अयोग्य अनुपास्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे भी अशुद्ध होंगे और निष्फल होंगे।

धर्म सर्माट ज्योतिष पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठ के जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज का दोनों पीठों में आद्य शंकराचार्य जी द्वारा सुनिश्चित प्रचारक्षेत्र उत्तरभारत के साथ महाराष्ट्र पर्यंत है यह व्यवस्था पच्चीस 100 वर्षों से लगातार चली आ रही है अतः दोनों पीठों के प्रचारक्षेत्रों सर्वमानी शंकराचार्य तथा धर्माचार्य होने से वहां के निवासी समस्त जनता को शास्त्रविहित उपासनादि का उद्बोधन समय-समय पर करते रहना उनका दायित्व है और इससे उन्हें कोई भी शक्ति रोक नही सकती। उनके द्वारा ज्योतिष्पीठ पंडित घोषित होने के नाते पूज्यपाद शंकराचार्य जी की बातों को रखना हमारा भी कर्तव्य है।

कृपया विचार करें!

एक बात और विचारणीय है इन लोगों ने साईं गायत्री का निर्माण किया है और उसका अपनी पुस्तकों में अनुष्ठान का विधान भी किया है। वह मन्त्र है शिर्डीवासायविद्महे सच्चिदानन्दाय धीमहि तन्नो साईं प्रचोदयात। ऐसा कहने वाल एग्द्ध बताएं इस मन्त्र का दृष्टा ऋषि कौन हैं?



रूकें और सोचें:- क्या शिवलिंग से शिव दर्शन देंगे या साईं? क्या शिवलिंग की पूजा हम साइ के लिए कर रहे हैं? या शिव के लिए? सनातन धर्म का यह अपमान कब तक सहेगा हिंन्दुस्तान?

संत वही होता है जो लोगो को भगवान से जोड़े, संत वो होता है जो जनता को भक्तिमार्ग की और ले जाये, संत वो होता है जो समाज मे व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए पहल करे ... इस साईं नाम के मुस्लिम पाखंडी फकीर ने जीवन भर तुम्हारे राम या कृष्ण का नाम तक नहीं लिया, और तुम इस साईं की काल्पनिक महिमा की कहानियो को पढ़के इसे भगवान मान रहे हो ... कितनी भयावह मूर्खता है ये



[illegible]

महान ज्ञानी ऋषि मुनियो के वंशज आज इतने मूर्ख और कलुषित बुद्धि के हो गए है कि उन्हे भगवान और एक साधारण से मुस्लिम फकीर में फर्क नहीं आता?

जब आज तक कभी कोई मुस्लिम तुम्हारे शिवजी की शिवलिंग पर दूध या जल चढ़ाने नहीं आया,कभी तुम्हारे हनुमान जी की मूर्ति पर सिंदूर चढ़ाने

नहीं आया, कभी तुम्हारे विष्णुजी पर तुलसी-जल या असंख्यों मंदिरो में स्थापित मूर्तियो पर पुष्प चढ़ाने नहीं आया तो तुम किस मुंह से सडी हुयी लाशों के ऊपर बनी कब्रों, दरगाहों और मजारों पर चादर चढ़ाने पहुच जाते हो? शरम नहीं आती ... वो तुम्हारे भगवान को गालिया देते है,निंदा करते है, और दिन मे एक दो नहीं पाँच पाँच बार मस्जिद से साफ साफ चिल्लाते है कि एक मात्र ईश्वर अल्लाह है और कोई है ही नहीं ... तो तुम्हें सुनाई नहीं देता क्या ये, या फिर तुम्हारी ऐसी कौन सी इच्छा है जोकि हमारे परम कृपालु, दयालु,भक्त वत्सल भगवान पूरी कर ही नहीं सकते, उसे या तो सड़े हुये मुर्दे की हड्डिया पूरा कर सकती है, या फिर शिर्डी मे जन्मा एक मुस्लिम फकीर साईं

आखिर जाते क्यो हो? जब तुम्हारी प्यास भगवानरूपी, गंगाजल से नहीं बुझ रही, तो दरगाह और साईं रूपी कुए के पानी से कैसे बुझ जाएगी? गंगा जल को छोडकर कीचड़ की और भागने वाले कितने महामूर्ख होते है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन अंधभक्तों को दुनिया भर के तर्क,तथ्य,प्रमाण तक दे दिये, यहा तक कि श्रीकृष्णभगवान द्वारा, गीता माता में इसी विषय पर कहा गया एक श्लोक तक दिखा दिया ... पर इन धूर्तों की बुद्धि, कलयुग के पाप ने इतनी कुंठित, और प्रदूषित कर दी है कि इन्हे समझ ही नहीं आता ...

गीता में श्रीकृष्णभगवान जी ने साफ साफ कहा है कि जो जिसे पूजता है वो उसे ही प्राप्त होता है ... यानि मरे हुये व्यक्तियों को सकाम भाव से पूजने वाला पिशाच योनि को प्राप्त होता है ... ये स्वयं श्री कृष्ण ने कहा, तो भी इन मूर्खों मे इतनी भी बुद्धि नहीं बची कि समझजाये कि साईं को पूजने वाले, मृत्यु पर्यंत पिशाच बन कर ही भटकेंगे ...

तुम चाहे कितना भी साईं साईं चिल्लाओ गला फाड़ फाड़के,चाहे दरगाहों पर जाकर कितनी भी चादर चढालों, तुम भगवान को तो क्या उनकी कृपा का एक अंश भी प्राप्त नहीं कर सकते ...... ये सत्य है ....

साईं ने ऐसा क्या कर दिया था जो कि तुम्हारा गला नहीं दुखता उसकी महिमा गाते गाते? अरे पूरा भारत उस समय अंग्रेज़ो के डंडे खा रहा था, साईं ने बचाया था क्या? अगर वो भगवान था या संत था तो उसने गुलामी की बेड़ियो में जकड़ी भारत माता को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए क्या किया था? उस समय श्रीकृष्ण की प्रिय सर्व देवमई गो माताए काटी जाती थी उनके ऊपर साईं कभी क्यो नहीं बोला? भगवान श्रीकृष्ण थे,जब कंसके सैनिक गोमाताओ को ले जाने लगे तो, मारकर परलोग पाहुँचा दिया था और एक ये साईं था कि हजारो गोमाताए रोज कटती रही ये बचाना तो दूर उनके ऊपर कभी बोला तक नहीं? काहे का भगवान या संत था ये?

क्या इस भूमि की सनातनी संताने इतनी बुद्धिहीन हो गयी है कि जिसकी भी काल्पनिक महिमा के गपोड़े सुनले उसी को भगवान और महान मानकर भेड़ों की तरह उसके पीछे चल देती है? इस मुसलमान से आपका कोई फायदा नहीं है .... श्रद्धा और अंधश्रद्धा में फर्क होता है, श्रद्धालु बनो .... भगवान को चुनो, राम और कृष्ण के बनो .... साईं को पूजकर सिर्फ भूतप्रेत बनकर ही भटकोगे ..... जय श्रीरामकृष्ण .... जय सनातनधर्म

साईं भक्तो के लिए दस प्रश्न – अगर किसी भी साईं भक्त के पास इन दस प्रश्नो का उत्तर है तो में भी साईं का भक्त बनूँगा ... और अगर इनके उत्तर नहीं है या इन्हे पढ़ने के बाद शर्म आए ....तो भगवान कि और बढ़ो....कल्याण होगा

1. साईं को अगर ईश्वर मान बैठे हो अथवा ईश्वर का अवतार मान बैठे हो तो क्यो? आप हिन्दू है तो सनातन संस्कृति के किसी भी धर्मग्रंथ में साईं का नाम तक नहीं है। तो धर्मग्रंथो को झूठा साबित करते हुये किस आधार पर साईं को भगवान मान लिया? और धर्मग्रंथ कहते है कि कलयुग में दो अवतार होते है ....एक भगवान बुद्ध का हो चुका दूसरा कल्कि नाम से अंतिम चरण में होगा.......।
2. अगर साईं को संत मानकर पूजा करते हो तो क्यो? क्या जो सिर्फ अच्छा उपदेश दे दे या कुछ चमत्कार दिखा दे वो संत हो जाता है? साईं महाराज कभी गोहत्या पर बोले?, साईं महाराज ने उस समय उपस्थित कौन सी सामाजिक बुराई को खत्म किया या करने का प्रयास किया? ये तो संत का सबसे बड़ा कर्तव्य होता है। और फिर संत ही पूजने है तो कमी थी क्या? फकीर ही मिला?
3. अगर सिर्फ दूसरों से सुनकर साईं के भक्त बन गए हो तो क्यो? क्या अपने धर्मग्रंथो पर या अपने भगवान पर विश्वास नहीं रहा?
4. अगर मनोकामना पूर्ति के लिए साईं के भक्त बन गए हो तो तुम्हारी कौन सी ऐसी मनोकामना है जो कि भगत्वत सलभगवान शिवजी, या श्री विष्णुजी, या कृष्णजी, या रामजी पूरी नहीं कर सकते सिर्फ साईं ही कर सकता है? तुम्हारी ऐसी कौन सी मनोकामना है जो कि वैष्णोदेवी, या हरिद्वार या वृन्दावन, या काशी या बालाजी में शीश झुकाने से पूर्ण नहीं होगी ..वो सिर्फ शिर्डी जाकर माथा टेकने से ही पूरी होगी।
5. तुम्हारे पूर्वज सुबह और शाम .....श्रीराम,या कृष्ण या शिव शिव ही बोलते थे..... फिर तुम क्यो सिर्फ प्रचार को सुनकर,बुद्धि को भ्रम में डालकर साईं साईं चिल्लाने लगे हो?

6. अगर भगवान कि पूजाकरनी है तो इतने प्यारे, दयालु, कृपालु भगवान है न तुम्हारे पास फिर साईं क्यो? अगर संतो की पुजा करनी है तो साईं से महान, ऋषि मुनि है न ..... साईं ही क्यो?
7. मुस्लिम अपने धर्म के पक्के होते है ......अल्लाह के अलावा किसी और की और मुंह भी नहीं करते .....जब कोई अपना बाप नहीं बदल सकता ....अथवा अपने बाप कि जगह पर किसी और को नहीं देख सकता तो तुम साईं को अपने भगवान कि जगह पर देखकर क्यो दुखी या क्रोधित नहीं होते?
8. अगर सनातन धर्मी हो तो सनातन धर्म में तो कही साईं है ही नहीं ..... तो आप खुद को सनातन धर्मी कहलाना पसंद करोगे या धर्मनिरपेक्षी साईंभक्त?
9 आप खुद को राम या कृष्ण या शिव भक्त कहलाने में कम गौरव महसूस करते है क्या जो साईं भक्त होने का बिल्ला टाँगे फिरते हो .... क्या राम और कृष्ण से प्रेम का क्षय हो गया है ....?
10. ॐ साईं राम ....ॐ हमेशा मंत्रो से पहले ही लगाया जाता है अथवा ईश्वर के नाम से पहले .....साईं के नाम के पहले ॐ लगाने का अधिकार कहा से पाया? जय साईं राम .... श्री मे शक्तिमाता निहित है ....श्री शक्ति रूपेण शब्द है .... जो कि अक्सर भगवान जी के नाम के साथ संयुक्त किया जाता है .... तो जय श्रीराम में से .....श्री तत्व को हटाकर ......साईं लिख देने में तुम्हें गौरव महसूस होना चाहिए या शर्मआनी चाहिये?

साईं और पैसा

उपरोक्त शीर्षक के द्वारा मैंने साईं बाबा के जीवन में घटी घटनाओं के आधार पर उनके जीवन के प्रत्येक बिंदु पर उनके द्वारा किया गए पाखंड एवं उनके द्वारा किये गए अधार्मिक व अनैतिक कार्यो को उनके भक्तो द्वारा ढंकने या परिवर्तन करने की कुचेष्टा करने का भंडाफोड़ किया है, साईं शब्द ही अपने आप में एक बहुत बड़ा पाखंड है, साई एवं साईं दोनों भन्नि भन्नि शब्द है जिसमे एक में अंत में इ पर बिंदी आती है जबकि की दूसरे में बिंदी नहीं आती है, दोनों ही शब्दों में केवल एक मात्र इस भिन्नता के कारण सभी लोगो में भ्रम की स्थिति बनी जिसका लाभ स्वयं साईं ने भी उठाया और साईं की मृत्यु के पश्चात उन सभी ने उठाया जो साईं के द्वारा सनातन धर्म की जड़ों को खोखला करना चाहते थे, वर्ना जिस साईं की मृत्यु को केवल 90 वर्ष से अधिक समय हुए है वह साईं अपने जीवन के अंतिम समय से लेकर मृत्यु के बाद 70 वर्षो तक अनजान रहा और पूरे जीवन भरा उसे शिर्डी के निवासियों ने हेय दृष्टि से देखा था, परन्तु 1990 के बाद उसकी पूजा करने में अचानक से बढ़ोतरी होना और साईं बाबा का जबरदस्त भी किसी षड्यंत्र की ओर इशारा करता है।

साईं बाबा के जीवन ही अध्ययन करने पर उनका पूरा जीवन चरित्र ही पाखंड से भरा दिखता है, लगभग 16 वर्ष की आयु में बाबा शिर्डी में आये, तब उनकी सर्वप्रथम भेंट धुप ग्राम के धनी मुस्लिम चाँद पाटिल से हुई जो कि औरंगाबाद जा रहे थे, जिसका वर्णन अध्याय 5 साईं सत्चरित्र में मिलता है इस भेंट के अनुसार साईं बाबा चाँद पाटिल को मुस्लिम वेशभूषा में मिले जब वे चिलम पी रहे थे इस भेंट में उन्होंने चाँद पाटिल को भी चिलम पिलाई थी, चूँकि चिलम पीने वाले और साथ ही चिलम पिलाने वाले ऐसे तथाकथित भगवान के विषय में साईं के भक्तो का क्या सोचना है ये वो ही जाने, परन्तु इससे शिक्षित सभ्य समाज को केवल चिलम पीने की ही प्रेरणा मिल सकती है, ये तथ्य भी विचार करने वाला है साईं बाबा को सर्वप्रथम महालस्पति जी ने आओ साईं कह कर संबोधित किया था जिसका मराठी में अर्थ होता है स्वामी, परन्तु ओ पी गोयल की पुस्तक के पृष्ठ 17 के अनुसार इतने आदर सत्कार के बाद भी महालस्पती ने उन्हें खंडोबा मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया क्यूंकि

उनके अनुसार साईं बाबा देखने में मुसलमान फकीर लगते थे, इन दोनों ही बातो में काफी विरोधाभास और विसंगति दिखाई देती है

साईं सत्चरित्र की प्रस्तावना में लेखक के अनुसार साईं बाबा का जन्म भरद्वाज गौत्र में हुआ था, जबकि उसी पुस्तक के अध्याय 3 में शीर्षक श्री साईं बाबा का शिर्डी में प्रथम आगमन में हेमाडपंत लिखते है की साईं बाबा के माता पिता और जन्मस्थान का विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है उसके पश्चात भी लेखक ने उन्हें भरद्वाज गौत्र में जन्मा क्यों बताया, ये विवाद का विषय है, केवल यही नहीं, शिर्डी साईं सस्थान तो प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में साईं जन्मोत्सव मनाता है जो काफी विरोधाभासी है।

उपरोक्त दोनों ही विषयों में साईं के भक्तो का ध्यान न देना काफी आश्चर्य करने वाली बात है, साईं सत्चरित्र में साईं बाबा के पाखंडो की एक लम्बी श्रृंखला है इनमे से एक है साईं बाबा के पास आने वाली अकूत धन सम्पदा और उसका हिसाब न होना, चूँकि इसमें एक बात सबसे अधिक आशचर्य की ये है की धन के न आने के स्त्रोत का पता था और न जाने के स्त्रोत का।

साईं बाबा अपने भक्तो से हर भेंट पर दान दक्षिणा लेते थे, पर वो धन कहाँ जाता था इसके कोई प्रमाण नहीं था, साईं सत्चरित्र के लगभग हर तीसरे अध्याय में साईं बाबा द्वारा अपने भक्तो से भारी भरकम रकम लेने की बात लिखी गयी है इसका एक उदाहरण अध्याय 11 से शीर्षक हाजी सिद्धीक फाल्के लेते है जिसमे साईं बाबा किसी छोटी मोटी रकम के विषय में नहीं, अपितु लाखो रूपयों के विषय में बात करते है, जबकि उस समय का एक रूपया आज के सैंकड़ो रूपयों के बराबर है इस हिसाब से साईं बाबा करोड़ों रूपयों का लेन देन उस समय कर लेते थे ऐसे में उन्हें गरीब फकीर या संत कहना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है।

साईं बाबा किस प्रकार से अपने भक्तो से हजारो सैंकड़ो रूपये एंठते थे इसका एक और उदाहरण साईं सत्चरित्र के अध्याय 14 शीर्षक एक घटना से आपके समक्ष रखते है परन्तु इतने वर्षो तक दक्षिणा में हजारो रूपया मिलने के बाद भी साईं बाबा की मृत्यु के बाद वो धन कहाँ गया ये रहस्य है?

साईं के नाम पर सनातन पूजा पर हमला

साईं अमृतवाणी

नमन

जय जय साईं परमेश्वरा, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं पुरूषाय नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं शंकरा नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं रामाय नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं माधवाय नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं हनुमते नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं अकाल पुरूषाय नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।
जय जय साईं नाथाय नमः, जय जय साईं परमेश्वरा।

आरती

यवनस्वरूपी एक्या दर्शन त्वां दिधले। संशय नीरसुनियांतद्द्वेता घाघविले।
गोपीचंदा मंदा त्वांजी उद्धरिले। मोमिन वंशी जन्मुनि लोकां तारियले।।

ॐ श्री साईं नाथाय नमः
ॐ श्री साईं लक्ष्मी नारायणाय नमः
ॐ श्री साईं कृष्ण राम शवि मारूत्यादिरूपाय नमः
ॐ श्री साईं शेषशायिने नमः
ॐ श्री साईं गोदावरीतटशीलधीवासिने नमः
ॐ श्री साईं भूतवासाय नमः
ॐ श्री साईं कालाय नमः
ॐ श्री साईं मृत्युंजयाय नमः
ॐ श्री साईं ऋद्धि-सिद्धिदाय नमः
ॐ श्री साईं परब्रह्मणे नमः
ॐ श्री साईं परमात्मने नमः
ॐ श्री साईं तीर्थे नमः नमः पेज नम्बर ६३

वह द्वारकामाई में ही काशी और काबा का स्नान करते हैं।

जिस प्रकार दूध रूपी अमृत में नीबू डालकर उसको फाड़ दिया जाता है ठीक उसी प्रकार हमारी वर्षों से चली आ रही सनातन पूजा पद्दति में साईं नाम डाल उसे दूषित और भृष्ट कर दिया है।

साईं, साईं राम और अल्लाह मालिक

साईं एक टूटी हुयी मस्जिद में रहा करते थे और सर पर कफनी बंधा करते थे. सदा "अल्लाहमालिक" एवं "सब का मालिक एक" पुकारा करते थे ये दोनों ही शब्द मुस्लिम धर्म से संभंधित हैं. साईं का जीवन चरित्र उनके एक भक्त हेमापंदित ने लिखा है।

साईं बाबा की मार्केटिंग करने वालो ने या उनके एजेंटों ने या सीधे शब्दो मे कहे तो उनके दलालो ने काफी कुछ लिख रखा है। साईंबाबा की चमत्कारकि काल्पनिक कहानियो वगपोड़ों को लेकर बड़ी बड़ी किताबे रच डाली है। स्तुति, मंत्र, चालीसा, आरती, भजन, व्रतकथा सब कुछ बना डाला... साईं कोअवतार बनाकर, भगवान बनाकर, और कही कही भगवान से भी बड़ा बना डाला है... किसी ने आज तक ये बताने का श्रम नहीं किया कि साईं किस आधार पर भगवान या भगवान का अवतार है? जब भगवान का अवतार है तो हिन्दू धर्म ग्रंथो के आधार पर ही तो तय हो गा न कि अवतार है या नहीं? भगवान श्रीकृष्णजीद्वारा कही गयी गीता जी में श्रीकृष्ण ने अवतार लेने के कारण और कर्मो का वर्णन कर तेहु ये लिखा है कि परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम। धर्म संस्थापना र्थाय सम्भवामि यूगे यूगे।।

अर्थात, साधू पुरूषो के उद्धार के लिए, पाप कर्म करने वालो का विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मे युग-युग मे प्रकट हुआ करता हू।

श्री कृष्णजी द्वारा कहे गए इस श्लोक के आधार पर देखते है कि साईं कितने पानी में है-

1. परित्राणायसाधूनां (साधु पुरूषो के उद्धार के लिए) - यदि ये कटोरे वाला साईं भगवान का अवतार था तो इसने कौन से सज्जनों का उद्धार किया था? जब कि इसके पूरे जीवन काल मे ये शिर्डी नाम के पचास-सौ घरो की बाड़ी (गाँव) से बाहर भी न निकला था ..और इसके मरने के बाद उस गाँव के लगभग आधे लोग भी बेचारे रोगादि प्रकोपों से पीड़ित हो के मरे थे...यानि विश्वभर के सज्जन तो क्या अपने गाँव के ही सज्जनों का उद्धार नहीं कर पाया था....उस समय बिटिश शाशन था, बेचारे बेबस

भारतीय अंग्रेज़ो के जूते, कोड़े, डंडे, लाते खाते गए और साईं महाराज शिर्डी मे बैठकर छोटे-मोटे जादू दिखाते रहे, किसी का दुख दूर नहीं बल्कि खुद का भी नहीं कर पाये आधे से ज्यादा जीवन रोग ग्रस्त होकर व्यतीत किया और अंत मे भी बीमारी से ही मरे।

2. विनाशायच दुष्कृताम (दुष्टो के विनाश के लिए) - साईंबाबा के समय मे दुष्ट कर्म करने वाले अंग्रेज़ थे जो भारतीयो का शोषण करते थे, जूतियो के नीचे पीसते थे, दूसरे गोहत्यारे थे, तीसरे जो किसी न किसी तरह पाप किया करते थे, साईंबाबा ने न तो किसी अंग्रेज़ के कंकड़ी-या पत्थर भी मारा, नही किसी गोहत्यारे के चुटकी भी काटी, नही किसी भी पाप करने वाले को डांटा-फटकारा। अरे बाबा तो चमत्कारी थे न पर अफसोस इनके चमत्कारो से एक भी दुष्ट अंग्रेज़ को दस्त न लगे, किसी भी पापी का पेट खराब न हुआ.... यानि दुष्टो का विनाश तो दूर की बात दुष्टो के आस-पास भी न फटके।

3. धर्म संस्थापनार्थाय (धर्म की स्थापना के लिए) - जब साईं ने न तो सज्जनों का उद्धार ही किया, और नही दुष्टो को दंड ही दिया तो धर्म की स्थापना का तो सवाल ही पैदा नहीं होता..क्योंकि सज्जनों के उद्धार, और दुष्टो के संहार के बिना धर्म-स्थापना नहीं हुआ करती। ये आदमी मात्र एक छोटे से गाँव मे ही जादू-टोने दिखाता रहा पूरे जीवन भर...मस्जिद के खण्डहर मे जाने कौन से गड़े मुर्दे को पूजता रहा...। मतलब इसने भीख मांगने, बाजीगरी दिखाने, निठल्ले बैठकर हिन्दुओ को इस्लाम की ओर ले जाने के अलावा उन्हे मूर्ख बनाने के अलावा कोई काम नहीं किया....कोई भी धार्मिक, राजनैतिक या सामाजिक उपलब्धि नहीं..

जब भगवान अवतार लेते है तो सम्पूर्ण पृथ्वी उनके यश से उनकी गाथाओ से अलंकृत हो जाती है... उनके जीवन काल मे ही उनका यश शिखर पर होता है.... और इस साईं को इसके जीवन काल मे शिर्डी और आसपास के इलाके के अलावा और कोई जानता ही नहीं था...या यू कहे लगभग सौ दौसौ सालो तक इसे सिर्फ शिर्डी क्षेत्र के ही लोग जानते थे.... आज कल की जो नयी नस्ल साईं राम साईं राम करती रहती है वो अपने माता-पिता से पुछे कि आज से पंद्रह-बीस वर्ष पहले तक उन्होने साईं का नाम भी सुना था क्या? साईं कोई कीट था पतंग था या कोई जन्तु ... किसी ने भी नहीं सुना था ....भगवान श्री कृष्ण के वचनो के आधार पर ये सिद्ध हुआ कि साईं कोई भगवान या अवतार नहीं था ...इसे पढ़कर भी जो साईं को भगवान या अवतार माने गाया ऐसा मानकर साईं की पूजा करेगा, वो सीधे सीधे भगवान श्रीकृष्ण का निरादर, और श्रीकृष्ण की वाणी का अपमान कर रहा है ....श्री कृष्ण का निरादर एवं उनकी

वाणी के अपमान का मतलब है सीधे सीधे ईश द्रोह....तो साईं भक्तो निर्णय कर लो तुम्हें श्रीकृष्ण का आश्रय चाहिए या साईं के चोले मे घुसकर अपना पतन की ओर बढ़ोगे...........

जिसमे थोड़ी सी भी अक्ल होगी उसे समझ मे आएगा कि ये लेख धार्मिक तौर पर स्पष्ट रूप से सिद्ध कर रहा है कि साई को ई भगवान याअवतार नहीं था... अगले लेख मे सिद्ध करेंगे कि साई कोई संत या साधु या महा पुरूष भी नहीं था......

इस चित्र को देखकर हिन्दुओ को शर्म से मर जाना चाहिए,इसमे साईं को कृष्ण, राम, शिव, विष्णु, दुर्गा सव वनाया गया है, और तो और राधाजी का प्रेमी भी साईं को बना दिया है... क्या इस मुस्लिम फकीर की अपनी अलग से कोई औकात है या नहीं. जितना अपमान खुद हिन्दू अपने भगवान का करते है या किसी को करता देखकर आनंद लेते है, उतना और कोई नहीं.... फेंक दो इस साईं को अपने घरो से....हमारे पास गंगा जल है हमे किसी कीचड़ की जरूरत नहीं



साईं की पूजा शास्त्रीय या फैशन

सनातन धर्मियों में आज कल एक होड़ सी लगी है जो कि चिंता का विषय बनती जा रही है। कुछ सनातन धर्मी भी इसी होड़ में शामिल होते जा रहे हैं। उनको यह दिखाई नही देता कि हमारे विरोधी हमारे धार्मिक सिद्धांतों को विनाश करने में प्रयत्नशील हैं। यह होड़ है, सनातन धर्मियों के मन्दिरों में "साईं बाबा" की "मूर्ति स्थापना" एवं विधिवत पूजा करना। देखा जाए तो हम सनातन धर्मी केवल दश अवतारों में विश्वास रखते हैं और पंच देव उपासना के सिद्धांत को मानते हैं। साईं बाबा न तो दश अवतारों में आते हैं और न ही पंच देवों में उनका शुमार है। सनातन धर्मियों द्वारा साईं बाबा की मूर्ति स्थापना सनातन धर्म के सिद्धांतो के विरूद्ध है। अपने धर्म को बचाने हेतु हमे अपने विरोधियों का डट कर मुकाबला करना होगा। यह कैसी विडम्बना है कि सनातन धर्मी स्वयं ही अपने सिधान्तों को तिलाजली दे रहे हैं। इस भेड़-चाल को रोकना होगा और साईं पूजा के फैशन को रोकना होगा।

साईं हिन्दू है और भगवान भी है, पर। किसी ने आज तक साईं के अवतारी या उसके चमत्कारी होने का प्रमाण नहीं दिया,कुछ लोगो ने एक महिना पहले मेरे गुरूवार तक कुछ बुरा होने की बात की थी और साईं कटु वेके प्रकोप का डर दिखाया था जो पूरी तरह गलत और झूठ साबित हुआ साईं की पूजा सनातन धर्म के अनुसार के विपरीत ही नहीं है बल्कि ये सनातन धर्म का खुले तौर पर अपमान और सनातनी परम्पराओं का सरे आम उल्लंघन करने जैसा है, सनातन धर्म केवल मनुष्यों का धर्म नहीं बल्कि सनातनतो प्राणी मन्त्रों के कल्याण और उनके पालन पोषण से लेकर उनके संरक्षण तक की एक सत्य अवधारणा है जो लाखो सालो से चल रही है

सनातनी परंपरा में केवल ईश्वर, अवतार, या देवता की पूजा ही मान्य है उसके अलावा भी एक तरह से पाखंड ही है,

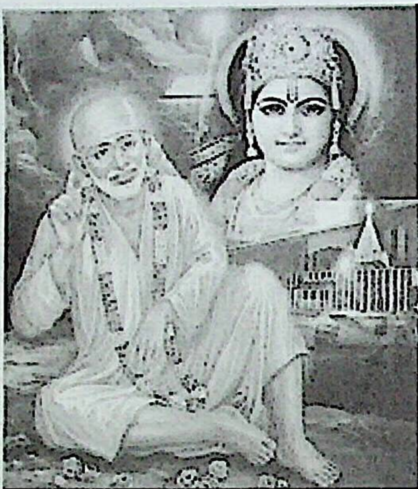
मंदिर में मूर्ती स्थापना और इष्टदेवता की प्राण प्रतिष्ठा इन सबका एक विधान है पर साईं की पूजा करने वाले और उसके मंदिर बनाने वालो ने भी मान्यताओं

और परम्पराओं को ताक पर रखकर सनातन धर्म को एक अक्षुण हानि पहुंचाई है और आगे भी पहुंचा रहे है कैसे ये पढ़े, इष्ट देव जो कुल देवता या कुल देवी होती है, साईं इन मे से दोनों ही नहीं है, क्युकी हर परिवार किसी न किसी कुल से जुड़ा हुआ है और हर कुल में कोई न कोई इष्ट प्रधान हुआ है, जैसे की कश्यप ऋषि के वंशज नाम के साथ कश्यप लगाते है और अपने मान्य कुलदेवता को पूजते है इसी प्रकार से सभी जातियों में ये परम्परा हजारो लाखो सालो से चली आ रही है, क्या साईं कुलो के जनम के समय से तो नहीं है क्युकी इसे तो मरे हुए भी १०० साल नहीं हुए है, तो ऐसे में इसका इष्टदेव होना संभव नहीं और इसना तेये मंदिर के गर्भगृह में नहीं बैठ सकते,अब आगे है अवतार,भारत में अवतार परम्परा भगवान विष्णु के कुर्म अवतार के बाद से प्रारम्भ हुई है, उसके बाद अबतक नौ अवतार हो चुके है और दस वे अवतार है भगवान कल्कि जो कलयुग के आखिरी पहर में जनम लेकर दुष्टों का वध करेंगे, साईं का इन में से किसी अवतार में जिक्र नहीं है, मानने वाले वेदों और पुरानो को झुठ लाकर उनका अपमान शौक से कर सकते है, विष्णु के नौ अवतारों में से सिर्फ २-३ ही अवतार हि पूज्य है जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण, कही कही भगवान परशुराम की पूजा होती है, बाकी किसी भी अवतार की पूजा कही नहीं होती, क्या ये है हमारी आस्था, की अपने भगवानो को जीवन भरन पूजे एक मुसलमान को गले लगाये फिरते है,

अब अगले है देवता, साईं न वायुदेव है, न अग्निदेव, न पवनदे, प्राचीन काल में इन्द्र की पूजा होती थी और यज्ञ का एक भाग इन्द्र को मिलता था, अब इन्द्र पूजा भी बंद हो गयी है, सिर्फ दक्षिण भारत या उड़ीसा के कुछ भागो में इन्द्र पूजा होती है **किसी भी देवता में साईं का नाम नहीं आता तो इस कारण साईं को गर्भगृह में नहीं बिठाया जा सकता।**

अब बात आती है सनातन धर्म की मान्यताओं की, **कुछ मुर्ख पाखंडियो ने धर्म को व्यापार बनाकर रख दिया है, साईं को गुरू बनाकर उसकी पूजा करने में लगे हुए है,** अब इसी पर एक प्रसंग सुनिए आदि गुरू शंकराचार्य के सामने कपाली बहमणों ने शास्त्रार्थ की चुनोती रखी और आदि गुरू ने उन्हें हरा दिया, हार मानने के बाद कपाली ब्म्मणों ने आदि गुरूशंकराचार्य को गुरू मानकर उनका मंदिर बनाकर उनकी प्राण प्रतिष्ठा करके पूजा करने की बात कही।

ये सुनकर गुरूजी ने कहा की गुरू कितना भी महान हो वो भगवान हीं हो सकता और ये तर्क सही नहीं तो ये सोचिये की आप मेरी प्राण प्रतिष्ठा करके मुझे मंदिर में विराजित कर देंगे, इस कारण मेरी आत्मा यही रूक जाएगी और परमात्मा से उस आत्मा का मिलन नहीं हो पायेगा, जब मिलन ही नहीं हो पायेगा तो मैं आपको कैसे परमात्मा से मिलन करवा सकूँगा और जब परमात्मा से आपका मिलन नहीं करवा सका तो मैं गुरू कैसे हुआ..ये सुनकर कपाली बहमण गुरूवर की जयजय कार कर उठे और उनका मंदिर बनाने का विचारत्याग दिया,अब आप ही सोचिये, अगर आप साईं को गुरू भी मानते है तो क्या ऐसा व्यक्ति गुरू हो सकता है जिसकी आत्माय ही रह गयी हो, क्युकी भगवान तो ये है नहीं, जो प्रमाणित हो चुका है, इसलिए पाखंड से बाहर निकले और सत्यंधर्म को पहचानें जो कुछ साईं दे सकता है क्या वो श्रीराम नहीं दे सकते तो साईं को राम से क्यों जोड़ रहे है,



केवल शास्त्र सम्मत पूजा

शास्त्र सम्मत पूजा पर गीता के 17वें अध्याय के 5वें और 6ठे श्लोक में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं:

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः।।
कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्।।

भावार्थ : जो मनुष्य शास्त्र विधि से रहित केवल मनःकल्पित घोर तप को तपते हैं तथा दम्भ और अहंकार से युक्त एवं कामना, आसक्ति और बल के अभिमान से भी युक्त हैं। (5) भावार्थ : जो शरीर रूप से स्थित भूत समुदाय को और अन्तःकरण में स्थित मुझ परमात्मा को भी कृश करने वाले हैं (शास्त्र से विरूद्ध

उपवासादि घोर आचरणों द्वारा शरीर को सुखाना एवं भगवान के अंशस्वरूप जीवात्मा को क्लेश देना, भूत समुदाय को और अन्तर्यामी परमात्मा को "कृश करना" है।), उन अज्ञानियों को तू आसुर स्वभाव वाले जान। (6)

किसी ने यह सब रचा है और क्यों रचा गया है और कब रचा गया है, यह कोई नहीं जानता, लेकिन शिर्डी से लेकर पूरे भारत के उन सभी मन्दिरों में जहां साईं की मूर्ति लगी है, इस का पाठ हो रहा है। क्यों? जब साईं जीवन भर मस्जिद में रहे तो मुस्लिम अल-फातिहा का पाठ इसलिये नही हो रहा कि हिन्दू साईं के पास भी नही भटकेंगे। साईं ने कभी **"सब का मालिक एक"** नही कहा, पूरी श्री साईं सत्चरित्र में वह हर अध्याय में **"अल्लाह मालिक"** कहते रहे लेकिन हिन्दू जनमानस को भ्रमित करने के लिए उनके उद्घोष को **"सबका मालिक एक"** क्यों किया गया? उन्होंने कभी ॐ का उच्चारण नही किया परन्तु तब भी उनके नाम के ॐ किसने और क्यों लगाया?

ऐसे प्रश्नों का उत्तर आवश्यक है और ये पूछे जायेंगे। क्या साईं पूजा शास्त्र सम्मत है?

लगभग प्रत्येक FM चैनल पर प्रथम स्तुरी-गान साईं का होने लगा। सर्वत्र साईं साईं और बाकि सब पीछे रह गये। पर्दे के आगे और पर्दे के पीछे इस सब का नियोजन कर रहा है?

साईं बाबा एक फर्जी डाक्टर

हमारे जीवन काल में मनुष्य के तीन प्रमुख शत्रु है

1. रोग 2. ऋण 3. रिपु

समय समय पर गाहे-बगाहे रोग किसी न किसी रूप में मनुष्य के साथ उसकी छाया कि भाँती साथ साथ रहता है, इसी हेतु शास्त्रों में कहा गया है कि **पहला सुख निरोगी काया** 18वीं व 19वीं शताब्दी में भारत जैसे पिछड़े देश में समय समय पर महामरियां फैला करती थीं, जिस कारणवश लाखों की संख्या में लोग काल का ग्रास बन जाते थे। और किसी भी प्ररकार का साध्य-असाध्य रोग होने पर मुख्यत: गाँव-देहात के लोग नजदीकी वैध्य पर ही निर्भर रहते थे। इसी कारण उस समय मनुष्य की औसत आयु 50 वर्ष से भी कम थी।

चिकिस्तसा के कोई दूसरे साधन, अस्पताल, डिस्पेंसरी आदि केवल महानगरों में ही उपलब्ध थे, परन्तु गाँव-देहात जहां दो दिन की रोटी का जुगाड़ करना असंभव होता था, ऐसे में गरीब और अशिक्षित आम आदमी को साईं बाबा द्ववारा बहकाना कि तुम्हें दवा लेने कि कोई आवश्यकता नही है क्यूंकि तुम्हारा "अल्लाह मालिक है" इस हेतु तुम बिना दवा के भी ठीक हो जाओगे, यह कहीं न कहीं कारण बना होगा बहुत से निर्दोर्ष लोगों की मृत्यु का, जिनका साईं बाबा पर अंध विश्वास जमा हुआ था।

हमारे शात्रों में तथा वेद में किसी भी तरह के कष्ट को दूर करने हेतु पांच उपाय बताये गये हैं,

1. मन्त्र, 2. रत्न, 3. दान 4. औषधि, 5. स्नान

परन्तु औषधि क्योंकि आयुर्वेद का हिस्सा है, और आयुर्वेद वेद का हिस्सा है इस हेतु हमारे ऋषियों, मनीषियों ने औषधि का तथा दवाओं का महत्व समझा और रोग होने की अवस्था में दवा के प्रति लोगों की जागरूकता बढाई परन्तु इस पाखंडी तथा ढोंगी साईं बाबा ने लोगों को दवा लेने से मना किया और स्वयं समाज में अंध-विश्वास की पराकाष्ठा के रूप में चमत्कारों को जन्म दिया, और

स्वयं ने Physician, Surgeon की भांति लोगों के जीवन से न ही खिलवाड़ किया अपितु समाज में अंध-वशिवास बढ़ा कर अन्धकार कि और धकेल दिया।

यदि आज साई बाबा जीवित होता तो उसके ऊपर अंध-श्रद्धा निर्मूलन कानून में अपराधिक षडयंत्रों के तहत न्यायिक अभियोग भी चलते और वह सजा भी पाता।

साई बाबा के द्वारा फैलाए गये पाखंड व लोगों के जीवन से किये गये खिलवाड़ का एक नमूना सुरेश चन्द्र पांडा द्वारा लिखित पुस्तक **SHIRDI SAI BABA – The Perfect Master** के अध्याय 7 में भरपूर रूप से देखने को मिलता है, कि साई बाबा किस प्रकार लोगों को रोगी होने के बाद भी दवाएं लेने से रोकता था, और कहता था कि तुम्हें दवाई की क्या आवश्यकता, **"तुम्हारा अल्लाह मालिक है"**, जैसा उसके शिष्य हंसराज, जो कि दमे का मरीज था, और जब उसकी पत्नी कासीबाई उसे दवा देना चाहती थी तो साई बाबा मना करता था कि इसे दवा की कोई आवश्यकता नही है **"अल्लाह मालिक है"**।

आज तक विश्व में कोई ऐसा Surgeon नहीं पैदा हुआ जो आँखों को नाखूनी से बाहर निकाल ले और उसको धोकर वापसि पूर्ववत फिट कर दे और लोगों की आँखों की रौशनी वापिस आ जाये और लोगों की आँखों से सम्बन्धित बीमारियाँ दूर हो जाएँ, चश्मे भी उतर जाएँ।

अपनी नाभि में से शरीर की समस्त अंतड़ियां बाहर निकाल कर उसको 6 भागों में धोकर सुखा दे और उसे वापसि फिर कर ले। यह आंखें निकाल कर, धोकर फिट करना तथा अंतड़ियां निकाल कर साफ कर कर, सुखा कर फिट करना आदि सब घटनाएं उनके लिए ऐसी थीं जैसे कि एक फ्यूज बल्ब को निकाल कर साफ कर दोबारा फिट कर देना।

साई बाबा के द्वारा रचे गये अन्य पाखंड इस प्ररकार हैं: साई बाबा दमे और अस्थमा का इलाज करते थे Magic Remedies से किया करते थे, जबकि वह स्वयं दमे और अस्थमा के रोगी थे, और दमे के कारण ही उनकी मृत्यु भी हुई।

सांपो के काटने का इलाज भी करते थे।

सेप्टिक तथा चर्म-रोग का इलाज करते थे।

आँखों की समस्त बीमारियों का, पेट की समस्त बीमारियों का एवं अन्य कई प्रकार की बीमारियों के इलाज का दावा कर के उन्होंने कई लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया एवं समाज में अंध-विश्वास की पराकाष्ठा का परचम लहराया।

साईं के चमत्कार या हाथ की सफाई?

एक फिल्म आई थी अमर अकबर अन्थोनी, बहुत ही बढ़िया थी, उसमे एक गाना था जिसके बाद एक पाखंडी बहुत प्रसिद्ध हो गया था, फिल्म में गाना चलता है, गाना चलते हुए एक वृद्ध महिला अपने प्राण बचने के लिए भागती है और भागते भागते एक मंदिर में पहुच जाती है, जहा एक मुसलमान साईं की भक्ति करता है, वैसे एक बात सोचने लायक है, ज़िन्दगी भर भगवान राम और कृष्ण को पानी पी पीकर गाली देने वाले मुसलमान आखिर साईं राम कैसे बोल लेते है, जो हर मूर्ति पूजा करने वाले को मार डालने की बात को अल्लाह का हुकम कहते है वो ऐसे फकीर को क्यों मानते है, समझदार समझ गया है और बेवकूफ यही कहेगा की हिन्दू मुसलमान को मत लड़ाओ, अब ऐसे लोगो को फिर इतिहास बताकर मैं अपना समय ख़राब करूँगा, पर ऐसा नहीं होगा क्युकी की ये पुस्तक साईं के चमत्कारों का भंडाफोड़ने और खुद को हिन्दू और साईं भक्त साथ कहने वालो का असली सेकुलर चेहरा दिखने के लिए है,

तो मित्रो वो वृद्ध महिला जो अंधी होती है, उसकी आँखों में एक ज्योति साईं की आँखों से निकलकर समां जाती है और उसे दिखना शुरू हो जाता है, ऐसे बहुत से चमत्कार है जिसे साईं भक्त देखकर चकित हो जाता है और अनाया सही साईं को अपना भगवान मान लेता है तो पहला भांडा फूटता है साईं के धारावाहिक में एक सीन आता है की कुछ लोग एक गड्ढा खोदते है और खोदते समय उस मे से चार दिए निकलते है, लोग उसे देखकर साईं का जयकारा लगाते है और मन ही मन साईं की स्तुति करने लगते है, ऐसा ही एक चमत्कार है साईं के द्वारा दिवाली के दिन पानी से दिए जलना, मैंने तो आज तक माता ज्वालाजी के यहाँ ही पानी में जोत देखि है, जो ५०० सालो से वही विराजित है तो साईं भक्ति करने वाले अंधभक्त बताये की कहा गये वो दिए जो साईं ने पानी से जलाये थे, पानी ख़तम हो गया था या सोडियम, जी हाँ ये चमत्कार तो हमने भी किये थे दसवी क्लास में साइंस के प्रक्टिकल में, तो क्या में भी भगवान हो गया अब आगे चलते है साईं की भभूती पर, बहुत से लोग कहते है की साईं की भभूती से लोग ठीक होते है, तो मित्रो ऐसी एक भभूती तो सत्य साईं भी निकलता था, उसे भी लोग भगवान मानते थे पर भंडा फूटने के बाद उसने ये चमत्कार छोड़ दिया ऐसा ही एक चमत्कार है गरम खाने के

बर्तन में हाथ डालदेना, तो अन्धो अगर साईं ने कोई लेप किया हो तो क्या ऐसे में उसके हाथ जले होंगे मैं दावे से कह सकता हुँ की साईं के समय में यदि फोटो कैमरा के साथ विडिओ कैमरा भी आ जाता तो आज ये पाखंड दिखने वाले के इतने भक्त न होते, और नही साईं के नाम पर पैसा कमाने के लिए धर्म के ठेकेदार धर्म को हानि न पहुचाते यही नहीं बहुत से भक्त कहते है की साईं की पूजा करके ये मिला वो मिला, कृपा हो गयी सुख मिल गया, तो कृपा तो हमारे निर्मल बाबा भी बाँट रहे है, उनको क्यों बेकार में बदनाम कर रहे है, वो भी तो कमाना चाहते है, उसके पेट पर क्यों लात मारी है इसका ये मतलब नहीं की मैं निर्मल बाबा का भक्त हुँ मैं हर उस पाखंड के खिलाफ हुँ जिसके कारण आज सनातन धर्म की दुर्गति हो रही है साईं के मंदिरों के नाम पर हजारो करोड़ो भक्तो को बेवकूफ बनाकर उन्हें लूटा जा रहा है, जिसे देखो साईं साईं, ये देश राम का है कृष्ण का है, इन पाखंडी बाबाओ का देश नहीं है, वो सिर्फ इस देश को लूटना चाहते है,

कृपा का धंधा बहुत जोरो पर है, इसलिए सभी मित्रो से विनती है की ऐसे पाखंडियो को समझे, और किसी के कहने पर भगवान बनाये, चलते फिरते भगवान बनाने की इस प्रथा को बंद करे, सती प्रथा ख़तम होगयी, पर्दा प्रथा भी दम तोड़ रही है, दुनिया चाँद पर पहुच गयी है और आप ऐसे पाखंडियो को भगवान कहकर अपने कुल और नाम को मिट्टी में मिला रहे है, समझे और दूसरो को भी समझाए।

उसी बात पर साईं की एक और असलियत आपको बताता हुँ, आज मैंने रास्ते में साईं की एक पालकी देखि साईं की पालकी के आगे पीछे, लोग बदहवास नाच गा रहे थे, जैसे इससे पड़ा महात्मा परमात्मा कोई नहीं है, वही दूसरी और भगवान जगन्नाथ की भी रथयात्रा निकल रही थी, भक्त भगवान के रथ को खीच रहे है थे और आपने पापो का प्रायश्चित कर रहे थे दोनों यात्राओं में एक भिन्नता थी, साईं की पालकी को सड़क खड़े लोग प्रणाम भी कर रहे थे और पालकी के पास जाकर पैसे चढ़ा रहे थे जबकि जगन्नाथ भगवान की पालकी पर दूर से प्रणाम जैसे किनारा करने का मन हो अब यही से शुरू होता है साईं और अन्य सनातनी भगवानो में श्रद्धा का अंतर पहले शुरू करता हुँ भगवान तिरूपति से – फरवरी महीने में मैंने पंजाबकेसरी की एक खबर पढ़ी थी की साईं की चरण पादुका को तिरूपति देस्थान मने मंदिर परिसर में आने से रोका, हुआ ये की साईं ट्रस्ट साईं की चरण पादुका को तिरूपति देव स्थान म ले जाना चाहता था ताकि वह के साईं भक्तो को उनके दर्शन करने का अभाग्य मिले, पर तिरूपति देवस्थान मने ये कहकर मनकर दिया की साईं को चाहे लाखो लोग भगवान माने पर असल में वो एक आम इंसान ही था और जिस व्यक्ति का वेद

पुराणों में वर्णन न हो उसे किसी और के कहने पर भगवान कैसे मान लिया जाए।

अब भगवान राम की महिमा – भगवान श्रीराम का जनम और उनकी जीवन कथा भी जानते है, उन्होंने बहुत से राक्षसों का वध किया और धरती को उनके बोझ से मुक्त किया, पुरे चित्रकूट और दंडकवन में राक्षसों का भय था जो भगवान राम ने समाप्त किया और फिर रावण को मारकर तीनो लोको में शांति स्थापित कर के धर्म पताका फहराई।

अब भगवान कृष्ण – कृष्ण भगवान ने भी ऐसे ही न जाने कितने राक्षसों को मार कर धर्म की रक्षा की, तड़का को मारा, बाणासुर के अत्याचार को ख़तम किया, कंस का संहार किया और महाभारत के युद्ध में धर्म की और से लड़ते हुए धर्म की रक्षा की यहाँ तक की धर्म के लिए उनका अपना वंश भी ख़त्म हो गया,

अब भगवान शिव – भोलेनाथ तो है ही सबको प्रिय, मक्का में भी भगवान काबा है और अमरनाथ में सभी, पूरी दुनिया एक तरह से भोलेशंकर को ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में भगवान मानकर पुजती है, विष पीकर संसार की रक्षा की, खुद राख लपेट कर बैठे रहते है पर औरो को धनधान से परपूर्ण रखते है, ग्यारह रूद्र भी जानते है, पर क्या इनमे कही साईं का नाम है ??? नहीं

भगवान विष्णु – दुनिया के पलक और सर्जन कर्ता, भगवान विष्णु के भी दसो अवतार सभी जानते है हर अवतार ने किसी न किसी रूप में अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना की है, पर क्या किसी अवतार में साईं का नाम है,

इन सभी के जरिये मैंने ये तो साबित कर दिया की साईं का किसी अवतार में कोई स्थान नहीं है, तो क्या हम किसी भी ऐरे गिरे चलते फिरते को ऐसे ही भगवान मान लेते है, जो सुख साईं की भक्ति करके मिलता है क्या वो ऊपर दिए इन भगवानो की भक्ति से नहीं मिलता, यदि ये सभी भगवान सच्चे है तो उतार दो अपनी आँखों से साईं का पट्टा, और फेंक दो उन की समाधी को अरब सागर में, अगर नहीं कर सकते तो फिर कभी इन भगवान के साथ साथ साईं का नाम मत लगाना, या तो इनको अपने घरो में रखो या साईं को, फैसला आपका है।

साईं और मीडिया

धर्म सम्राट ज्योतिष पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज द्वारा साईं को भगवान नहीं मानने वाले बयान ने कथित लोकतंत्र के स्वयंभू चौथे स्तंभ मीडिया में एक अजीब माहौल पैदा कर दिया है।

आज कल अधिकांश चैनल हिन्दुवादी संगठनों और साधू-संतों के पीछे पड़ गये हैं। उनको लगता है कि इससे चैनल की कथित धर्म-निरपेक्षा छवि मजबूत होगी। यह सब अचानक नहीं हो रहा, बल्कि एक सोची समझी रणनीति के तहत ही किया जा रहा है। इस मुद्दे पर विभिन्न चैनलों में आयोजित बहस में संतों पर, यहां तक किं हिन्दुओं के सर्वोच्च धर्मगुरू पर की गई टिप्पणियां बेहद दुर्भाग्यपूर्ण, अस्वीकार्य और असहज थी। भारत एक ऐसा देश है जिसमें तमाम धर्मों के लोग रहते हैं। फिर प्रत्येक बार हर चैनल केवल एक ही धर्म पर क्यों निशाना साधता है? इन चैनलों का उद्देश्य सच को उजागर करना नहीं बल्कि अपना उल्लू पन सीधा करना है।

ये तो सभी जानते हैं कि आज देश के अधिकांश समाचार चैनल मानसिक दिवालियेपन से गुजर रहे हैं। काश दूसरों में कमियां निकालने से पहले ये चैनल अपनी कमियों को दूर करते:-

"दूसरों की बुराई जब किया कीजिये,
आईना सामने रख लयिा कीजिये"

हर बार की तरह साईं एवं शंकराचार्य के मुद्दे पर भी मीडिया ने भी इस बहती गंगा में हाथ धोना ही नहीं बल्कि नहाना उचित समझा, खासतौर पर इलेक्ट्रानिक मीडिया ने। प्राइम टाइम में टीवी चैनलों पर चर्चा में मर्यादा और गरीमा की भी सीमाओं का उल्लंघन किया। शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज ने कहा कि साईं की पूजा करना हिन्दु धर्म को बांटने की साजशि है। क्या उनके बयान के बाद साईं समर्थकों के दुष्कर्त्यों ने इसकी पुष्टि नहीं की? साईं बाबा के नाम पर कमाई की जा रही है, इस मुद्दे पर भी शायद किसी को शंका हो। इस तरह के धार्मिक मुद्दों को ज्यादा भटकाने में मीडिया का विशेष हाथ है। शंकराचार्य जी ने भी कहा कि वे कहते व करते कुछ और हैं लेकिन मीडिया उसे कुछ

और ही तरीके से पेश कर देती है। मीडिया को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए ऐसे मुद्दों को तुष्टीकरण की नजर से नहीं देखना चाहिए।

शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज का यह कहना पूर्णतः शास्त्र सम्मत है कि हिन्दु मंदिर परिसरों में साईं के मंदिर की स्थापना या मंदिरों में हिन्दु देवी-देवताओं की मूर्तियों के समकक्ष साईं की मूर्ति स्थापित करना गलत है।

साईं के प्रचार-प्रसार के पीछे सनातन धर्म को क्षति पहुंचाने के अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र के साथ इस पूरे विवाद में बाजार की भूमिका भी सबसे महत्वपूर्ण है। आज बाजारवाद और मीडिया एक दूसरे का पर्याय बन चुके हैं, इस तथ्य को शायद ही कोई नकारने की हिम्मत करे। आज यही मीडिया इसी बाजारवाद के चलते टेलीविजन पर जलेबी-समोसे खिलाकर लोगों की मनोकामना पूरी करने वाले कथित भगवानों के महिमामंडन में जुटा रहता है। आज बाजार ने धर्म के साथ अपना तालमेल बहुत अलग किस्म का बनाया है।

कोहनी पर टिके लोग, सुविधा पर बिके लोग,
करते हैं बरगद की बातें, गमले में उगे लोग....

पत्रकारिता की नब्ज से मैं भली-भांति परिचित हूं और अपनी तरह की पत्रकारिता कर रहा हूं। पत्रकारिता को हर गलत चीज़ को उजागर करना चाहिए, ये उसका कर्तव्य है, लेकिन जब ये पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो तो सडांध के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।

भारतीयों के लिए धर्म जीने का एक ढंग रहा है। करोड़ों भारतीय धार्मिक रीति से अपना जीवन जीते हैं। जीवन का हर मानक उनके लिए धर्म तय करता है। परिवारों में धर्म-कर्म बचपन से सिखाया जाता है। धर्म इस तरह परिवार और अपने समुदायों को बरसों से एकजुट भी रखता आया है। हमारे पूजा-अर्चना संस्कारों में जिस शुद्धता और पवित्रता को सर्वोच्च माना गया है। इसे बचाये रखने के लिए मजबूती से अखंड प्रयास करने की जरूरत है और मीडिया को भी सकारात्मक सोच के साथ आगे आना चाहिये...

विरोध करने से पहले ये जान लेना सुनिश्चित है की जो परिस्थितियां आज वर्तमान में है उनके पीछे का कारण क्या है? 1977 में मनोज कुमार की फिल्म शिर्डी के साईं बाबा से पहले शिर्डी के लोगों के अतिरिक्त किसी ने साईं नाम के किसी फकीर का नाम तक नहीं सुना था, परन्तु उस फिल्म का लोगों पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा, 1990 से पहले एकमात्र शिर्डी में साईं की दरगाह रूपी मंदिर के अतिरिक्त देश के किसी भाग में कही पर मंदिर नहीं था पर 1990 के बाद अचानक ऐसा क्या हुआ की धडाधड साईं के मंदिर बनने

शुरू हुए, साईं के नाम पर पर्चे बाँटने शुरू किये गये, साईं के नाम पर आरती, चालीसा, और पता नहीं क्या क्या बन गया? क्या ये सब मात्र एक संयोग था या एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत किया गया एक खास प्रचार।

1995 के बाद बहुत से लोगों द्वारा भय या लालच स्वरूप एक पर्चा बांटा गया, इस पर्चे में किसी को साईं को न पूजने पर कुछ अनहोनी घटने का डर दिखाया गया तो किसी को व्यापार आदि में लाभ होने का लालच दिया गया, इन सभी के बीच धीरे धीरे देश के अलग अलग भागो में मंदिर बनने शुरू किये और उन मंदिरों की संख्या दिन प्रतिदिन बनने लगी।

इसी बीच बॉलीवुड में कुछ फिल्मे आई जिसमें से सबसे प्रसिद्ध थी अमर अकबर एंथोनी और उसी फिल्म में साईं के नाम पर एक गाना आता है, पर उस गाने में सबसे पहले साईं को एक मुस्लिम फकीर के तौर पर दिखाया गया और इस गाने के द्वारा लोगों में साईं की छवि एक मुस्लिम फकीर की बनी जो लोगों के दुःख दर्द दूर करता था, वो अलग बात है की इस्लाम में मूर्ति पूजा हराम होने के उपरांत भी साईं बाबा की मूर्ति इस फिल्म में दिखाई गई थी।

1998 में ही बॉलीवुड में एक और फिल्म आई - बीवी नंबर वन, इस फिल्म में एक गाना बहुत ही प्रसिद्ध हुआ जिसने साईं की मार्केटिंग में तेजी ला दी, गाने में पहली बार ॐ साईं राम का प्रयोग हुआ और ये गाना लोगों के दिमाग में चढ़ गया क्यूंकि इस गाने में साईं को श्री राम के साथ जोड़ा गया था, जिस कारण लोगो के मन में धारणा बनी की साईं श्री राम का भी एक स्वरूप है, साईं की मार्केटिंग करने वालो ने जैसा सोचा था वैसा ही चल रहा था, सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी की साईं के साथ राम नाम जोड़ने की बात का विरोध बहुत कम लोगो ने किया और जिसने किया वो इतना अधिक लोगों में बाहर नहीं आ सका की लोग भी इस पर साईं के विरोध में प्रतिक्रिया देते।

इस क्रम में छोटे परदे पर साईं की मार्केटिंग शुरू हुई जब नब्बे के दशक में ही साईं का एक धारावाहिक साईं बाबा, बहुचर्चित स्टार प्लस चैनल पर शुरू हुआ, इस धारावाहिक में उन सभी बन्दिुओ को लोगों की भावनाओं को केन्द्रित किया गया था जिसके द्वारा उन्होंने साईं ही अपना सब कुछ मानना शुरू कर दिया था, इस धारावाहिक में साईं को कभी राम का रूप दिखाया गया, कभी उसे कृष्ण दिखाया गया, तो कभी शिव का रूप, खास बात ये थी की इसी धारावाहिक में सबसे पहले साईं के द्वारा सबका मालिक एक शब्द प्रयोग किया गया, जबकि इसके पहले कभी साईं की किसी फिल्म गाने या यहाँ तक की शिर्डी संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक साईं सत्चरित्र में सबका मालिक एक शब्द कही प्रयुक्त है।

इस शब्द ने लोगों के मन में पैठ बना दी और धर्मनिरपेक्षता का बीज लोगो के मन में बो दिया गया, इसी शब्द के कारण लोगो में धारणा बनी की सभी पंथ मजहब, एक समान है सभी की शिक्षाए एक समान है जबकि ऐसी बात कहने वालों ने न एक शब्द गीता का पढ़ा और न कुरान का, जबकि दोनों की शिक्षाओं में जमीन आसमान का अंतर है।

इस धारावाहिक के बाद ही धीरे धीरे लोगों में साईं के प्रति आस्था जागी और धारावाहिक में बताये अनुसार साईं को किसी ने शिव बना लिया तो किसी ने राम, साईं के नाम पर भजन और गीत बनने लगे, इसी समय में सबसे बड़ी घटना जिसने साईं की मार्केटिंग को सबसे अधिक बढ़ाया वो था टी-सीरीज के मालिक गुलशन कुमार की हत्या जो एक महान शिव भक्त और बहुत बड़े भजन गायक भी थे।

1998-99 तक गुलशन कुमार ने अपने भजनों के माध्यम से पूरे देश में एक नयी धार्मिक क्रांति को जन्म दिया, उनके गीत भजन लोगो के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ते थे, पर उनकी हत्या के बाद ये सब रूक गया और साईं का प्रचार बड़ी ही आसानी से देश में होने लगा, पाठको को मैं बताना चाहता हुँ की ये मात्र एक संयोग हो सकता है, गुलशन कुमार की हत्या के बाद देश में बड़े पैमाने पर शिव, हनुमान, माँ दुर्गा आदि सनातनी देवी देवताओं के भजन और गीत कम बनने लगे और उनका स्थान साईं ने ले लिया, धीरे धीरे साईं के नाम पर बड़े ही सुन्दर भजन और गीत बनने शुरू हुए।

इसमें सबसे बड़ी बात ये थी की शुरूआत में जो भी गायक साईं के भजन या कव्वाली गाते थे वे अधिकतर मुस्लिम थे, 2005 के बाद साईं के प्रचार में तेजी आई और इसमें बड़ी संख्या में मुसलमानों के साथ हिन्दू गायक भी आने शुरू हो गए, इसमें से कुछ मुस्लिम आज भी बड़े ही जोर शोर से साईं का प्रचार करने में लगे है जिसमे से सबसे प्रसिद्ध है हमसर हयात निजामी जो लगभग पूरे देश में हजारो साईं संध्याओ के द्वारा साईं का प्रचार कर चुके है परन्तु इसमें भी बहुत विवाद है।

हंसर हयात निजामी अधिकतर साईं संध्या कार्यक्रमों में मंच पर साईं के साथ अन्य सभी सनातनी देवी देवताओं की मूर्तियों के साथ रात भर साईं का गुणगान करते है जिसमे वे कभी कभी भजन और कभी कव्वाली और कभी कभी तो वे अजान भी कर लेते है, इन्ही साईं संध्याओ में वे अल्लाह अल्लाह भी करते है पर आज तक किसी मुस्लिम संगठन ने इस बात का विरोध नहीं किया की आखिर उस स्थान पर कैसे अल्लाह का नाम लिया जा सकता है जहाँ पर बुतपरस्ती भी साथ ही चल रही हो, क्या इस्लाम बुतपरस्ती और अल्लाह

की इबादत दोनों को एक साथ एक ही समय पर आयोजित करने का निर्णय दे सकता है?

चूँकि इसमें केवल साईं संस्थान के द्वारा टीवी, भजन या अन्य सामग्री ही प्रचार का माध्यम नहीं बनी, देश की मीडिया ने साईं को भगवान बनाने में और छोटे छोटे चमत्कारों को बढ़ा चढ़ा कर दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और साईं के पाखंड को फैलाया, इसी कड़ी में इसका एक ताजा उदाहरण है निर्मल बाबा प्रकरण

जब मीडिया में निर्मल बाबा का प्रकरण आया तो पूरे देश की मीडिया ने सामूहिक रूप से निर्मल बाबा को पाखंडी बता कर उनके विरोध में कार्यक्रम दिखाने शुरू कर दिए और उनके द्वारा लोगो को संबोधित करके उनके कष्टों के निवारण के उपाय बताने के तरीके का विरोध करना शुरू कर दिया, पूरे देश में मीडिया ने निर्मल बाबा का पाखंड लोगों के सामने रखा परन्तु आज वही मीडिया प्रतिदिन एक एक घंटे के कार्यक्रम में निर्मल बाबा के समागमो को दिखाती है, एक समय में निर्मल बाबा को पाखंडी बताने वाली मीडिया आज उन्ही के पाखंड में सहभागी बन रही है ठीक उसी प्रकार साईं बाबा के पाखंड को बढ़ाने में भी मीडिया का सुनियोजित ढंग से प्रयोग किया गया।



चित्र में देखे, किस प्रकार दीवार में साईं बाबा जैसी दिखने वाली आकृति को साईं बाबा का चमत्कार बता कर मीडिया साईं बाबा के नाम पर समाज में

अन्धविश्वास और पाखंड का प्रचार कर रही है इस काल में साईं का प्रचार करने के लिए मीडिया का बखूबी उपयोग हुआ और मीडिया ने भी साईं को कभी शिव कभी श्री राम का रूप बताने का हर संभव प्रयास किया और उसमे सफलता भी पाई, इस पाखंड को बढ़ाने में मीडिया भी उत्तरदायी है और इसका प्रमाण वर्तमान में मीडिया द्वारा आदि गुरू शंकराचार्य जी के वक्तव्य के बाद भी साईं के समर्थन में बोलना और साईं सत्चरित्र में असंख्य विसंगतियां होने के उपरान्त भी उस पर कुछ न बोलना है

साईं बाबा का मन्दिर हिन्दु मन्दिर नहीं

आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश (साईं विवाद)

AIR 1991 ANDHRA PRADESH 253 JAGANNADHA RAO AND P.L.N. SARMA, JJ.

The Deputy Commissioner of Endowments, Hyderabad and 2 others, Appellants v. Saibaba Samsthanam, Respondent.

W.A. No. 1179 of 1990, D/ 6-12-1990.

(A) Constitution of India, Art. 226 – Andhra Pradesh Charitable and Hindus Religious Institutions and Endowments Act (30 of 1987), Ss. 45, 87, 88 – Alternative Remedy – Order of Deputy Commissioner under Ss. 45 and 47 of Act – Appeal available under Act against order, not preferred – Writ Petition relating to applicability of Act and touching upon jurisdiction of authorities, not barred.

(Para 1)

(B) Andhra Pradesh Charitable and Hindu Religious Institutions and Endowments Act (30 of 1987). S. 1(3)(b) – Applicability of Act – Religious Institutions or endowments must be exclusively 'Hindu' – Temple of Shri Sai Baba of Shirdi – Cannot be treated as an "exclusive" Hindu Institution of Endowment – Act does not apply to it.

मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश (साईं विवाद)

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT MADRAS.

PRESENT :- K. Veeraswami C.J. and V.V. Raghavan, J.S. Kannan and others ... appellants

The All India Sai Samaj (Registered) by its President, D. Bhima Rao, Mylapore ....Respondent

Madras Hindu Religious and Charitable Endowments Act (XXII of 1959), section 6 (18) and (20) – "Temple" – Sai Mandir at Mylapore – If a 'temple'.

'Temple' is defines in section 6 (20) of the Madras Hindu Religious and Charitable Endowments Acr as a place of public religious worship and

dedicated to pr for the benefits of or used as a right by the Hindu community. [Para. 18.]

'Sai Mandir' situated at Mylapore is not a place pf public religious worship dedicated solely to the members of the Hindu Community. Hence it is not a temple as defined in section 6 (20) of the Act. [Para. 19.]

"In the case of a temple it becomes a place of public religious worship when the idol was installed and consecrated and the pranaprathishth or vivification ceremony was performed. Until them, it is elementary knowledge that the image does not become an object of worship. The deity does not begin to reside in the idol (the visible image) until the consecration or the appropriate ceremony is completed... .... Unless and until these ceremonies are idol is installed, and the idol itself does not become a fit object of religious worship."

The procedure relating to purification of the image and the vivification ceremony and all the details relating thereto are referred to in Pandit Prannath Saraswathi's Hindu law of Endowments (Tagore Law Lectures, 1892) at page 106. In the present case no idol of Sai baba has been installed and in fact rule 20 of the memorandum of the Samaj shows that no image of Sai Baba should be brought into the Mandir and in the absence of the establishment of an idol and consecration of the same and the performance of pranaprathishta, the deity does not begin to object of religious worship.

एक बात भी धर्मप्रेमियों को जान लेनी चाहिए कि संसार की कोई भी जड़ वस्तु बिना रासायनिक वा भौतिक कारणों से अपना स्वभाव नही बदलती। अग्नि का कार्य जलाना है वह अवश्य जलायेगी, परन्तु यदि आपने कोई विशेष रसायन शरीर पर लगा रखा हो तब और बात है, अर्थात वह नहीं जलायेगी।

नमक खाने से खारा लगेगा और मधु मीठा ही लगेगा, रीठा सदा कडवा ही लगेगा मिर्च तीखी ही लगेगी, लेकिन यहाँ यह बात भी विशेष रूप से ध्यान देने की है कि कोई मर्िच्ह बहुत कडवी जाति की होती है और कोई शिमला मिर्च की तरह मीठी है, एक नमक और दूसरे नमक में भी अंतर है तथा एक मिठास और दूसरी मिठास में भी अंतर होता है।

प्रभु के रचे इस इन्सार में प्रत्येक वस्तु की अनेक प्रकार की जातियां (प्रकार) हैं, सेब, संतरे तथा आम खट्टे भी हैं और मीठे भी, बदाम, ककड़ी एवं खीरा मीठे भी होते हैं और कडवे सभी, कभी आपको इमली अत्यंत खट्टी प्राप्त होती है और कहीं अत्यंत मीठी।

प्रभु की इस विचित्र सृष्टि रचना को न जानकर और आयुर्वेद से अनभिज्ञ होने के कारण भी अविचारी धार्मिक लोग अपनी मूढ़ वृत्ति से पाखंडी गुरूओं के जाल में फंस जाते हैं।

गुजरात, महाराष्ट्र आदि में मिलने वाली 'मीठी-इमली' किसी बाबा की देन नही है अपितु भगवान की देन है। बाजार में मिलने वाला मीठा नींबू जिसे मात्र 'मिट्ठा' भी कहरे हैं वह भी किसी बाबा की देन नही है अपितु सृष्टिकर्ता भगवान की ही विचित्र देन है, देखने पर ठीक बड़े नीम्बू जैसा परन्तु खाने पर नितांत (खटाई से रहित) मिश्री जैसा। आकार प्रकार शक्ल सूरत ठीक एक जैसी पर स्वाद भन्नि।

यही बात शिर्डी या किसी भी अन्य स्थान पर लगे रीठे पर लागू होती है, यदि वह मीठा है तो एक दूसरी जाति का फल है जो भगवान द्वारा ही अथवा ईश्वरीय नियमो के अनुसार ही बनाया गया है न कि किसी साईं अथवा अन्य नामी बाबा द्वारा। ऐसी वस्तुओं को देख कर प्रभु के गुण गाने के बदले किसी बाबा के गुण गाना महामूर्खता व नास्तिकता है।

धार्मिकजनों! यदि सच्ची शान्ति, अच्छा स्वास्थ्य और आत्मा में आनंद चाहते हो तो परम पिता परमात्मा पर पूर्ण विश्वास करो, जिस पर विश्वास तथा ध्यान लगाकर ब्र्मा, शिव, परशुराम राम, कृष्ण, शंकराचार्य आदि ने जग का कल्याण किया और स्वयं भी तर गए। यदि अब भी तुम न जागे और पाखंडी लोगों के जाल में ही फंसे या फंसते रहे तो याद रखो स्वास्थ्य तथा धन तो जाएगा ही और साथ में जीवन भी व्यर्थ चला जायेगा। तब अंतिम समय जब सच्चाई से वंचित रहने की बात पता चलेगी तो हाथ मसल-मसल कर रोते रोते मर जाओगे।

मरते समय को बाबा उडनखटोला लेकर तुम्हें बचाने न आएगा। **क्या अब तक जो मर चुके हैं उनको लेने आया?** यह सब झूठ का जाल है कि अमुक बाबा तुम्हें मरते समय उड़नखटोले में बिठाकर स्वर्ग या मोक्ष में पहुंचा देगा। **जिस बाबा को एक लम्बे चौड़े व्यक्ति को पकड़ने के लिए मैटल डिटेक्टर लगाना पड़ता है वह सूक्ष्म निराकार आत्मा को कैसे देख सकता है?** सनातन वेद धर्म के अनुसार स्वर्ग और नरक सब यहीं हैं। जहां धर्म, स्वास्थ्य, धन, प्रेम और प्रभुभक्ति का वास हिया, वहां स्वर्ग समझो। जहां अधर्म, पाप, व्याभिचार, मांस, अंडा, शराब, जुआ, परस्पर घर में लड़ाई और नास्तिकता का वास है वहीं नरक समझो। जो यह कहते हैं कि बाबा का उड़नखटोला आता है पर दिखाई नही देता ऐसी बातें करने वाले धूर्त हैं तथा ऐसा कुछ सुनकर उस पर विश्वास करने वाले मूर्ख हैं, जो सब कुछ जानते हैं पर फिर भी जानबूझ कर झूठ बोल रहे हैं वे धूर्त हैं और जो बिना जांच पड़ताल किये इस प्रकार की बातों को मान लेते हैं और उनके पीछे चल देता हैं वे मूर्ख हैं।

कर्मफल प्रदाता व सृष्टि का करता को **सांसारिक बाबा** नही अपितु एकमेव ईश्वर ही है, जो जैसा करता है वह ईश्वर की व्यवस्था में वैसा ही फल पाटा है। इस बात को अथर्ववेद तथा गीता में भी कहा गया है। सत्य-सनातन धर्म एवं वेद में यह भी कहा गया है कि प्रभु की फल देने की व्यवस्था में जाने या अनजाने कोई रिश्वत तथा सिफारिश भी नही



साईं बाबा के दलाल साईं को चमकाकर पैसा कमाने के लिए, कुछ इस तरह भगवान के चित्रों के साथ खिलवाड़ करके भगवान का घोर अपमान कर रहे हैं, धार्मिकों की भावनाओं को ठेस पहुंचा रहे हैं, और कुछ अक्ल के अंधे मूर्ख हिन्दू, इन चीजों से बेवकूफ बनकर मुस्लिम साईं को पूजने में लगे हैं।

चलती। जो जैसा करता है उसे उसका फल भोगना एवं भुगतना ही पड़ता है। जो लोग किसी बाबा या महाराज द्वारा फल को माफ करने-करवाने की बात कहते हैं वे महामूर्ख या शैतान हैं, जो लोगों को धोखा देने का कार्य कर देते हैं।

जब बड़े-बड़े लोग कर्म के फल से नही बच सके तो तुम कैसे बचोगे? **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम'**- यह महाभारत में योगेश्वर महाराज श्री कृष्ण का वचन है जो महायोगी एवं वेदों के प्रकांड पंडित तथा अत्यंत शक्तिशाली थे। **देवी भागवत** में भी ऐसा ही लिखा गया है **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम। तस्मान्नशोचितव्यं ते सुखे दुःखे कदाचन' -३/२५/६** में भी ऐसा ही वचन पाया जाता है। अब आप स्वयं विचार करें और निर्णय लें कि क्या योगेश्वर महाराज कृष्ण की बात भी गलत हो सकती है? इस श्लोक में वे यही कह रहे हिं कि किये हुए कर्म का फल निश्चित ही जीव को भोगना पड़ता है। उसके फल से बचने का कोई उपाय नही है। अब धार्मिक लोगों को यह सोचना चाहिए कि यदि फल से बचने का उपाय नही है तो फिर बाबा व गुरूमहाराज का उड़नखटोला लेकर आना जाना सब मूर्खतापूर्ण तथा धर्म से विरूद्ध बातें हैं, इससे यह सिद्ध हो जाता है कि चाहे जितने भी पाखंड कर लो परन्तु कर्म के फल से कभी छुटकारा नही हो सकता। यदि छूटने का कोई रास्ता होता तो योगेश्वर महाराज कृष्ण जी वैसा भी लिख ही देते। अतः धन व मूल्यवान समय को बचाओ तथा कबें, दरगाहों आदि पर तामसिक आहूति चढाने के स्थान पर प्रतिदिन हवन, ॐ जप, संध्योपासनादि करनीय कर्म अवश्य करो और अपने खाने, पीने, कमाने तथा दूसरों से व्यवहार करने के कर्मो में सुधार लाओ।

कलयुग में शास्त्र सम्मत पूजा का विधान

कलयुग के आगमन से पूर्व भगवान श्री वेदव्यास और श्री गणेश जी ने कलयुग के अँधेरे का संज्ञान लेते हुए सनातन धर्म के संपूर्ण विज्ञान को विधिवत लिखा कि जब कभी भी आसुरी प्रवृत्ति का अज्ञान फैले तो धर्म ज्ञान जो तब तक श्रुति और स्मृति के आधार पर चलता था, उसे कलयुग के प्रभाव से मुक्त रखा जा सके। अतः उसे लिपिबद्ध किया गया। लेकिन कलयुग के 2500 वर्ष बाद जब सनातन परंपरा विलुप्त होने लगी तब आदिगुरू शंकराचार्य जी ने पुनः सनातन परम्परा की स्थापना की और प्रतिष्ठा शास्त्र सम्मत ढंग से इतने प्रभावशाली ढंग से की, कि मुगलकाल के आतंक में भी कबीर, रसखान, खुसरों जैसे मुस्लिम कवि भी संत बन गये और उनकी रचनाएँ आज भी हिंदुओं को प्रेरणा देती हैं।

मज़ार पूजा?

भगवान कृष्ण जी ने गीता में अध्याय 17 के 4 श्लोक में कहते हैं

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये जयन्ते तामसा जनाः॥

भावार्थः सात्त्विक पुरूष देवों को पूजते हैं, राजस पुरूष यक्ष और राक्षसों को तथा अन्य जो तामस मनुष्य हैं, वे प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं।

श्रीमद आदिगुरू शंकराचार्य जी के 2500 वर्ष बाद और कलयुग के 5000 वर्ष बाद कलयुग ने एक बार पुनः अपने घने अँधेरे में पाया, अनेक वेद-विरोधी मतों के सनातन परम्परा में मिलावट के पश्चात अब अवैदिक सम्प्रदायों (इस्लाम - ईसाईयत) द्वारा सनातन परम्पराओं में मिलावट की गई, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं को मन्दिर पूजा से मजार पूजा की और धकेल दिया गया, जिसे देख कर सूफी संत दादू को कहना पड़ा :-

दादू दुनिया बावरी कबें को पूजे ऊत।
जिनको कीड़े खा गये उनसे मांगे पूत॥

मजार पूजा की इसी अंधभक्ति ने जन्म दिया साईं पूजा को, साईं की इहलीला वर्ष 1918 को दशहरे के दिन जब रावण कल रहा था, ठीक उसी दिन समाप्त हुई, यह भी एक संयोग है कि सावन और साईं दशहरे के दिन ही इस दुनिया से चल बसे।

धार्मिक समन्यवता के नाम पर सनातन पर दंश

(Phishing Through Syncretism)

Syncretism अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका धार्मिक सन्दर्भ में अर्थ होता है विभिन्न पन्थ-सम्प्रदायों के दार्शनिक, परम्पराओं और प्राचीन मान्यताओं की विभिन्नताओं को भुला कर एक सामंजस्य बिठाना, हालांकि यदि गंम्भीरता से अध्ययन करें तो पिछले वर्षों में जितने भी मत-सम्प्रदाय हुए हैं उन्होंने Syncretism का सदुपयोग या दुरूपयोग अपने मत-सम्प्रदाय को बढ़ाने हेतु ही किया है जिससे कि इस शब्द की मूल परिभाषा इसके ठीक विपरीत बन जाती है।

Syncretism एक खिचड़ी की भाँती है जिसमे दाल भी है और चावल भी है, विश्व में जितने भी मत-सम्प्रदाय हैं उनमे से वही सम्प्रदाय सफल हुए हैं और अभी भी अस्तित्व में हैं क्योंकि उन्होंने समझदारी दिखाते हुए दूसरे मत सम्प्रदायों के दर्शन शास्त्रों, परम्पराओं तथा प्राचीन मान्यताओं को अपने में समाहित कर लिया जैसे कि शेर बकरी को खा जाए और बकरी उस शेर का हिस्सा बन जाये तथा बकरी का स्वयं कोई अस्तित्व भी न बच सके।

उदाहरण हेतु जो क्रिसमस ट्री हम देखते हैं वह वास्तव में ईसाईयत के जन्म से भी बहुत पुराणी एक Pegan परम्परा थी जो उस पेड़ की पूजा किया करती थी, और उस पेड़ के आसपास लोग Pegan लोग उत्सव मनाया करते थे।

लेकिन आज स्थिति यह है कि क्रिसमस ट्री को केवल इसाईंयत के साथ ही जोड़कर देखा जाता है लोगों को यह ज्ञात भी नही है कि ईसाईयत ने शेर की भांति उस बकरी रूपी पेड़ को खा लिया है और अपना एक हिस्सा बना लिया है, अब उस Pegan मान्यता और उत्सव का अपना कोई स्वयं का स्वतंत्र अस्तित्व नही बचा।

Syncretism की कहानी तथा मायाजाल जिस व्यक्ति को समझ आ जाए वह इस योग्य हो जाता है कि Syncretism नामक खिचड़ी में से दाल कितनी काम की है और चावल कितने काम का है।

जब भी कोई नया मत-सम्प्रदाय जन्म लेता है तो उसके शीर्ष नेतृत्व के जो विचारक होते हैं वे अपने मत-सम्प्रदाय के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि करने हेतु इस Syncretism नामक अस्त्र का ही प्रयोग करते हैं, वे इसे धर्म प्रचार ही कहते हैं, परन्तु वास्तव में वह एक छद्म प्रकार का धर्म प्रचार होता

है जिसके माध्यम से दूसरे धर्म या मत-सम्प्रदाय के अनुयायियों को भ्रम की स्थिति पैदा करके अपने मत-सम्प्रदाय में धर्मान्तरित कर लिया जाए।

यह एकदम या अचानक से भी कार्य नही करता, कभी कभी इसमें 2-5 पीढ़ियों का समय लग जाता है, प्रथम चरण में तो यह मानसिक धर्मांतरण तक ही सीमित रहता है परन्तु धीरे धीरे आने वाली पीढियां पूर्णतया इसमें विलीन हो जाती हैं।

भारत भूमि पर या यूं कहें कि जहाँ जहाँ भी सनातन वैदिक धर्म वर्चस्व में रहा वहां पर सभी वेदविरोधी तथा अवैदिक मत-सम्प्रदायों ने अपने अपने मत सम्प्रदाय में सनातन वैदिक धर्म के अनुयायियों को धर्मान्तरित करने हेतु Syncretism का सदुपयोग – दुरूपयोग किया ही किया है।

Syncretism के इस मायाजाल में कभी बोद्ध सम्प्रदाय को बहुत बड़ी सफलता मिली और पिछले कई वर्षों से देखें तो ईसाईयत को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है, और निरंतर हो रही है, जिसका उल्लेख हम Syncretism के इस विषय के अंत में करेंगे।

अब जहां भी किसी नये मत-सम्प्रदाय का उदय होगा वहां पर नये मत-सम्प्रदाय का जो दर्शन-साहित्य, अध्यात्मिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, धार्मिक वातावरण आदि सब उस क्षेत्र के मुख्य धर्म से ही लिए जाते हैं, कुछ लोग इसे चुराया जाना भी कहते हैं परन्तु यह गलत शब्द है, वास्तविकता यह है कि जिस व्यक्ति ने जिस प्रकार का जीवन और वातावरण जिया होता है वह उसी के अनुसार ही नये मत-सम्प्रदाय का निर्माण करेगा और उसमे उसी प्रकार का वातावरण भी उपलब्ध करवाएगा।

अब जिन मत-सम्प्रदायों का उदय अरब देशों में या यूरोपीय देशों में हुआ उनका दर्शन साहित्य, अध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक वातावरण आदि सब अरब या यूरोपीय देशों के जैसा ही उपलब्ध करवाया होगा।

साईं का सच नामक इस पुस्तक में Syncretism नामक इस अध्याय पर लिखते हुए मैं केवल यही समझाने का प्रयास कर रहा हूँ कि अल्पकाल में अच्छी लगने वाली यह खिचड़ी किसी भी मत सम्प्रदाय हेतु दीर्घकाल में कितनी कसैली और दुष्प्रभावी सिद्ध होती है।

Synchronize शब्द भी आपने पढ़ा होगा, कई बार, आजकल कम्प्यूटर में जो सॉफ्टवेयर आते हैं उनको मोबाईल फोन के सॉफ्टवेयर के साथ Synchronize किया जाता है अर्थात दोनों सॉफ्टवेयर अपनी अपनी जानकारियां, Bookmarks, आदि को साझा करके एक सामान कर लेते हैं। इसी प्रक्रिया के तहत यह Syncretism नामक बिमारी मत-सम्प्रदायों हेतु काम में लाई जाती है।

परन्तु यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि Synchronize और Syncretism दोनों अलग अलग शब्द हैं।

Syncretism को समझने हेतु यह समझना आवश्यक है कि किसी संस्कृति में आत्मसात होने या उसे डकारने हेतु जो प्रक्रिया है वो किस प्रकार कार्य करती है, और यह आज से नही चल रहा है, हजारों वर्षों से चल रहा है, निरंतर जारी है।

सनातन धर्म के विपरीत मूल रूप से दो प्रकार की व्यवस्थाओं के रूप में मत-सम्प्रदायों का उदय होता है

1. वेद विरोधी मत-सम्प्रदाय
2. अवैदिक मत-सम्प्रदाय

वेद-विरोधी मत-सम्प्रदाय (Anti Vedik Religions)

जिस प्रकार सनातन वैदिक धर्म से ही अनेक मत सम्प्रदाय अस्तित्व में आये उन्होंने सनातन वैदिक धर्म की ही परम्पराओं को आगे बढ़ाया, उनमे भले ही वेद-विरोधी विचारधारा थी परन्तु बाल्यकाल से वे भी जिन परम्पराओं में पले-बढ़े थे उनसे वे भी अछूते न रह पाए और लगभग वैसी ही व्यवस्थाएं अपने नवीन अनुयायियों को देने लगे जो सनातन वैदिक धर्म से धर्मान्तरित होकर उन मत सम्प्रदायों में दीक्षित हुए थे। इनको वेद विरोधी सम्प्रदाय कहा जाता है।

अवैदिक मत-सम्प्रदाय (Non Vedik Religions)

इसके विपरीत यूरोप और मध्य-एशिया की और जो मत-सम्प्रदाय अस्तित्व में आये उन्हें अवैदिक (Non-Vedik) सम्प्रदायों के नाम से जाना जाता है, जैसे कि यहूदी, ईसाईयत, इस्लाम आदि।

वेद विरोधी मत-सम्प्रदायों द्वारा Syncretism और उससे प्राप्त हुईं दीर्घकालिक हानियाँ

आइये सबसे पहले यह देखते हैं कि धर्म और सम्प्रदाय किस प्रकार कार्य करते हैं, हम सब यह जानते हैं कि विश्व में मानव और सृष्टि के कल्याणार्थ धर्म तो मात्र एक ही है जिसे आप और हम सनातन वैदिक धर्म के नाम से जानते हैं और उसी के अनुसार अपना जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

सनातन वैदिक धर्म से अनेक मतों का जन्म हुआ जैसे, जैन-मत, बोद्ध-मत आदि परन्तु पिछले 2500 वर्षों में भारत भूमि पर ही अनेक मत-सम्प्रदायों का

जन्म हुआ, उन सभी मत-सम्प्रदायों ने कहीं न कहीं Syncretism का उपयोग किया परन्तु वे डकारने के स्थान पर सनातन धर्म के विशाल वट-वृक्ष में आत्मसात ही हो गये। इसी प्रकार मत-सम्प्रदायों का उदय और अस्त होने का कार्यक्रम चलता रहा।

मौर्य काल के आसपास सनातन वैदिक हिन्दू धर्म में आयीं कुछ न्यूनताओं का लाभ उठाकर सात मत-सम्प्रदाय आस्तित्व में आये जो कि सनातन वैदिक धर्म के विरूद्ध ही खड़े किये गये थे

१. पूर्ण कश्यप का अक्रियावादी धर्म।
२. पाकुदा कच्छायन का अनुवादी धर्म।
३. मखली गौशाल का आजीविक धर्म।
४. अजित केश कम्बल का अनात्म भौतिकवादी धर्म।
५. संजय बेलथीपुत्त का सर्व संशय वादी धर्म।
६. वर्धमान महावीर का जैन धर्म।
७. सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का बौद्ध धर्म।

इसमे से प्रथम पांच तो अपने अस्तित्व में आने के बाद कुछ शताब्दी भी नहीं देख पाए और इतिहास में विलीन हो गए, पर बुद्ध और महावीर से आरम्भ हुई वेद-विरोधी विचारधारा कई शताब्दियों तक चलती रही, चाणक्य के अथक प्रयासों से जिस अखंड भारत का निर्माण हुआ उस अखंड भारत के निर्माण का लाभ पूर्णतया सनातन वैदिक धर्म को नही मिला। उसका लाभ बोद्ध एवं जैन मतों ने ही अधिक उठाया, अखंड भारत के निर्माता के रूप में मौर्य वंश से जो आशायें थीं उन पर मौर्य वंश खरा नही उतरा।

मूल रूप से अशोक के बोद्ध मत में धर्मातरण और राजा बनने के बाद जिस प्रकार सनातन वैदिक धर्म को हानि पहुंचाई गई वह इतिहास में आज पढ़ाया नही जाता, जिसके उलट आज अशोक को एक बहुत बड़ा धर्म-निरपेक्ष राजा बताया जाता है। ऐसे प्रमाण भी प्राप्त होते हैं कि महान कूटनीतिज्ञ चाणक्य के स्वर्गवास के बाद उनके प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य जैन सम्प्रदाय में धर्मान्तरित हुए, जैन सम्प्रदाय को राजनितिक रूप से भी लाभ प्राप्त हुए, कहीं कहीं इतिहासकारों में आज भी यह भ्रम की स्थिति बनी हुई है कि चन्द्रगुप्त ने जैन मत स्वीकार किया था या नहीं।

अशोक के पिता बिन्दुसार ने भी अजीवकि सम्प्रदाय में अपना धर्मांतरण करवाया उसके बाद अशोक से लेकर बृहद्रथ तक उसकी भी पीढियां बोद्ध मत में ही रहीं। आजीविक सम्प्रदाय की गुफाएं आज भी मध्य-प्रदेश में पाई जाती हैं।

बोद्ध वर्चस्व के इस कालखंड में सनातन वैदिक धर्म पर बहुत से प्रतिबन्ध भी लगाये गये। यज्ञों आदि पर प्रतिबन्ध लगाये गये यज्ञे, गुरूकुलों की शिक्षण प्रणाली पर बोद्ध मत का वर्चस्व स्थापित किया गया, धर्म-ग्रन्थों में मिलावट भी की गई, और कई मन्दिरों को भी तोड़ा गया तथा वहां पर होने वाली परम्पराओं तथा पूजा-अर्चनाओं को भी प्रतिबंधित किया गया।

कुल मिलाकर आप यह कह सकते हैं कि जो कार्य आज ईसाईयत और इस्लाम द्वारा किया जाता है वही कार्य आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व भी भारत में वेद-विरोधी मत-सम्प्रदायों द्वारा किये जाते रहे हैं।

यही इतिहास का कटु सत्य है, जिसे न जानने के कारण हम अपने भाई, मित्रों, शत्रुओं आदि में अंतर स्पष्ट नही कर पाते।

मौर्य वंश के अंतिम शासक बृह्दरथ के वध के बाद पुष्यमित्र शुंग के साथ भी जैन और बौद्धों ने सनातन वैदिक हिन्दू धर्म से पूर्णटकराव की स्थिति बनाये रखी, परन्तु पुष्य मित्र के राजा बनने के कुछ समय पश्चात उसकी सत्य-प्रियता, न्याय-प्रियता तथा जियो और जीने दो जैसी विचारधारा सबके सामने रखा, पुष्यमित्र शुंग ने जिस प्रकार वैदिक धर्म का पुनरूत्थान का कार्य किया वह इतिहास में अतुलनीय है, परन्तु इस महान कार्य हेतु पुष्यमित्र ने मौर्य सम्राट अशोक की भाँति अन्य मत-सम्प्रदायों पर कोई प्रतिबन्ध आदि नही लगाये, और सबको एक साधारण तथा मानवीय संदेश दिया कि एक दूसरे के प्रति वैमनस्य को समाप्त करो और प्रेम से रहो, ऐसी विचारधारा को देखकर ही उस समय से ही बोद्धों ने टकराववादी बातें परोक्ष में रखकर सनातन हिन्दू धर्म से समरसता बनाना प्रारंभ कर दिया और यही कारण था की बुद्ध को विष्णु का नवां अवतार घोषित कर दिया गया। वर्तमान में भी कुछ नवबोद्धों को छोड़कर विश्व भर के सारे बोद्ध टकराव वादी बातें त्याग चुके हैं, व हिन्दू धर्म को पूर्ण सम्मान देते हैं। लेकिन बुद्ध को विष्णु का नवांअवतार घोषित करते ही जैनीयों की सनातन वैदिक हिन्दू धर्म प्रति शत्रुता ने और भी कटु एवं वकृित रूप धारण कर लिया। एक समय में तो जैनीयों ने सनातन वैदिक धर्म के सामानांतर धर्म व्यवस्था खड़ी करने का भी प्रयास किया। परन्तु आदि शंकराचार्य और बाद में रामानुजाचार्य ने जैन आचार्यों के इस कुत्सित प्रयास को पूर्ण विफल कर दिया।

इसके बाद तो जैन आचार्यों के पास सिर्फ हिन्दू धर्म का विरोध करना और हिन्दु देवी, देवताओं, अवतारों, ऋषि, महर्षी, महात्माओं, ब्स्मणों, पूज्य पात्रों और वेद, पुराणों के विरूद्ध घातक वा विषैला दुस्प्रचार करना ही एक सूत्रीय कार्यक्रम रह गया। सदियों से जैनी यह सब अत्यंत गुपचुप तरीके से चलाते रहे। हिन्दू

धर्म के समस्त विद्वान जैनियों की हिन्दू धर्म के प्रति इस विषाक्त मानसिकता से सदा से अवगत रहे हैं और इस विषाक्त मानसिकता को जैन किन कारणों से छुपाते आये हैं यह भी स्पष्ट रहा हे। लेकिन किसी भी हिन्दू विद्वान के लिए यह समझाना सचमुच एक दुरूह पहेली है कि किन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष कारणों से पिछले कुछ वर्षों से जैन आचार्यों, विद्वानों, जैन मुनि और साधू, साध्वियां अपनी इस विषाक्त मानसिकता का ताल ठोक –ठोक कर उदघोष कर रहे हैं, और विशाल सनातन हिन्दू धर्म से टकराव की स्थिति पैदा करने पर तुले हैं।

लव-कुश को वाल्मीकि का पुत्र बताना, भगवान बजरंग बलि के अनेक विवाह की कहानियां प्रचारित करना, योगेश्वर श्री कृष्ण जी को महाभारत जैसा अपराध करवाने हेतु नरक भोगने जैसी बातें जैन-ग्रन्थों में लिख कर जैन आचार्यों ने लगभग हिन्दुओं को अपना शत्रु ही बनाया।

हिन्दु धर्म से शत्रुता के आधार पर जन्मे जैन धर्म के मानने वाले मुस्लिमों और क्रस्चियिनों से बचने के लिए तो हिन्दु होने का मुखोटा पहन लेते हैं पर सनातन हिन्दु वैदिक धर्म की ही जड़ों पर एसा घातक प्रहार करते हैं। जिस दिन समस्त हिन्दुओं को यह स्पस्ट हो जाएगा की जैन धर्म की मूल असलियत क्या हे, वा जिस दिन मुस्लिमों और क्रिस्चियनों को यह पता चल जायगा की जैन धर्म का हिन्दुओं से कोई सरोकार नहीं उस दिन ४२ लाख से कम जनसंख्या वाले वा दिगंबर, स्वेताम्बर, मूर्ती पूजक, स्थानक वासी, तेरापंथी, बीसपंथी, आदि २० धड़ों में बँटे जैन समाज के लोगों की अक्ल स्वतः ठिकाने पर आ जायगी। और इंटरनेट पर इसकी शुरूवाद खुद जैन कर चुके हैं।

बोद्धों के पैर सातवीं-आठवीं शताब्दी तक भारत में उखड़ चुके थे, जिसके लिए वे निरंतर ऐसे प्रयास करते रहे कि पुनः भारत भूमि पर बोद्ध-वर्चस्व कायम हो और सनातन वैदिक धर्म को हानि पहुंचे। ऐसी ही महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने हेतु बोद्धों ने इस्लाम को भी भारत भूमि पर अपनी जडें जमाने में सहायता प्रदान की, परन्तु बोद्ध अनुयायी सनातन वैदिक धर्म को इस्लाम के हाथों नष्ट करवाने हेतु जिस महत्वाकांक्षा से जुड़े थे वे स्वयं उसमे लुप्त हो गये।

सनातान वैदिक धर्म और सूफी मत और इस्लाम का मिलाजुला Syncretism

एक समय था जब भारत भूमि पर भगवान श्री कृष्ण और भगवान राम की पूजा अर्चना गाँव गाँव में हुआ करती थी, अनेक मंडलियाँ श्री राम और श्री कृष्ण के महान चरित्र का प्रचार स्थान स्थान पर करते पाए जाते थे।

भगवान श्री कृष्ण की भक्ति तो लगभग 5000 वर्ष से निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी भी कर रहे हैं, इसमें गायन शैली का भरपूर संगम होता था। अरब देशों से

आने वाली सूफी गायन परम्परा ने भारतीय गायन परम्परा के साथ Syncretism के अंतर्गत जो घुसपैठ की उसका दुष्प्रभाव भारतीय संस्कृति पर सबसे विषैला और कसैला सिद्ध होता है।

यह प्रमाणित तथ्य है कि सूफी मत इस्लाम में प्रतिबंधित है, कट्टर इस्लामिक देशों में तो सूफीयत प्रतिबंधित है ही अपितु यदि कोई गाते-बजाते दिख जाए तो उसे मृत्यु दंड तक की सजा दे दी जाती है। भारत में अलाउदीन खिलजी के शासन में इस्लाम ने सूफियों के साथ एक समझौता किया और उन्हें भारत में खुलकर कार्य करने की स्वतन्त्र्ता प्रदान की परन्तु इस शर्त पर कि वह भारत भूमि का कोना कोना घूम कर समूचे भारत की गुप्तचरी करके बताएं कि भारतीय संस्कृति के कौन कौन से ऐसे पहलू हैं जिन पर भारतीय जनमानस मजबूती से टिका हुआ है, अर्थात कमजोर व मजबूत दोनों ही प्रकार के पहलुओं की गुप्तचरी करके पूर्ण समाचार उपलब्ध करवाना था।

सूफी संगठनो ने कई वर्षों के परिश्रम और गुप्तचरी के बाद मूल रूप से भारत की संस्कृति के कमजोर व मजबूत पक्षों का लेखा जोखा खिलजी के सामने रखा, जिसमे यह भी कहा गया कि श्री राम, श्री कृष्ण तथा श्री महादेव भारतीय आस्था के मजबूत स्तंभ हैं।

कई स्थानों पर ऐसे मन्दिरों को भी तोड़ दिया गया जहां पर श्री राम, श्री कृष्ण और श्री महादेव जी के प्रसिद्ध तथा प्राचीन मन्दिर थे।

अगले चरण में श्री राम, श्री कृष्ण और श्री महादेव के गायन शैली के गीतों में सूफीयत के प्रभाव को मिला कर पेश करने का षड्यंत्र रचा गया जिसका दुष्प्रभाव आप आज तक देख सकते हो।

सूफीयत अपना कार्य करती रही, आज भी कर रही है। साईं बाबा के प्रचार प्रसार हेतु जो साईं संध्या या साईं कीर्तनो का आयोजन होता है उनमे आपको मुख्य रूप से **"अल्लाह-साईं अल्लाह साईं मौला साईं मौला साईं"** जैसे गीत सुनने को प्राप्त होंगे।

आज जो फिल्मे, या टीवी धारावाहिक आते हैं उनमे भी आप हिन्दू परिवार के धारावाहिकों या चलचित्रों में सभी इस्लाम के रंग में रंगे हुए गीतों को बढ़ चढ़ कर प्रचारित होता हुआ पाएंगे।

दरगाहों तथा मजारों पर आज हिन्दुओं का जाना आम बात हो गई है, जबकि वे यह भूल चुके हैं कि सनातन वैदिक परम्परा में जब किसी के अंतिम संस्कार पर जाते हैं तो घर वापिस आकर स्नानादि कार्यों का पूर्ण होना प्राथमकि रूप में रहता है, परन्तु सैकड़ों वर्षों से किसी कब्र में पड़े हुए एक पार्थवि शरीर के पास से होकर आने में आज के हिन्दुओं को कोई दोष नहीं दिखाई देता।

महमूद गजनवी के रिश्तेदार सलार महसूद की कब्र पर भी लाखों हिन्दू जाते हैं, पृथ्वीराज चौहान की गुप्तचरी करवा कर मुहम्मद गौरी को विजयी बनाने वाले Ajmer शरीफ की कब्र पर भी सबसे अधिक हिन्दू ही जाते हैं, निजामुद्दीन औलिया की दरगाह

पर भी सबसे अधिक हिन्दू ही जाते हैं जिसे पृथ्वी राज चौहान के धार्मिक एवं सन्यासी पुत्र समेराम ने शास्त्रार्थ में हराया था। परन्तु आज उस महान सन्यासी, योगी, तपस्वी समेराम का तो कोई नाम तक नही जानता।

परिस्थिति आज ऐसी बन चुकी है कि Syncretism के इस मायाजाल में सनातन वैदिक धर्म के अनुयायियों को दरगाहों पर चादर चढाना या मजारों पर सर झुकाना आदि में कोई अनुचित कार्य नही लगता, वे इसे हिन्दू परम्पराओं से ही जोड़ कर देखते हैं और तर्क रखने पर कुतर्क करने पर उतारू हो जाते हैं।

इसके विपरीत आज साईं कि मूर्तियों में शेषनाग, चक्र, त्रिशूल, अष्टभुजा आदि जैसे सनातन वैदिक धर्म के भगवानो की सी हूबहू चत्रि बना बना कर दिखाया जा रहा हैं, Syncretism के इस इतिहास पर विचार करने पर मुझे तो यही लगता है कि साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ के लोगों द्वारा जारी यह Syncretism भी दीर्घकाल में अत्यंत हानिकारक सिद्ध होगा, आवश्यकता है कि इसे रोका जाए अन्यथा अगली शताब्दी में भारत में भी इंडोनेशिया जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी।

ईसाईयत या किसी भी सम्प्रदाय का भारतीय संस्कृति से प्रेम एक षड्यंत्र

ईसाईंयों का भारतीय संस्कृति से जो नया नया प्रेम का सम्बन्ध आरम्भ हुआ है वह धोखे के अलावा और कुछ भी नही है, और इस षड्यंत्र को गम्भीरता से देखने पर समझ आ भी जाता है। यदि हम इन मिशनरियों का लिखा हुआ साहित्य पढ़ेंगे तो इनका वास्तवकि रंग पता चल जायेगा, वास्तव में भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय जो हिन्दू धर्म का पुनर्जागरण हुआ, उससे ईसाईं मिशनरी भय भीत हो गए और उन्हें अपनी योजनाओं में परिवर्तन करने हेतु सोचना पडा। जिस प्रकार Nobile ने षड्यंत्र-पूर्वक हिन्दुओं का वेश धारण करके ईसाईयत में धर्मान्तिरत किया था उसी प्रकार 19वीं शताब्दी में भी यही योजना अपनाई गई, जो लोग नये लोग हिन्दू धर्म को छोड़ कर ईसाईं मत में धर्मान्तरित हुए वे भी चाहते थे कि ईसाईयत का भारतीयकरण हो। आज भले मिशनरयिों में इन ईसाईंयों को बहुत ही आदर के साथ देखा जाता हो परन्तु उनके समय में अंग्रेजों ने इन धर्मान्तरित ईसाईंयों को सदा अपने से नीचा ही माना।

ईसाईं मिशनरी तो आज यहाँ तक कहते हैं कि इन धर्मान्तरित ईसाईंयों के महान चरित्रों को भी इतिहास की पुस्तकों में पढाना चाहिए क्योंकि ये बहुत ही महान लोग थे, परन्तु वास्तव में जब ये लोग जीवित थे तब तो इनके ऊपर अनगिनत अत्याचार ईसाईंयों द्वारा किये गए। वास्तव में ईसाईं मिशनरयिों ने ईसाईयत के प्रचार के लिए कई योजनायें अपनाई जैसे पुर्तगालियों की तलवार हो या ब्टिन का साम्राज्य, तथा प्रारम्भ में यह लोग हिन्दू संस्कृति को द्वेष की दृष्टि से ही देखते थे, क्योंकि वह चाहते थे कि ईसाईयत के प्रचार के साथ साथ ही सब लोग यूरोपियन जीवन शैली भी अपना लें।

गाँधी जी भी स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि हमारे गाँव में भी एक बहुत ही प्रसिद्ध हिन्दू जो ईसाई बन गया था, जब उसका धर्मांतरण हुआ तब उसे गौमांस खिलाया गया, शराब पीनी पड़ी और कोट-पेंट पहन कर हैट भी लगानी पड़ी।

"Brain research has shown that using sound phasing for brain synchrony will adjust the brain waves to deeper states down to the delta wave pattern."

मैं आशा करता हूँ कि आप सब **Syncretism** नामक इस खिचड़ी को अब समझ गये होंगे, यदि आप किसी भी मत-सम्प्रदाय के किसी कार्यक्रम में जाएँ और आपको जो भी दिया जाए, पुस्तक, स्मृति चिन्ह आदि कुछ भी तो निश्चय ही आप समझ जायेंगे कि उस खिचडी में परोसी गई दाल तथा चावल का क्या क्या कार्य है?

आत्मीय धर्मांतरण से पूर्व कार्य करता है मानसिक धर्मांतरण जो कि सबसे अधिक खतरनाक है। जिस व्यक्ति का मानसिक धर्मांतरण हो गया हो उसको समझाना अत्यंत ही जटिल कार्य बन जाता है।

प्रेरणा

मैं साईं बाबा उर्फ चाँद मियां के विषय पर कई वर्षों से कार्य कर रहे हैं, परन्तु जून 2014 में हमारी प्रसन्नता की संभवत: कोई सीमा न बची जब हमे यह समाचार प्राप्त हुआ कि सम्राट जोशीमठ तथा द्वारिकापीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी स्वरूपानंद जी ने साईं बाबा का खण्डन किया है।

जगद्गुरू स्वामी श्री स्वरूपानंद जी ने हमे बताया कि वह साईं बाबा का खण्डन कई वर्षों से करते आ रहे हैं, परन्तु मीडिया में इस बात पर महत्त्व अब दिया गया और इसे एक विवाद का रूप दे दिया गया कई मीडिया समूहों द्वारा, जबकि महाराष्ट्र में शविसेना के मुखपत्र "सामना" में आज से 15 वर्ष पूर्व ही स्वामी श्री स्वरूपानंद जी द्वारा साईं बाबा उर्फ चाँद मियाँ के खण्डन पर लेख छप चुका है।

एक बात जो हम सबको ज्ञात हुई कि स्वामी श्री स्वरूपानंद जी की Image मीडिया द्वारा कुछ अलग ही बना कर दिखाई गई, जिसमे उन्हें अत्यधिक क्रोधित स्वभाव का दिखाया जाता था, परन्तु स्वामी श्री स्वरूपानंद जी के साथ बैठक में स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी का एक नया ही व्यक्तित्व देखने को मिला जो कि बहुत ही सुखद था, वो यह कि स्वामी श्री स्वरूपानंद जी वार्तालाप करते हुए आपको प्रत्येक बात पर हंसने हेतु भी अवसर देते हैं, उनके साथ वार्तालाप करते हुए तनिक भी भय नही रहा,

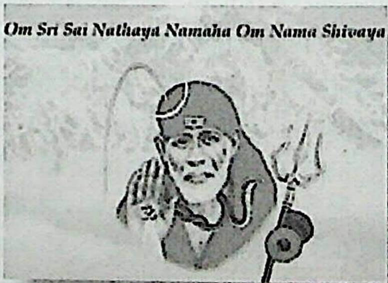
सब समाप्त हो गया . जब हम सबने स्वामी श्री स्वरूपानंद जी के कक्ष में प्रवेश किया तो पाया कि बड़े बड़े बाबाओं, धर्मगुरूओं के विपरीत स्वामी श्री स्वरूपानंद जी बिना एयर-कंडीशनर के एक दम शांत बैठे हुए हैं। मस्तक पर जो तेज था वो बार बार उनकी और देखने को लालायित कर रहा था। शब्द नही हैं यह बताने को कि 95 वर्ष की आयु में भी ऐसा तेज़ तथा ओज, जिसकी परिभाषा नही दी जा सकती, जो कि आज के समय में करोड़ों मनुष्यों में से एक में ही पाया जायेगा।

आज जब स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी के बारे में और जाना तो ज्ञात हुआ कि स्वामी श्री स्वरूपानंद जी किस प्रकार ईसाईं मिशनरियों के विरूद्ध कार्यरत हैं तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों से सनातन वैदिक धर्म और उसके अनुयायियों को क्या क्या लाभ प्राप्त हो रहे हैं, और किस किस प्रकार के संकटों से वे हम सबको सुरक्षित बनाए रखने की और कार्यरत हैं।

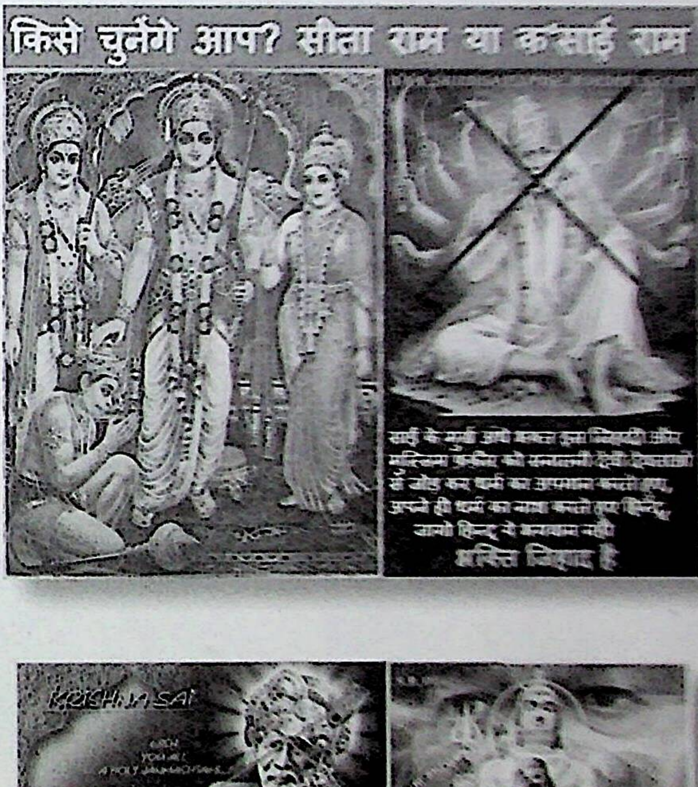
स्वामी श्री स्वरूपानंद जी के आर्शीवाद के बाद स्वामी श्री अविमुक्तेश्वरानंद जी का आर्शीवाद प्राप्त हुआ तथा उन्होंने स्वामी श्री स्वरूपानंद जी के कार्यों से और परिचित करवाया, तथा भविष्य की योजनाओं से परिचित करवाया, सनातन वैदिक धर्म की और जो भी संकट हो उससे लड़ने हेतु सदैव हर संभव सहायता का आर्शीवाद प्रदान किया।

परमश्रद्धेय स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी तथा स्वामी श्री अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी को कोटि कोटि प्रणाम है।





अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर सनातन धर्म के साथ अपराध





माना कि कलयुग का अन्धेरा घना है,
पर अधर्म की पूजा करना तो मना है।

साईं के शिष्य श्री गोविन्दराव रघुनाथ दाभोलकर (हेमाडपन्त) द्वारा लिखित व श्री साईं बाबा विश्वस्त, शिरडी, द्वारा प्रकाशित।

श्री साईं सत्चरित्र के मुख्य बिन्दुः-



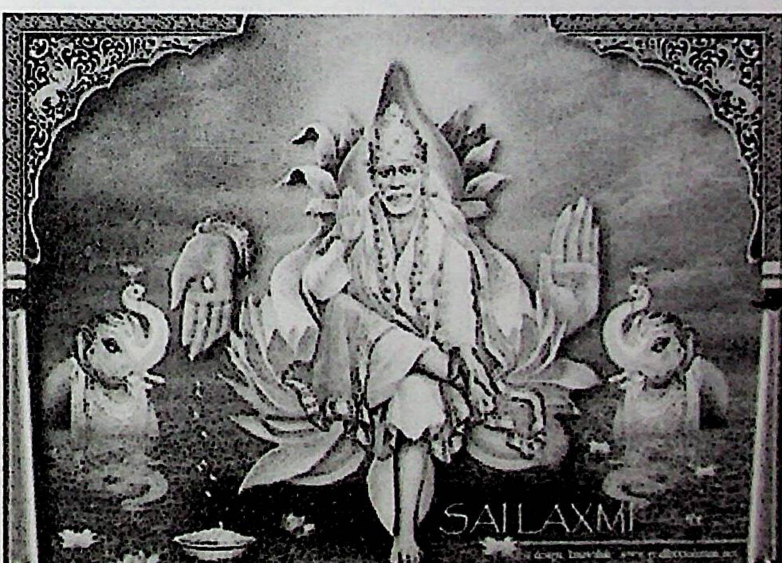
अध्याय 5	: शिरडी में एक पहलवान था, जिसका नाम मोहिद्दीन तम्बोली था, बाबा का उससे किसी विषय पर मतभेद हो गया। फलस्वरूप दोनों में कुश्ती हुई और बाबा हार गये।
अध्याय 5	: साईं "अल्लाह मालिक" का सदा उच्चारण किया करते थे।
अध्याय 10	: (साईं) "न्याय अथवा मीमांसा या दर्शन शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।"
अध्याय 13	: (साईं) "कोई कितना भी दुःखी और पीड़ित क्यों न हो, जैसे ही वह मस्जिद की सीढ़ियों पर पैर रखता है, वह सुखी हो जाता है।"
अध्याय 14	: दक्षिणा मीमांसा के अनुसार साईं बीड़ी/तम्बाकू पीते थे।
अध्याय 23	: मस्जिद में एक अत्यन्त दुर्बल बूढ़ा और मरने वाला बकरा लाया गया। लेकिन जैसे ही बाबा ने काका से कहा कि मैं स्वयं ही काटूंगा, बकरा गिर कर मर गया।
अध्याय 23	: गुरु भक्ति (साईं) "श्वासोच्छ्वास (प्राणायाम) नियंत्रण, हठयोग या अन्य कठिन साधनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है।"
अध्याय 18-19	: (साईं) "इस मस्जिद में बैठकर मैं सत्य ही बोलूंगा कि किन्हीं साधनाओं या शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं।"
अध्याय 22	: (साईं) "यह मस्जिदमाई परम् दयालु है। सरल हृदय भक्तों की तो यह माँ है और संकटों में उनकी रक्षा अवश्य करेगी। जो कोई इसकी छत्र छाया में विश्राम करता है, उसे आनंद और सुख की प्राप्ति होती है।"
अध्याय 28	: कुदृष्टि के अनुसार चावड़ी का जुलूस देखने के दिन बाबा कफ से अधिक पीड़ित थे।
अध्याय 28	: साईं मेघा की ओर देखकर कहने लगे, "तुम तो एक उच्च-कुलीन ब्राह्मण हो और मैं बस निम्न जाति का यवन (मुसलमान)"
अध्याय 38	: मांसाहारी प्रसाद, मस्जिद से मांस मंगवाकर मौलवी से फातिहा पढ़वाकर हांडी में से लोगों को दिया जाता था।
अध्याय 43/44	: 72 घण्टे के अनुसार साईं सन् 1886 में मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन बाबा को दमा से अधिक पीड़ा हुई।

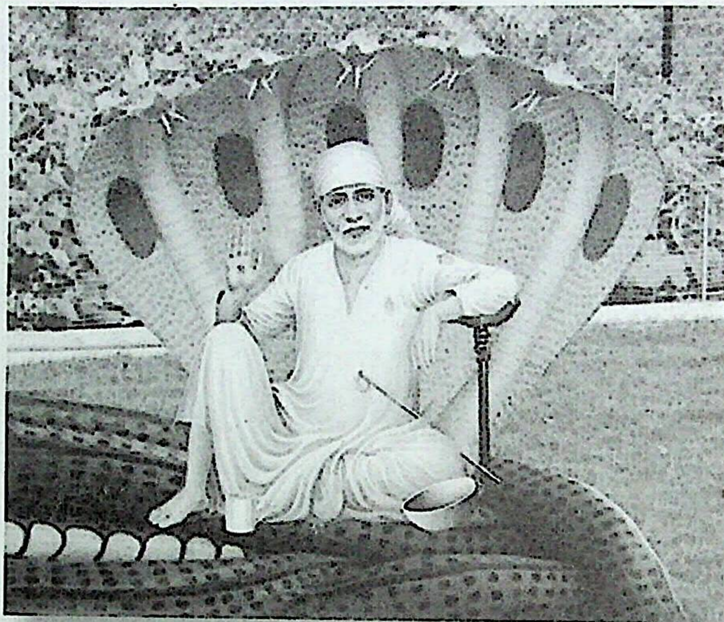
विस्तृत विवरण के लिए श्री साईं सत्चरित्र पढ़ें। **साईं के नाम पर मन्दिरों का इस्लामीकरण बन्द हो।**

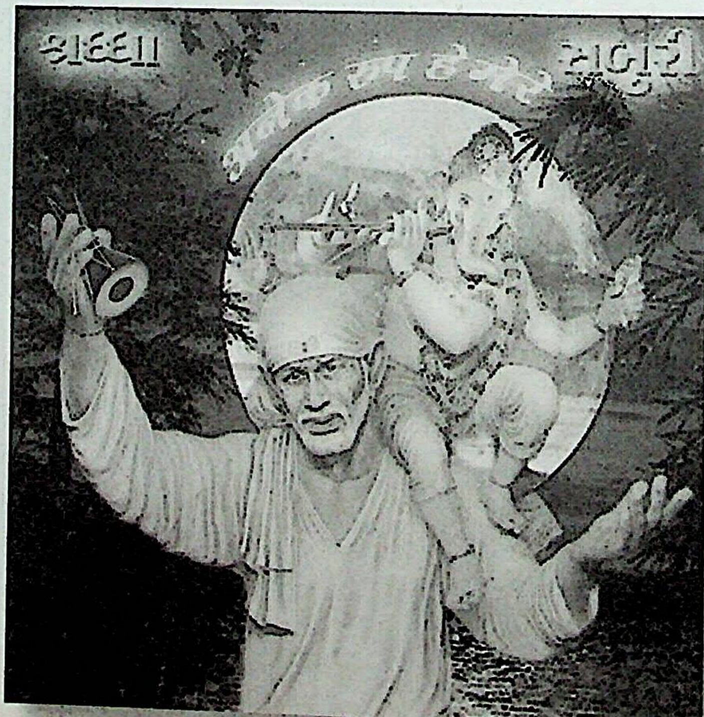
शिर्डी के मुख्य द्वार पर साईं बाबा उर्फ़ चाँद मियां की कब्र






SAILAXMI





लेखक का परिचय

लेखक बाल्यकाल से ही नाथ सम्प्रदाय के साधू सन्तो के सानिध्य में बड़ा हुआ तथा उदासीन आखाड़े की सत् [illegible] श्मशान घाट की गद्दी से जुड़ा रहा।

धर्म शास्त्र, रसायन शास्त्र की प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा वहीं पर प्राप्त की तथा बाबा बरखानाथ, बाबा नरहरि नाथ, बाबा बल्ले नाथ जैसे सन्त महापुरूषों से आध्यात्मिक तथा धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया।

तत्पश्चात् इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में लाईव पूजा का प्रचलन प्रारम्भ किया तथा चार वर्ष तक निरन्तर इण्डिया टी.वी. में अजेय मंत्र के नाम से दैनिक कार्यक्रम चला।

2000 से अधिक धार्मिक विषयों से सम्बन्धित वार्ताओं में टी:वी. पर भाग लिया एवं अन्य डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों में भाग लिया।

ज्योतिष व वेद शास्त्रों का ज्ञान लाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में 10 वर्षो से अधिक अध्ययन कर प्राप्त किया।